ANNUAL REPORT
2014-15

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

वार्षिक रिपोर्ट

1 अप्रैल, 2014 – 31 मार्च, 2015

विषय–सूची | पृष्ठ संख्या

परिचय		3
संगठन		4
न्यास का गठन		5
झलकियां		5
कलानिधि		7
कार्यक्रम	: संदर्भ पुस्तकालय	8
	: रेप्रोग्राफी इकाई	9
	: स्लाइड इकाई	9
	: सांस्कृतिक अभिलेखागार	9
संरक्षण इकाई		12
मीडिया केन्द्र		13
सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला		14
कलाकोश		17
कार्यक्रम क	: कलातत्वकोश	17
कार्यक्रम ख	: कलामूलशास्त्र	18
कार्यक्रम ग	: कलासमालोचना	19
	: क्षेत्र अध्ययन	20
जनपद संपदा		24
कार्यक्रम क	: नृजाति–विज्ञान संबंधी संकलन	25
कार्यक्रम ख	: आदि दृश्य	26
कार्यक्रम ग	: जीवन शैली अध्ययन	28
	पूर्वोत्तर अध्ययन कार्यक्रम	30
कलादर्शन		36
प्रदर्शनियां		37
संगोष्ठियां/सम्मेलन/कार्यशालाएं		39
सार्वजनिक व्याख्यान		41
प्रदर्शन		42
अन्य कार्यक्रम		46

क्षेत्रीय केन्द्र 49
पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी 49
दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलुरु 51

सूत्रधार 57

अनुबंध
I: इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यासी बोर्ड (31 मार्च, 2015 के अनुसार) 58

II: इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र कार्यकारी समिति के सदस्य (31 मार्च, 2015 के अनुसार) 59

III: 1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 तक इ.गाँ.रा.क.के. में आयोजित प्रदर्शनियों की सूची 60

IV: 1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 तक इ.गाँ.रा.क.के. में आयोजित व्याख्यान और अन्य कार्यक्रमों की सूची 62

V: 1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 तक इ.गाँ.रा.क.के. प्रकाशनों की सूची 76

VI: इ.गाँ.रा.क.के. में वरिष्ठ/कनिष्ठ रिसर्च फेलो/परामर्शदाता सहित इ.गाँ.रा.क.के. के अधिकारियों की सूची, (31 मार्च, 2015 के अनुसार) 77

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक रिपोर्ट 2014-15

परिचय

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में वर्ष 1987 में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ.गाँ.रा.क.के.) एक ऐसी स्वायत्तशासी संस्था के रूप में परिकल्पित है, जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक पृथक अस्वित्व रखते हुए भी पारस्परिक निर्भरता के आयामों के अधीन, प्रकृति के साथ परस्पर संबंध के साथ, सामाजिक–संरचना और वैश्विक–व्यवस्था के साथ सबंद्ध हो।

कला विषयक यह दृष्टिकोण मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड एवं अपरिहार्य रूप से सबंद्ध दृष्टिकोण एक ऐसी वैश्विक दृष्टि की भावना में समाविष्ट है जो अपने स्वरूप में समग्र है, भारतीय परंपरा में सर्वत्र विद्यमान है और विशेष तौर पर महात्मा गांधी एवं गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे आधुनिक अग्रदूतों ने जिस पर बल दिया है।

इ.गाँ.रा.क.के. के दृष्टिकोण में कलाओं के व्यापक अध्ययन को समाहित किया गया है, जिसमें शामिल हैं–लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक व समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्र में लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, जैसी दृश्य कलाएँ, फोटोग्राफी और फिल्म, अपने व्यापकतम अर्थो में संगीत, नृत्य एवं नाटक जैसे प्रदर्शनात्मक कलाओं, तथा मेलों, उत्सवों एवं जीवन शैली में विद्यमान वह सभी कुछ जिसे किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। केन्द्र का उद्देश्य भारत और दुनिया में कला से संबंधित क्षेत्रों और समरूप विचारधारा के समुदायों के बीच तथा भारत और पड़ोसियों के मध्य अध्ययन वार्ता को पुनर्जीवित करना है।

इ.गाँ.रा.क.के. की कलाओं के विषय में अधिगम की विशेषता इस बात से प्रदर्शित होती है कि यह लोक और शास्त्रीय, मौखिक और श्रुत, लिखित व उच्चरित और प्राचीन और आधुनिक कलाओं में कोई भी पृथकता नहीं लाता है। यहाँ विभिन्न क्षेत्रों के बीच संवाद और जुड़ाव पर बल दिया जाता है जो अंततः मनुष्य को मनुष्य से तथा मनुष्य को प्रकृति के सहजीवन से जोड़ता है।

इ.गाँ.रा.क.के. अपने प्रकाशनों, अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय विचार गोष्ठियों, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों और व्याख्यान मालाओं द्वारा अपने शैक्षणिक और अनुसंधान कार्य की अभियक्ति करता है। स्कूल और अन्य शिक्षा संस्थान इ.गाँ.रा.क.के. के प्रसार कार्यक्रम की परिधि में आते हैं। बहु विषयक भौगोलिक अध्ययनों से अनुसंधान का पूरक बनाता है ताकि विकास प्रक्रिया में सांस्कृतिक निवेशों को उत्प्रेरित किया जा सके।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैः

- लिखित, मौखिक एवं दृश्य सामग्री के विशेष परिप्रेक्ष्य में, कलाओं के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना;
- कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित संदर्भ ग्रन्थों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों आदि के अनुसंधान एवं प्रकाशन का कार्य;
- सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन एवं सचल प्रदर्शनों के आयोजन हेतु प्रमुख संग्रह के साथ लोक कला प्रभाग (जनजातीय कलाओं को शामिल करते हुए) स्थापित करना;
- प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, मल्टी–मीडिया प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद तथा विचार–विमर्श के लिए एक मंच प्रदान कराना;
- दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना ताकि बौद्विक समझ के उस अंतर को दूर किया जा सके, जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञान और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला–कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है;
- भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन हेतु प्रादर्श विकसित करना;
- विभिन्न सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल जाल के रचनात्मक एवं गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना;
- भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के प्रति जागरुकता एवं संवदनशीलता को प्रोत्साहन प्रदान करना;
- कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार–तंत्र विकसित करना, और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर से संबद्ध शोध करने और उनको मान्यता प्रदान करने हेतु भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।

संगठन

अपनी संकल्पनात्मक योजना में उल्लिखित उद्देश्यों तथा अपने मुख्य लक्ष्यों को पूरा करने हेतु इ.गाँ.रा.क.के. अपने पांच प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है जो संरचनात्मक तौर पर स्वायत्त हैं लेकिन कार्यक्रमों के तौर पर एक–दूसरे से परस्पर जुड़े हुए हैं। इसमें निहित पाँच प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है।

कलानिधि प्रभाग में मल्टी मीडिया संग्रहों का एक संदर्भ पुस्तकालय शामिल है, जिसमें मुद्रित पुस्तकें, स्लाइड, माइक्रोफिल्म, फोटोग्राफ और दृश्य–श्रव्य सामग्री, एक संरक्षण प्रयोगशाला, एक मल्टी मीडिया इकाई और सांस्कृतिक अभिलेखागार शामिल है।

कलाकोश प्रभाग मौलिक अनुसंधान का कार्य करता है और अपने बहुस्तरीय और बहु–विषयी आयामों और सांस्कृतिक संबंधों में बौधिक परंपराओं की जांच करता है। अनुसंधान और प्रकाशन प्रभाग के रूप में यह अभ्यास के साथ मौखिक दृश्य के कर्ण संबंधी जीवन और कला तथा सिद्वांत को व्यवहार के साथ जोड़ते हुए कलाओं को एक सांस्कृतिक प्रणाली के अभिन्न ढांचे के अंतर्गत रखने का प्रयास करता है। इसके दीर्घ अवधि के कार्यक्रमों में, (क) कलातत्वकोश–कला की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा मूलभूत तकनीकी शब्दों का संग्रह और अन्तर्विषयक शब्दावलियां, (ख)

कलामूलशास्त्र–भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रन्थों की श्रृंखला (ग) कलासमालोचना–भारतीय कला–विषयक समीक्षात्मक साहित्य के पुनर्मुद्रण की श्रृंखला, (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखण्डीय विश्वकोश, तथा (ड.) क्षेत्र अध्ययन शामिल हैं।

जनपद संपदा प्रभाग कलाकोश के कार्यक्रमों के पूरक के तौर पर कार्य करता है। यह ग्रामीण परिवेश की समृद्वबहुरंगीय विरासत और छोटे पैमाने पर समाज के पाठ्य से प्रसंग में स्थानांतरित करने पर ध्यान केंद्रित करता है। इसकी गतिविधियों में, जो एक समुदाय के आसपास घूमती हैं, जीवन शैली लोकपरंपरा अध्ययन कार्यक्रमों को शामिल किया जाता है; और क्षेत्र संपदा में एक क्षेत्र विशेष पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इसने विकसित की है (क) जनजातियों के बारे में संग्रह सहित लोक कला और शिल्प के सामग्री प्रलेखन का मौलिक संग्रह (ख) मल्टी मीडिया प्रस्तुतियां, और (ग) भारतीय सांस्कृतिक घटना और उनकी समग्रता और पारस्परिकता के लिए वैकल्पिक मॉडल विकसित करने तथा पर्यावरण, पारिस्थितिकी, कृषि सामाजिक–आर्थिक सांस्कृतिक और राजनीतिक मानदंडों का एक दूसरे से जुड़ाव हेतु आदिवासी समुदायों के बहुविषयी जीवन शैली अध्ययनों को शुरू किया है।

कलादर्शन प्रभाग एकीकृत विषयों और अवधारणाओं पर अंतर–विषयी संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों और प्रस्तुतियों के लिए एक मंच प्रदान करता है। बाल जगत बच्चों के लिए कार्यक्रम, इस प्रभाग की गतिविधियों के अंतर्गत आता है। कलादर्शन इ. गाँ.रा.क.के. के अनुसंधान को दृश्य और स्पर्श रूपों में प्रसार करने के द्वारा भारत और विश्व के बीच खिड़कियों को खोलता है।

कलानिधि और कलाकोश प्राथमिक और माध्यमिक सामग्री के संग्रह मौलिक आवधरणाओं के अन्वेषण, रूप के सिद्वांतों की पहचान सिद्वांत और पाठ्य (शास्त्र) और बौद्विक परिचर्चा (विमर्श) के स्तर पर तकनीकी शब्दावलियों की व्याख्या और मार्ग के स्तर पर व्याख्या पर संकेंद्रित करते हैं। जनपद संपदा और कलादर्शन लोक, देश और जन के स्तर पर अभिव्यक्तियों प्रक्रियाओं जीवन कार्यों जीवन शैलियों और मौखिक परंपराओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। एक साथ मिलकर चार प्रभागों के कार्यक्रम कलाओं को उनके जीवन शैली के निर्वाह और संसाधन प्रबंधन रणनीति और प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान विषयों के साथ संबंधों के मूल संदर्भ में रखते है। अनुसंधान प्रोग्रामिंग और अंतिम परिणाम की पद्धतियां अनुरूप हैं, और इस प्रकार प्रत्येक प्रभाग के काम को दूसरों के कार्यक्रमों का पूरक बनाती है।

यूएनडीपी सहायता से 1994 में **सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला (सीआईएल)** एक विश्व स्तरीय प्रलेखन इकाई के रूप में उभरी है जो उस तरीके को प्रदर्शित करती है जिसमें जीवन और पर्यावरण के प्रबंधन, और जिसमें मानव और गैर–मानव, ऑर्गेनिक तथा गैर–ऑर्गेनिक समुदाय शामिल हैं, के लिए स्थायी रणनीति के आधार के रूप में संस्कृति की समग्र और एकीकृत धारणा में सांस्कृतिक विरासत वास्तविक तौर पर सृजित की जा सकती है। यह न केवल इ.गाँ.रा.क.के. की दुर्लभ पाण्डुलिपियों, पुस्तकों, तस्वीरों, स्लाइडों, और ऑडियो –वीडियो सामग्री के डिजिटलीकरण के लिए ही उपयोग में लाया जाता है बल्कि संस्कृति मंत्रालय के तहत काम कर रहे अन्य संगठनों के लिए भी एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में कार्य करता है।

सूत्रधार प्रभाग सभी प्रभागों के लिए, प्रशासनिक, प्रबंधकीय और संगठनात्मक समर्थन और सेवाएं प्रदान करता है।

न्यास का गठन

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (कला विभाग) के संकल्प संख्या एफ 16–7/86–कला दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसार, नई दिल्ली में इ.गाँ.रा.क.के. न्यास का विधिवत गठन एवं पंजीकरण 24 मार्च, 1987 को किया गया। प्रारंभ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था जिसका समय–समय पर पुनर्गठन किया जाता रहा है।

दिनांक 31 मार्च, 2015 के अनुसार न्यासी और कार्यकारी समिति के सदस्यों के नाम, अनुबंध I और II में दिए गए हैं।

झलकियां

वर्ष 2014–15 के दौरान कार्यक्रम

इ.गाँ.रा.क.के. ने इस वर्ष एक सौ से अधिक कार्यक्रमों की मेजबानी की। इसमें 61 व्याख्यान, 19 संगोष्ठियां और सम्मेलन, 26 प्रदर्शनियां, 25 से अधिक प्रदर्शन, और 10 कार्यशालाएं शामिल थीं। इ.गाँ.रा.क.के. के अनुसंधान कार्यक्रमों पर आधारित दस डीवीडी वर्ष के दौरान जारी की गईं। इ.गाँ.रा.क.के. फिल्म सर्किल के भाग के रूप में इ.गाँ.रा. क.के. ने 29 फिल्म स्क्रीनिंग (प्रदर्शन) का भी आयोजन किया। गैर–सहयोगी श्रेणी के अंतर्गत 28 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

दक्षिण–दक्षिण पूर्वी एशिया क्षेत्र से संबंधित तीन अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। ये थे; 'विएतनाम की

चाम विरासत पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन' जिसका आयोजन 25 और 26 अप्रैल, 2014 को किया गया; 4–5 सितंबर, 2014 को आयोजित 'बौद्ध साहित्य एवं कला का 'तिब्बती साहित्य एवं कला का बौद्धट्रांसक्रिएशन पर सातवां अंतर्राष्ट्रीय एलैक्जैन्डर क्सोमा दी कोरोस संगोष्ठी परिचर्चा'; 'दक्षिण एवं मध्य एशियाई धरोहरों के विशेष संदर्भ के साथ एमएआरसी आउरेल स्टेइन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनः हाल के खोज एवं अनुसंधान' जिसका आयोजन मार्च, 2015 में किया गया।

समान विषय पर मिलती–जुलती प्रदर्शनी के साथ 'अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' (भारत में अफ्रीकीः एक पुर्नखोज) पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस प्रदर्शनी की मेजबानी ब्लेक स्ट्डीज, न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी में अनुसंधान के लिए स्कोम्बर्ग सेंटर के सहयोग से अक्तूबर, 2014 में आयोजित की गयी थी।

जनवरी 2015 में 'अगम के शास्त्रिक और प्रायोगिक तत्वों' पर कांचीपुरम, तमिलनाडु में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। दिसंबर 2014 में शाब्दिक परंपराओं में निहित भारतीय कलाः गुजरात के विशेष संदर्भ में विषय पर वडोदरा में एक संगोष्ठी आयोजित की गई।

इ.गाँ.रा.क.के. ने अनेक प्रदर्शनियों का आयोजन किया था, जिसकी काफी अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई थी। उसमें शामिल हैः अगस्त–सितंबर, 2014 में सम्पन्न 'ड्रान फ्रॉम लाइटः अर्ली फोटोग्राफी एंड दी इंडियन सबकॉन्टिनेंट' (प्रकाश से तैयारः पूर्व फोटोग्राफी और भारतीय उप–महाद्वीप); मई 2015 में सम्पन्न 'द रिबेल एंड हर कॉजः लाइफ एंड वर्क ऑफ रशीद जहाँ' (एक विद्रोही और उसके कारणः रशीद जहाँ का जीवन और कार्य); दिसंबर, 2014 में सम्पन्न 'कांथाः पोएट्री एम्ब्रॉइर्डेड ऑन क्लॉथ' (कांथा, कपड़े पर काव्यात्मक कसीदाकारी); जनवरी–फरवरी, 2015 में सम्पन्न एक फोटोग्राफी से संबंधित प्रदर्शनी 'इंडिया'स पार्टिसिपेशन इन वर्ल्ड वॉर I' (प्रथम विश्व युद्ध में भारत की भागीदरी); फरवरी 2005 में सम्पन्न 'फ्रॉम अर्थ टू अर्थः डिवोशन एंड टेरेकोटा ऑफ्फरिंग्स इन तमिलनाडु' (पृथ्वी से पृथ्वी तकः तमिलनाडु में भक्ति और टेरेकोटा प्रसाद); और दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलुरु में सम्पन्न पूर्वोत्तर भारत पर एक प्रदर्शनी 'ईशान्य'।

इसके अतिरिक्त, इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा राजा दीन दयाल, रॉक आर्ट तथा बृहदेश्वर के फोटोग्राफ की प्रदर्शनियां देश के विभिन्न भागों में आयोजित की गईं। इस वर्ष इ.गाँ.रा.क.के. की प्रदर्शनी 'आख्यान–मास्क (मुखौटे), पपेट्स (कठपुतलियाँ) और स्क्रोल्स' का स्पेन और फ्रांस में आयोजन किया गया। 'मास्टर्स ऑफ हिंदुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक' सीरीज के अंतर्गत इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा पंडित अरविंद पारिख, पंडति एल. के. पंडित, विदूषी डॉ. एन. राजम और विदूषी शन्नो खुराना पर डीवीडी जारी की गई।

राष्ट्रीय संग्रहालय में आयोजित 'बॉडी इन इंडियन आर्ट' (भारतीय कला में काया) पर एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी का प्रलेखन और इस प्रलेखन को आठ उपाख्यानों में जारी करना एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

इ.गाँ.रा.क.के. में स्वस्ति नामक दुकान खोली गयी। इसका प्रबंधन एचएचईसी द्वारा किया गया और इसमें इ.गाँ.रा.क.के. के प्रकाशनों, विशेष रूप से इ.गाँ.रा.क.के. से संबंधित विषयों पर आधारित सृजित कलात्मक वस्तुओं, का प्रदर्शन और बिक्री की गई।

आगामी पृष्ठों पर प्रभागानुसार इ.गाँ.रा.क.के. की गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा है।

कलानिधि प्रभाग

कलानिधि प्रभाग पांच अनुभागों से मिलकर बना है; (क) एक अद्वितीय संदर्भ पुस्तकालय, जिसमें सुनीति कुमार चटर्जी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, महेश नियोगी, मिलादा गांगुली और अब डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन सहित महान अध्येताओं के व्यक्तिगत संग्रह हैं। (ख) इ.गाँ.रा.क.के., प्रमुख भारतीय संग्रहण और पुस्तकालयों उदाहरण के लिए ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट लाईब्रेरी, त्रिवेन्द्रम; भंडारकर लाईब्रेरी, पुणे और ओरिएन्टल मैनुस्क्रिप्ट लाईब्रेरी, मैसूर से अप्रकाशित पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिशेज़ का एक दुर्लभ संग्रह है। इसके अलावा यहां विदेशी संग्रह की सामग्री के माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिशेज़ भी उपलब्ध हैं, खासकर यूनाईटेड किंगडम, जर्मनी, चीन और रूस के। (ग) इ.गाँ.रा.क.के. पुस्तकालय में स्लाईडों का विशाल संग्रह है। 100000 स्लाइडों से अधिक यह इकाई अनुसंधान और संदर्भ के लिए एक समृद्ध संसाधन प्रदान करती है। (घ) कलानिधि कई विख्यात गणमान्य व्यक्तियों से उनके व्यक्तिगत संग्रहों को सांस्कृति अभिलेखागार के लिए एकत्र करता रहा है, चाहे वे फोटोग्राफ हों जैसे कि राजा दीनदयाल, हेनरी कार्टिया ब्रेसोन, सुनील जानाह, या फिर वस्त्र सामग्री अथवा ऑडियो–विजुलअ सामग्री। इस अनुभाग में एक पूर्ण सज्जित संरक्षण प्रयोगशाला भी है। कागज, कागज की लुगदी, लकड़ी, वस्त्र और नृजाति विज्ञान संबंधी वस्तुओं जैसी विभिन्न सामग्रियों के संरक्षण के लिए सभी विभागीय आवश्यकताओं को पूरा करने के अतिरिक्त संरक्षण प्रयोगशाला दूसरे संगठनों को भी पेशेवर सहायता उपलब्ध कराती है। (ड़) इ.गाँ.रा.क.के. का डिजिटल अभिलेखागार इ.गाँ.रा.क.के. के दस्तावेजों और सॉफ्ट फॉर्मेट में अनुसन्धानों का भंडारगृह है। इसे मीडिया केन्द्र कहते हैं, इस इकाई में इ.गाँ.रा.क.के. के जीवन शैली अध्ययन और कार्यक्रमों के दस्तावेजों की वास्तविक प्रतियाँ

उपलब्ध हैं। (च) सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला (सीआईएल) इ.गाँ.रा.क.के. के अकादमिक स्रोत का एक भाग है। यह अकादमिक कार्य और प्रौद्योगिकी के बीच एक इंटरफेस का काम करता है। सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला (सीआईएल) की परियोजनाएं इ.गाँ.रा.क.के. की अकादमिक परियोजनाओं के अनुसंधान–प्रलेखन को विकसित करती हैं।

कलानिधि का प्रमुख उद्देश्य कला के लिए एक वृहद संसाधन केन्द्र के रूप में सेवा प्रदान करना है, खासकर लिखित, मौखिक और विजुअल संसाधन सामग्री के संबंध में। यह इ.गाँ. रा.क.के. के विभिन्न प्रभागों को अनुसंधान हेतु सहायता सेवा उपलब्ध कराने की दृष्टि से तैयार किया गया है। यह भारत तथा विदेशी अध्येताओं और अनुसंधानकर्ताओं के लिए राष्ट्रीय सुविधा केन्द्र के तौर पर भी कार्य करता है।

कलानिधि प्रभाग की गतिविधियों (2014–15) की विस्तृत जानकारी नीचे प्रदान की गई है:

संदर्भ पुस्तकालय

संदर्भ पुस्तकालय दुर्लभ पुस्तकों और विद्वानों की पत्रिकाओं के सीमित संस्करणों का एक संग्रह है।

पुस्तकों का प्रापण

वर्ष के दौरान संदर्भ पुस्तकालय में 673 किताबों को शामिल किया गया जो पुस्तक प्रापण समिति की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। 555 पुस्तकें भी निशुल्क प्राप्त हुई हैं, जिन्हें पुस्तकालय के संग्रह में शामिल किया गया है।

प्रसंस्करण इकाई

कुल 1546 पुस्तकों का वर्गीकरण किया गया है और एएसीआर प्प कोड और डेवी दशमलव वर्गीकरण प्रणाली का प्रयोग करके उनकी सूची बनायी गयी है। विषय से संबंधित शीर्ष लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस लिस्ट का प्रयोग करके दिये गए हैं। सभी पुस्तकों की लिबसिस आधारित केटलॉग डाटाबेस में प्रविष्टि की गयी है। नई पुस्तकों पर बार कोड डाला गया है।

पत्रिकाएं

पुस्तकालय ने 189 पत्रिकाओं की ग्राहक–सदस्यता ली है। व्याप्त विषयों में शामिल हैं' मानवशास्त्र, पुरातत्व, कला, कम्प्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी, संरक्षण, संस्कृति, नृत्य, लोकगीत, इतिहास, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान, भाषा विज्ञान, साहित्य, संग्रहालय अध्ययन, संगीत, मुद्राशास्त्र, प्राच्य अध्ययन, प्रदर्शन कला, दर्शनशास्त्र, पुत्तल कला, धर्म, समाज शास्त्र, थिएटर एवं क्षेत्र अध्ययन।

पत्रिकाओं के 1150 अंकों को लिबसिस डाटाबेस में पंजीकृत किया गया है। पिछले खंड के 288 शीर्ष नामों को शामिल किया गया था। अन्य सम्बद्ध कार्य जैसे कि अलमारियाँ तैयार करना, छंटाई, अंक, अव्यवस्थित अंकों को वापस करना, प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण देने का कार्य इस अनुभाग में किया गया है।

पुस्तकालय में निम्नलिखित ऑनलाइन डाटाबेस उपलब्ध हैं जिन्हें अनुसंधानकर्ताओं द्वारा इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इजप्रोक्सी सॉफ्टवेयर की सहायता से डाटाबेस तक पहुँचने की सुविधा प्रदान की गयी है।

1. ईबीएससीओ, कला और मानविकी
2. जेएसटीओआर
3. जे–गेट, कला और मानविकी

कलानिधि 6 संस्थानों/संघों का अंतर्राष्ट्रीय सदस्य भी है।

प्रसार एवं संदर्भ सेवा

इ.गाँ.रा.क.के. पुस्तकालय के 81 सदस्य है जो प्रमुख तौर पर शैक्षिक संस्थानों से हैं। वर्ष के दौरान 3560 अध्येताओं ने पुस्तकालय का दौरा किया। पाण्डुलिपियों के डिजिटल संस्करण के संबंध में परामर्श करने हेतु विदेश से अनेक शिक्षाविदों ने पुस्तकालय का दौरा किया।

निम्नलिखित संस्थानों के विद्यार्थियों/प्रयोगकर्ताओं ने समूह में पुस्तकालय का दौरा किया:

- एम. एम. (पीजी) कॉलेज, मोदी नगर के पुस्तकालय और सूचना विज्ञान विभाग के 32 विद्यार्थियों ने 29 अप्रैल, 2014 को संदर्भ पुस्तकालय का दौरा किया।
- विभिन्न देशों से जैन अध्ययन करने वाले 28 विद्यार्थियों के एक समूह ने पुस्तकालय का दौरा किया।
- 14 नवंबर, 2014 को भारत के राष्ट्रीय संग्रहालय से 21 प्रशिक्षुओं के एक समूह ने संदर्भ पुस्तकालय का दौरा किया।
- लेडी श्रीराम एल्यूमिनी एसोसिएशन के 10 कार्यकारी सदस्यों ने 14 नवंबर, 2014 को संदर्भ पुस्तकालय का दौरा किया।

ग्रंथ विज्ञान इकाई

ग्रंथ विज्ञान इकाई भारतीय पुरातत्व का वार्षिक ग्रंथ

(एबीआईए) परियोजना का एक भाग है। एबीआईए अनुक्रमणिका, खंड 4 (लगभग 1800 रिकॉर्ड) का अंतिम सम्पादन पूरा किया गया था। इस दस्तावेज के प्राक्कथन और संपादकीय लेख प्रक्रियाधीन हैं।

सी–डेक परियोजना

'इ.गाँ.रा.क.के. के सांस्कृतिक डाटा के डिजिटल संरक्षण परियोजना' के लिए प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी–डेक), पुणे के साथ वर्ष 2011 में एक सहयोगी परियोजना शुरू की गयी। इस परियोजना का प्रायोजन इलेक्ट्रॉनिक और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया है। इस उद्देश्य के लिए अप्रैल, 2012 से दो डाटा एंट्री ऑपरेटर कार्य कर रहे हैं। जनवरी, 2014 में सी–डेक पुणे ने आठ अतिरिक्त डाटा एंट्री ऑपरेटर और एक सिस्टम/डेस्कटॉप एडमिनिस्ट्रेटर उपलब्ध कराये हैं।

कलानिधि में दुर्लभ पुस्तकों का कुल डिजिटल संग्रह 1951 है, जिसमें से 1790 को अपलोड किया जा चुका है। वर्ष 2014–15 के दौरान 610 दुर्लभ पुस्तकें और एसबीएल की 2775 पांडुलिपियाँ ई–रूपांतर सॉफ्टवेयर में अपलोड की गयी हैं।

(ख) रिप्रोग्राफी इकाई

कलानिधि की रिप्रोग्राफी इकाई प्रमुख तौर पर दुर्लभ और अप्रकाशित माइक्रोफिल्मिंग से संबंध रखती है जो विरासत पुस्तकालयों और व्यक्तिगत संग्रहों में पूरे देश में यत्र–तत्र उपलब्ध हैं। वर्ष 2014–15 के दौरान इकाई द्वारा निम्नलिखित माइक्रोफिल्मिंग/डिजिटलीकरण परियोजनाओं को प्रारंभ किया गया।

1. वैद्यमाधाम वालिया नारायणन नंम्बूदिरी दक्षिणामूर्ति ट्रस्ट, केरल
2. कनिप्पायुर संकरण नंम्बूदिरी पद समरका ग्रंथशाला, केरल
3. राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, उदयपुर

सभी 211 रोल्स में (1148 डीवीडी), जिसमें 5460 पांडुलिपियाँ (324340 जिल्द) उपरोक्त केन्द्रों से माइक्रोफिल्म/डिजिटल किया गया था। इसके अलावा, गुणवत्ता उद्देश्य के लिए 484394 डिजिटल प्रतिकृतियों की पुष्टि की गयी थी।

ई–ऑफिस

ई–गवर्नेंस के लिए, वर्ष 2014–15 के दौरान इ.गाँ.रा.क.के. में एनआईसी के लिए उपयोगी ई–ऑफिस को कार्यान्वित किया गया था। ई–ऑफिस पोर्टल की मुख्य विशेषताएं अर्थात फाइल ट्रेकिंग के लिए एफएमएस (फाइल प्रबंधन प्रणाली); परिपत्रों/आदेशों के प्रभाग–वार प्रकाशन के लिए केएमएस (ज्ञान प्रबंधन प्रणाली), अवकाश के लिए ऑन–लाइन आवेदन करने हेतु ई–लीव, सीएएमएस (नियुक्तियों और फोटो गैलरी प्रबंधन हेतु सहयोगी और संदेश सेवा), डाउन लोड फॉर्म और मुख्य समाचारों को परिचालन में लाया गया।

पांडुलिपि इकाई

पांडुलिपि इकाई द्वारा उचित विषय के शीर्षकों के साथ पांडुलिपियों की पुस्तक सूची प्रलेखों को तैयार किया गया है जिन्हें माइक्रोफिल्म के तौर पर संयुक्त परियोजना के रूप में किया गया है। प्रलेखों को वृहद तौर पर मान्यता प्राप्त मानक, एमएआरसी–21 फार्मेट का उपयोग करके तैयार किया गया है। अब तक सृजित किए गए प्रलेखों की कुल संख्या 248000 है। माइक्रोफिल्म के रूप में उपलब्ध पाण्डुलिपियों की वेद (संहिता) की एक विषय सूची बनाई जा रही है।

(ग) स्लाइड इकाई

एक बड़ी तस्वीर तथा स्लाइड लाइब्रेरी की स्थापना के लिए ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। यहां भी एक संसाधन केन्द्र को विकसित करने पर जोर दिया जा रहा है जहां भारतीय तथा एशियाई कला पर दस्तावेजीकरण सुगम तौर पर उपलब्ध हो सके।

2090 प्रविष्टियों के विषय सूची से संबन्धित विवरण को गीत गोविंद संग्रह से अद्यतन किया गया था और विक्टोरिया एंड एलबर्ट म्यूजियम संग्राहलय के संग्रहण से 2650 विवरणों को अद्यतन किया गया था। स्मारकों, परिदृश्यों और कुरुक्षेत्र, अगरतला, सिल्चर के जीवन अध्ययन के फोटो दस्तावेज तैयार किए गए। 'नंद जाट यात्रा' के दौरान अनुष्ठान के बारे में जानकारी देने वाले तथा क्षेत्र की कला और वस्तु–कला को दर्शाने वाले 1000 से भी अधिक फोटोग्राफ लिए गए।

(घ) सांस्कृतिक अभिलेखागार

इ.गाँ.रा.क.के. के सांस्कृतिक अभिलेखागार में दुर्लभ सामग्रियों का संग्रह शामिल है, जिसमें नृजाति विज्ञान सामग्री, स्क्रोल्स, फोटोग्राफी, चित्रकलाएं और व्यक्तिगत संग्रह सम्मिलित हैं। सांस्कृतिक अभिलेखागार में उपलब्ध कलाकृतियों को छः वृहद समूहों या शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है। वे हैं i) साहित्य (लिट्रेचर), ii) वास्तुशिल्प (दृश्य कला, वास्तुविज्ञान, शिल्पकारी), iii) छायापट (फोटोग्राफ), iv) संगीत, v) नृत्य, और vi) नाट्य (मंचकला)। वर्गीकरण और सूचीकरण अथवा कला की वस्तुओं हेतु मेटाडाटा के सृजन का कार्य नियमित तौर पर किया जाता है।

वर्ष के दौरान प्रलेखन का कार्य वी.ए.के. रंगा के संग्रह, डॉ.

कपिला वात्स्यायन के संग्रह, बेनॉय के. बहल के संग्रह, शंभू साहा के संग्रह, आनंद कुमारस्वामी के संग्रह पर किया गया है।

भारतीय और विदेशी अध्येताओं ने इस वर्ष सांस्कृतिक अभिलेखागार का दौरा किया।

दस्तावेजीकरण इकाईः

प्रभाग के दस्तावेजीकरण इकाई को पुनर्जीवित किया गया है। इकाई का प्रमुख उद्देश्य उन सभी सामग्रियों को एकत्र और संरक्षण करना है जो इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा आयोजनों अथवा शैक्षणिक कार्यक्रमों से संबंधित हो सकते हैं और जिससे कि एक विश्वसनीय संस्थागत स्मृति का निर्माण किया जा सके। इकाई द्वारा प्रभाग के विभिन्न कार्यक्रमों और आयोजनों पर संक्षिप्त लेख भी तैयार किया जाता है। यह इ.गाँ.रा.क.के. के वेबसाइट और द्विमासी समाचार बुलेटिन के प्रकाशन हेतु अद्यतनीकरण के लिए सामग्री भी प्रदान करता है।

आउटरीच कार्यक्रम

कलानिधि का एक बुक सर्कल है, जिसके अधीन महीने के प्रत्येक चौथे शनिवार को वाचन और चर्चा के लिए एक लेखक/एक पुस्तक को चुना जाता है। इसके अधीन निम्नलिखित को चुना गया थाः

दिनांक 24 अप्रैल, 2014 को सुश्री अंजू गुप्ता, सुश्री सुकृता पॉल और सुश्री रक्षंदा जलील द्वारा इस्मत चुगताई की पुस्तक 'ए चुगताई क्वार्टेट' पर चर्चा की।

जादुई यथार्थ जादूगरः दिनांक 22 मई 2014 को श्री प्रभात रंजन द्वारा आयोजित हिंदी में लिखी गेब्रियल गार्सिया मार्केज की जीवनी पर चर्चा की।

दिनांक 26 जून, 2014 को श्री राघव चन्द्र द्वारा 'सेंट ऑफ ए गेम' पर चर्चा की।

दिनांक 24 जुलाई, 2014 को सुश्री अरुणा चक्रबर्ती और सुश्री रेबा सोम द्वारा श्री सुनील गंगोपाध्याय के कार्य 'दोज डेज और फर्स्ट लाइट' पर चर्चा की।

दिल्ली और मुंबई से तीन उच्च माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों–साहिल बंसल, तनेशा पुरी, उद्यान शर्मा ने 20 अगस्त, 2014 को अपने प्रकाशनों 'इंक्सपायर' (पत्रिका), 'रिफ्लेक्सन्स'(कविता) और 'टेक रिच सेंचुरी' (विज्ञान) पर चर्चा की।

दिनांक 25 सितम्बर, 2014 को प्रो. मकरंद परांजपे के पहले उपन्यास 'बॉडी ऑफ्फरिंग' पर चर्चा की।

27 नवम्बर, 2014 को सुश्री नीरजा पाठक द्वारा 'अनटोल्ड स्टोरी ऑफ सीता' पर चर्चा की।

दिनांक 18 दिसंबर, 2014 को सुश्री अनु सिंह चौधरी द्वारा 'नीला स्कार्फ' को पढ़ा और उस पर चर्चा हुई।

दिनांक 22 जनवरी, 2015 को सुश्री सुमेधा वी. ओझा की पहली पुस्तक 'उरणाभि' पर चर्चा की।

दिनांक 26 फरवरी, 2015 को सुश्री मालाश्री लाल ने 'टैगोर एंड फेमिनिन' पुस्तक से पढ़ा। वर्ष 2011 में रवींद्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती समारोह से विश्व भर में यह पुस्तक उत्प्रेरित है।

दिनांक 26 मार्च, 2015 को डॉ. अलका त्यागी ने दो संग्रह 'व्हिसपर्स एट दी गंगा घाट' एंड 'अमलतास' में से पढ़ा।

दिनांक 23 अप्रैल, 2015 को उत्तर भारतीय संगीत के लखनऊ घराने के कुछ कलाकारों में से एक सुश्री रेखा सूर्य द्वारा 'संग इन ए सेंशुअल स्टाइल' पर चर्चा की।

कलानिधि ने निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन कियाः

- दिनांक 8 मई, 2014 को डॉ. नमन पी. आहूजा द्वारा 'द बॉडी इन इंडियन आर्ट' पर व्याख्यान का आयोजन किया गया था।
- दिनांक 20 अगस्त, 2014 को हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि और समालोचक श्री यतीन्द्र मिश्र द्वारा 'साहित्य और कला की मित्रता' पर हजारी प्रसाद द्विवेदी वार्षिक स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया गया था।
- दिनांक 3 नवंबर, 2014 को डॉ. पी. वाई. राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक, राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकाता द्वारा 'भारत का राष्ट्रीय पुस्तकालयः नयी चुनौतियां और अवसर' पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया था। 6–10 नवंबर, 2014 को मुंबई में 'शारदा लिपि' पर एक कार्यशाला आयोजित की गयी थी।
- दिनांक 06–10 नवंबर, 2014 को मुंबई में 'शारदा लिपि' पर एक कार्यशाला आयोजित की गयी थी।
- इ.गाँ.रा.क.के. के सहयोग से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र में 17 नवंबर, 2014 को गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर

'गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर – ए विशनरी, आर्टिस्ट एंड पोएट – प्रदर्शनी का वूमन्स कॉलेज, सिलचर, असम

'इमेजेज ऑफ इंडिया – ए फस्किनटिंग जर्नी थ्रू टाइम' प्रदर्शनी का उद्घाटन अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में

'गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर –ए विशनरी, आर्टिस्ट एंड पोएट – प्रदर्शनी का कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र में उद्घाटन समारोह।

– ए विशनरी, आर्टिस्ट एंड पोएट (एक विचारक, कलाकार और कवि) शीर्षक से टैगोर पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। महिला कॉलेज, सिल्चर असम के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. ने 2 मार्च–20 अप्रैल, 2015 तक असम में पुनः एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। कॉलेज में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया था, जिसमें डॉ. पी.आर. गोस्वामी (विभागाध्यक्ष–केएन) और श्री वी. बंगरू, सहायक प्रोफेसर (केएन) ने 'सांस्कृतिक स्रोतों का प्रबंधन' पर एक लेख पढ़ा।

- इ.गाँ.रा.क.के. के सहयोग से मोइन्नुद्दीन अहमद आर्ट गैलरी, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय ने 28 फरवरी, 2015 को 'इमेजेज ऑफ इंडिया – ए फस्किनटिंग जर्नी थ्रू टाइम' (भारत की प्रतिमाएँ–समय के माध्यम से एक मोहित यात्रा) नामक एक प्रदर्शनी की मेजबानी की।

- अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों के एक हिस्से के रूप में 24 मार्च–10 अप्रैल 2015 तक ओरल स्टीन द्वारा लिखित पुस्तकों पर 'फस्किनेटेड बाइ दी ओरिएंट–लाइफ एंड वर्क ऑन सर ओरल स्टीन' पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था।

- राजा दीन दयाल पर राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, बंगलुरु, चेन्नई, डेली कॉलेज, इंदौर, जे. जे. आर्ट कॉलेज, मुंबई, एल.डी. इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी, अहमदाबाद, विरासत आर्ट फेस्टीवल, देहरादून में एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी और विश्व फोटोग्राफी दिवस के अवसर पर मीडिया केन्द्र, इ.गाँ.रा.क.के. में 'हेनरी कार्टीयर ब्रेसन' पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था।

श्री के. रिजिजू (माननीय गृह राज्य मंत्री) द्वारा 'दी विंटेज कैमरा कलेक्शन' प्रदर्शनी का उद्घाटन।

प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी की '125 जन्म शताब्दी के अवसर पर संगोष्ठी'

- दिनांक 26 नवंबर, 2014 को प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी की 125 जन्म शताब्दी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में फोटोग्राफ्स की एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था।

- निफ्ट के सहयोग से 27–29 नवंबर, 2014 को पुस्तकालयों, संग्राहलयों और अभिलेखागारों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था।

- दिनांक 10 दिसंबर, 2014 को 'भारत और कनाडा में भाषा क्षति और देशी संस्कृति' पर एक पैनल चर्चा हुई थी।

- दिनांक 10 मार्च, 2015 को प्रोफेसर सुगता बोस द्वारा इ. गाँ.रा.क.के. में 'प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी के कार्य और उनके स्मरणार्थ संग्रह' पर एक सार्वजनिक व्याख्यान का आयोजन किया गया था।

पुस्तक मेलों में भागीदारी

कलानिधि प्रभाग ने अनेक पुस्तक मेलों में भाग लिया। इसमें अगस्त, 2014 में सम्पन्न दिल्ली पुस्तक मेला, फरवरी, 2015 नई दिल्ली में सम्पन्न विश्व पुस्तक मेला, जनवरी, 2015 में आयोजित कोलकाता पुस्तक मेला शामिल है और जयपुर साहित्य उत्सव के एक सहायक कार्यक्रम के रूप में जयपुर पुस्तक मार्क का आयोजन किया गया था। इ.गाँ.रा.क.के. के तत्वाधान में तैयार और प्रकाशित डीवीडी को भी पुस्तक मेलों में प्रदर्शित किया गया।

संरक्षण इकाई

इ.गाँ.रा.क.के. की संरक्षण इकाई एक आधुनिक और तकनीकी रूप से सुसज्जित केन्द्र है। यह विभागीय संरक्षण इकाई आवश्यकताओं और अन्य संस्थानों के लिए नियत कार्यों को पूर्ण करता है। वर्ष के दौरान इकाई की गतिविधियां निम्न प्रकार रहीः

क. पुस्तकों, पांडुलिपियों और अन्य कला की वस्तुओं का संरक्षण – 163

कलानिधि पुस्तकालय	– 12
सांस्कृतिक अभिलेखागार	– 16
जनपद संपदा प्रभाग	– 39
सीआईएल	– 11
राष्ट्रपति भवन पुस्तकालय	– 35
दिल्ली पुलिस	– 45
अन्य	– 5

ख. अन्य संरक्षण कार्य

1. पुस्तकें और फाइलों के लिए 60 'अभिलेखीय बक्से' तैयार किए गए
2. जनपद संपदा संग्रहण का पुनर्गठन (3 चरण)
3. संरक्षण प्रभाग ने तोलोशा, स्पेन की वस्तुओं की पैकिंग और परिवहन के लिए जनपद संपदा प्रभाग की सहायता की। संरक्षण प्रभाग ने 200 वस्तुओं की कंडीशन (दशा) रिपोर्ट तैयार करने के अलावा वस्तुओं के लिए आवश्यक प्रबंध किए।
4. प्रदर्शनी के लिए स्ट्रेच्ड कांथा टेक्सटाइल 35 और डी–स्ट्रेच्ड टेक्सटाइल 11
5. 'इमेजेज ऑफ इंडिया–ए फस्किनटिंग जर्नी थ्रू टाइम'(भारत की छवि) पर 116 प्रदर्शित वस्तुएं रखी
6. आईआईसी पुस्तकालय में पारदर्शी प्लास्टिक शीट से बुक शेल्फ (रोलर) को ढका गया।
7. पुस्तकों के संरक्षण पर आयोजित दो दिन की कार्यशाला का आयोजन किया गया।
8. असम में पुस्तकों और अन्य कला वस्तुओं के संरक्षण पर आयोजित 3 कार्यशालाओं (तेजपुर में दो दिन, मोरनहाट में तीन दिन और माजुली में दो दिन) का आयोजन किया गया।

असम में 'पुस्तकों' और 'अन्य कला वस्तुओं' के संरक्षण पर कार्यशाला

9. विभागाध्यक्ष (सी) के सुपुर्द किया:

क) मई 2014 के महीने में शिमला संग्रहालय में 'पुस्तकालय और अभिलेखीय संग्रह के निवारक संरक्षण' विषय पर कार्यशाला के लिए व्याख्यान सह प्रदर्शन दिया गया था।

ख) नवंबर 2014 के महीने में शिमला संग्रहालय में 'इलस्ट्रेटेड पांडुलिपि के निवारक संरक्षण' विषय पर कार्यशाला के लिए व्याख्यान सह सिद्ध अभ्यास आयोजित किया गया।

मीडिया केन्द्र

इ.गाँ.रा.क.के. का मीडिया केन्द्र मुख्य रूप से इ.गाँ.रा.क.के. की गतिविधियों के सभी दृश्य/श्रवण सभी प्रलेखन/अनुसंधान और आगे बढ़ाने के लिए जिम्मेदार है। वर्ष 2014–15 के दौरान मीडिया केन्द्र ने अपने अनुसंधान प्रलेखन और संग्रह को समेकित किया और नियमित डीडी भारती ट्रांसमिशन और फिल्म शो, डीवीडी प्रकाशन के माध्यम से अपने अनुसंधान के लिए बड़े पैमाने पर प्रचार–प्रसार की दिशा में प्रमुख पहल की। इसने वैदिक विरासत पर इ.गाँ.रा.क.के. के समर्पित पोर्टल हेतु एक सॉफ्टवेयर भी उपलब्ध कराया है और वेबसाइट पर अपलोड करने के लिए कार्यक्रमों की लघु वीडियो भी तैयार की हैं।

1. प्रलेखन

(क) रामनगर की रामलीला का समग्र प्रलेखन – 31 दिन

मीडिया केन्द्र ने 'रामलीला ऑफ रामनगर' (रामनगर की रामलीला) का व्यापक तौर पर प्रलेखन दिनांक 7 अक्टूबर, 2014 से किया। इस वृहद प्रलेखन को कुल इक्तीस दिनों तक आठ कैमरों की सहायता से किया गया जिसे रामनगर, वाराणसी में 50 से अधिक अवस्थितियों में संस्थापित किया गया था।

(ख) क्षेत्र डॉक्युमेंटेशन (प्रलेखन)

उत्तराखंड में 'नंदा देवी राज जात' का दस्तावेजीकरण अगस्त–सितंबर, 2014 के दौरान दो कैमरों की सहायता के किया गया। यह धार्मिक अनुष्ठान प्रत्येक 12 वर्षों में एक बार मनाया जाता है।

(ग) अन्य प्रलेखन

मीडिया केन्द्र ने 'शास्त्रोत्सव'; 'कथाकार–इंटरनेशनल स्टोरीटेलर्स फेस्टिवल'; चित्तिरै फेस्टिवल ऑफ कर्नाटिक म्यूजिक'; 'इस्लामिक हेरीटेज ऑफ रामपुर सहसवान घराना'; इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन चाम आर्ट हेरीटेज ऑफ वियतनाम; 'अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' और 'वैदिक हेरीटेज पोर्टल)' सहित इ.गाँ.रा.क.के. में प्रमुख कार्यक्रमों में से कुछ के प्रलेखन का उत्तरदायित्व उठाया।

2. उत्तर पूर्व में फिल्म महोत्सव

उत्तर पूर्व के फिल्म और सांस्कृतिक समाज के संयुक्त उपक्रम में 10–11 फरवरी, 2015 को जोरहट, असम में तथा फरवरी 18–19, 2015 को शिलांग, मेघालय में इ.गाँ.रा.क.के. की फिल्मों का प्रदर्शन किया।

3. दूरदर्शन आउटरीच

मीडिया केन्द्र नियमित तौर पर संपादित किए हुए सॉफ्टवेयर डीडी–भारती चैनल में प्रसारण हेतु दूरदर्शन को आपूर्ति करता रहा है। आपूर्ति किए गए 41 विषयों में कुछ प्रमुख हैं; द्रुपद महोत्सव (छः भागों में) और सुरभि थिएटर (चार भागों में)।

4. मीडिया केन्द्र की नियमित फिल्म स्क्रीनिंग (प्रत्येक माह का 2 और 4 शुक्रवार)

मीडिया केन्द्र इ.गाँ.रा.क.के. से अपने स्वयं के फिल्म संकलनों, पीएसबीटी तथा उनके लाभार्थी स्रोतों में से फिल्मों का नियमित तौर पर प्रदर्शन करता रहा है। ज्यादातर फिल्म प्रदर्शनों के पश्चात प्रश्नोत्तरी सत्र का आयोजन निदेशक अथवा विषय शोधकर्ताओं के साथ किया गया। प्रदर्शित की गई फिल्मों की सूची को अनुबंध–IV में दिया गया है।

5. डीवीडी का प्रकाशन

मीडिया केन्द्र ने बॉडी इन इंडियन आर्ट, सोल

पेंटिंग्स–एलिजाबेथ सास ब्रूनर, डांसिंग पाण्डवस और बुद्धिजम–ए लिविंग रिलिजन इन दी नार्थ ईस्ट ऑफ इंडिया पर फिल्म, डॉ. एन. राजम, पंडित अरविंद पारिख, विदूषी शन्नो खुराना प्रत्येक की 500 डीवीडी, प्रकाशित की है। इसके अतिरिक्त, आठ फिल्मों को पुनर्प्रकाशित किया गया।

6. परदे पर साहित्य – प्रदर्शनी सह फिल्म प्रदर्शन

इ.गाँ.रा.क.के. ने प्रसार भारती के साथ सहकार्यता में तीन दिवसीय टेली–फिल्म महोत्सव का आयोजन 10–12 फरवरी, 2015 के दौरान मीडिया केन्द्र सभागृह में किया गया। टेलीफिल्में विख्यात भारतीय लेखकों की कहानियों पर आधारित थीं। फिल्म प्रदर्शन के उपरान्त निदेशक के साथ परस्पर चर्चा सत्र भी आयोजित किए गए।

सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला

कला और सूचना प्रौद्योगिकी को अनुशासन के बीच सहक्रिया स्थापित करने के लिए सांस्कृतिक सूचना विज्ञान का सृजन किया गया था, जिस कारण सांस्कृतिक प्रलेखन में नई तकनीक के विकास और प्रदर्शन का प्रयोग बढ़ेगा। इस अवधि के दौरान कला और संस्कृति में तकनीकी अनुप्रयोग के क्षेत्र में इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा किए गए कुछ मुख्य कार्य निम्न प्रकार हैं:

सांस्कृतिक सामग्री का डिजिटल प्रसार

1. विषयगत (थेमेटिक) मल्टीमीडिया डीवीडी का इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन

गीत गोविंद परियोजना: जयदेव की गीत गोविंद पर परस्पर चर्चा के साथ मल्टीमीडिया प्रस्तुतिकरण, जिसमें चित्रों, जापों, संगीतमय प्रस्तुतियों और नृत्य को समाहित किया गया था, के प्रदर्शन को इस अवधि के दौरान पूर्ण किया गया। इसे मई, 2015 में पेनड्राईव में रिलीज किया जाएगा।

देवनारायण परियोजना: देवनारायण पर परस्पर चर्चा के साथ मल्टीमीडिया परियोजना पर कार्य प्रगति पर है और इसे वर्ष 2015–16 के दौरान पूर्ण कर लिया जाएगा।

2. प्रदर्शनियां

'बृहदेश्वरः दी मोन्यूमेंट एंड दी लिविंग ट्रेडिशन (बृहदेश्वरः स्मारक और जीवंत परंपरा), शीर्षक से एक प्रदर्शनी का आयोजन मंदिर के विभिन्न पहुलओं को प्रदर्शित करते हुए किया गया और इसे बंगलुरु में (13–22, जून 2014) प्रदर्शित किया गया, तथा

वल्लाडोलिड, स्पेन में 'बृहदेश्वरः स्मारक तथा जीवंत परंपरा' – प्रदर्शनी का उद्घाटन

'वाराणसी में बृहदेश्वरः स्मारक तथा जीवंत परंपरा'

वल्लाडोलिड (स्पेन) (13 नवंबर, से 13 दिसंबर, 2014), कोयम्बटूर (15–23 नवंबर, 2014), वाराणसी (25–29 दिसंबर, 2014 और 1–31 जनवरी, 2015) और चेन्नई (19–24, जनवरी 2015) में किया गया।

दिनांक 20–22 फरवरी, 2015 के दौरान दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित शीर्षक पंचतंत्रः थ्रू दी आईज ऑफ आर्टिस्ट्स इ.गाँ.रा.क.के. में भी चित्रों के संग्रह से प्रदर्शनी सुनियोजित की गई।

3. कलासंपदा

कलासंपदा एक प्रयोगकर्ता अनुकूलन हस्तक्षेप के साथ समाकलित विषय–वस्तु और सूचना का एक डिजिटल भंडार है। इस अनुप्रयोग को आयोजित करने, समग्र करने और प्रसारित करने के लिए (इंटरनेट पर) रिच डिजिटल आर्किवल होल्डिंग्स (पांडुलिपियों, पुस्तक सूची,

पुस्तकें, दृश्य सामग्री, ऑडियो और वीडियो) के नाम से इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा विकसित किया गया है। 2014–15 के दौरान ज्योति भट्ट के संकलन से 33529 छवियों, इ. गाँ.रा.क.के. के आयोजनों में से 16209 छवियों, 76 पुस्तकों, 666 पांडुलिपियों, 101 वीडियों क्लिप्स और डिजिटल स्वरुप में 28 नृजाति–विज्ञान सामग्री को कलासंपदा में समेकित किया गया।

आज की तिथि में कलासंपदा डिजिटल कोश में 15170 पुस्तकों, विभिन्न भंडार संग्रहों से 54916 पांडुलिपियों को, रविन्द्रनाथ टैगोर की 1580 पेन्टिंग्स, 412 विजुअल टैक्सटाइल्स, 21802 फोटोग्राफ्स, भारतीय कला पर 51586 विजुअल्स (सीसीआरटी के संकलन में से), 67625 कलातत्वकोश कार्ड्स, प्रो. ज्योति भट्ट संकलन से जीवन–शैली पर 33529 विजुअल्स, 1123 नृजाति–विज्ञान सामग्री, 83 ऑडियो और 289 वीडियो क्लिप्स शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, इ.गाँ.रा.क.के. की विभागीय प्रतिवेदन, संदर्भ सूचियां, विहंगम, कलाकल्प इत्यादि को विद्यार्थियों को जानकारी प्राप्त करने में सहायता के लिए इसके साथ जोड़ा गया है।

4. इ.गाँ.रा.क.के.– वेबसाइट

इ.गाँ.रा.क.के. के जारी कार्यक्रमों (प्रदर्शनियों, सम्मेलनों/संगोष्ठी, व्याख्यान, कार्यशाला आदि) के बारे में सूचना (घटनाक्रम की तस्वीरें, ऑडियो विजुअल क्लिप, रिपोर्ट/प्रेस क्लिप और कार्यक्रम विवरण) समय–समय पर वेबसाइट पर अपलोड की गई है। एनआईसी आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2014–15 के दौरान औसतन मासिक वेबसाइट हिट्स लगभग 31 लाख दर्ज किए गए।

डिजीटल कलातत्वकोश टर्म (भारतीय कला के बुनियादी अवधारणाओं के शब्दकोश) कार्ड (67,625 नं.) को इ.गाँ. रा.क.के. की वेबसाइट पर उपलब्ध करा दिया गया है।

डिजिटल स्रोत का संवर्धन

ज्योति भट्ट के संग्रह का डिजिटलीकरण – जीवन शैली पर नकारात्मक लगभग 32,647 फोटो का डिजीटल किया गया है। परियोजना अब समाप्त होने वाली है।

इ.गाँ.रा.क.के. के संसाधनों **के** डिजिटलीकरण (अप्रैल, 2014 से मार्च, 2015) में शामिल हैं: 41 पुस्तकें (23087 पृष्ठ), 440 माइक्रोफिल्म रोल (311777 फोलियो), 177 फोटो, 19 पेंटिंग्स, 130 स्लाइड्स, 80 रोल्स (6000 फोलियो) आरओआरआई, उदयपुर और 57 लेख (350 पृष्ठ)

कार्यशालाएं

प्रस्तावित इंटेरैक्टिव मल्टिमीडिया परियोजना पर विस्तारपूर्वक चर्चा करने के उद्देश्य से 'अंगकोर' नाम एक दिवसीय कार्यशाला और मंदिर के विभिन्न पहलुओं के दस्तावेजीकरण व संयोजन की जटिलताओं पर चर्चा के लिए का आयोजन किया गया। प्रो. सच्चिदानंद सहाय ने कार्यशाला का समन्वय किया और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों ने इस अवसर पर अपने विचार साझा किए।

'सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान' के पाठ्यक्रम को तैयार करने हेतु एक कार्यशाला का आयोजन 'एक्स्प्रेसिव कल्चर' हेतु दिशानिर्देश के अधीन कौशल क्षेत्र पर 'संस्कृति' नाम से 30 मार्च, 2015 को इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन प्रो. ओम विकास, पूर्व निदेशक, एबीआईआईआईटी, ग्वालियर के नेतृत्व में किया गया और इस अवसर पर एआईसीटीई, सांस्कृतिक संसाधन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी), नियोजन एवं वास्तुविज्ञान शाला (एसपीए), राष्ट्रीय सूचना–विज्ञान केन्द्र (एनआईसी) तथा इ.गाँ.रा.क.के. के प्रतिनिधियों ने इस कार्यशाला में हिस्सा लिया। शिक्षा, संस्कृति और सूचना–विज्ञान के विभिन्न पहलुओं और मुद्दों को एकीकृत करने पर विशेषज्ञों ने अपने विचार बांटे। सर्वसम्मति बनी कि इस प्रस्तावित पाठ्यक्रम को शुरू किया जाए। यह भी सुझाव दिया गया कि स्तर 8–9 हेतु पाठ्यक्रम दिशानिर्देशों को तैयार किया जाए और सुझावों को समाहित करते हुए अंतिम प्रति को यथाशीघ्र तैयार किया जाए। इ.गाँ.रा.क.के. एआईसीटीई से औपचारिक अनुरोध करेगा कि इ.गाँ.रा.क.के. को एसकेपी (कौशल जानकार साझेदार) के तौर पर अनुमोदित करे।

विविध

निदेशक (सीआईएल) द्वारा 'संस्कृति के प्रचार–प्रसार में मल्टिमीडिया की भूमिका' विषय पर 26 सितंबर, 2014 को, तथा 'भारतीय कला के लोकाचार को समझने में डिजिटल तकनीकी का उपयोग' पर शोधपत्र 7 नवंबर, 2014 को सीसीआरटी, नई दिल्ली में प्रस्तुत किया गया।

सीआईएल से टीम भी आईसीएलएएम सम्मेलन में भाग लेने आई

वैदिक हेरिटेज पोर्टल परियोजना

1. सी–नेट इंफोटेक प्रा. लि. का चयन वैदिक विरासत एवं इ.गाँ.रा.क.के. वेब पोर्टल्स के डिजाइन और विकास के लिए किया गया। वैदिक विरासत पोर्टल की संरचना और डिजाइन को शोधकर्ताओं के साथ मिलकर अंतिम रूप दिया जा रहा है।

2. इ.गाँ.रा.क.के. के पास उपलब्ध वेदों पर पूर्व में ही ए/वी दस्तावेजों का संपादन (जाप/गायन (वेद पथ)/अनुष्ठान) प्रारंभ कर दिया गया है।

3. कडवल्लूर श्री रामास्वामी मंदिर, केरल में 14–16, नवंबर 2014 के दौरान 'वेदों की मौखिक एवं लिपिबद्ध परंपरा' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

4. विख्यात शोधकर्ताओं द्वारा वेदों के समृद्ध ज्ञान पर जागरुकता सृजित करने व इसके प्रचार–प्रसार के लिए एक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

5. केरल में अन्योन्यम् (एक वैदिक अनुष्ठान) के एक् ऑडियोवीडियो प्रलेखन पूरा किया गया।

6. संस्थान जैसे श्री वेद भारती, हैदराबाद; तिरुपति राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति; श्री चंद्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्व विद्यालय, कांचीपुरम; और वैदिक संशोधन मंडल, पुणे के साथ सहयोग उन्नति पर है।

7. इ.गाँ.रा.क.के. वेबसाइट पर एक वेबपृष्ठ का सृजन सभी मूल जानकारियों व विवरणों के साथ किया गया है तथा इसे www.ignca.gov.in/vedic_portal.htm पर देखा जा सकता है।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक ऑडियोविजुअल अभिलेखागार (एनसीएए) परियोजनाः

1. योजना समिति द्वारा इस परियोजना हेतु डिजिटाइजेशन एवं मेटाडाटा मानकों को अंतिम रूप दिया जा चुका है और इसे सार्वजनिक डोमेन पर उपलब्ध कराया गया है।

2. समझौता ज्ञापन को पांच साझेदार संस्थाओं के साथ हस्ताक्षर किया गया है – रुपायन संस्थान, जोधपुर; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल; नाट्य शोध संस्थान, कोलकाता; भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, दिल्ली और सांस्कृतिक संसाधन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली। कई अन्य समझौता ज्ञापनों पर कार्य प्रगति पर है।

3. सी–डैक, पुणे एक अनुप्रयोग को विकसित कर रहा है जो साझेदार संस्थाओं से देश भर के विभिन्न स्थानों से मैटाडाटा का ऑनलाइन तरीके से आगत करने में मदद करेगा और डाटा को लंबे समय तक संरक्षित भी करेगा।

4. राष्ट्रीय के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय अभिकरणों को वृहत–स्तर पर ऑडियोविजुअल डिजिटाईजेशन के कार्य को पूर्ण करने के लिए चिन्हित किया गया था, जिसे 10,000 घंटों के ऑडियों और वीडियो सामग्री को ध्यान में रख कर किया गया था। इस सामग्री का चयन इ.गाँ.रा. क.के., सीसीआरटी एवं आईसीसीआर की संपत्तियों में से नमूना डिजिटाईजेशन हेतु सेवाप्रदाताओं से संपर्क करने के लिए किया गया था, जिसमें परियोजना द्वारा डिजिटाईजेशन एवं मैटाडाटा के मानकों का कड़ाई पालन किया जा रहा है।

5. एनआईसी को संस्कृति मंत्रालय के माध्यम से आवश्यक डिजिटल आर्किवल स्पेस (1–2 पेटाबाईट्स के समकक्ष) प्रदान करने के लिए अनुरोध किया गया है। इस संबंध में आवश्यक जानकारी को पहले ही एनआईसी को अग्रेषित किया जा चुका है।

6. क्षमता निर्माण के लिए साझेदार संस्थाओं के कार्मिकों हेतु एक प्रशिक्षण कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

कलाकोश प्रभाग

कलाकोश प्रभाग केन्द्र के मुख्य अनुसन्धान तथा प्रकाशन स्कन्ध के रूप में कार्य करते हुए कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविध विद्यापरक संदर्भों में अनुसन्धान करता है। यह शास्त्र को संदर्भ के साथ, दृश्य को मौखिक के साथ और सिद्धांत पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक साँस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

कार्यक्रम 'क'
कलातत्त्वकोश

(भारतीय कला की आधारभूत अवधारणाओं का एक शब्दकोश)
कलातत्त्वकोश (केटीके) भारतीय कलाओं की मौलिक अवधारणाओं का विश्वकोश है। इस कार्यक्रम के तहत प्रसिद्ध विद्वानों के साथ गहन विचारविमर्श और चर्चा के बाद 250 अवधारणात्मक शब्दों की सूची तैयार की गई। हर अवधारणा की पड़ताल विभिन्न संकायों के 300 प्राथमिक ग्रंथों के अवगाहन के पश्चात की गई। 1988 से, जब इस सीरीज का पहला खंड प्रकाशित हुआ था, अब तक छः और खंड आ चुके हैं जो व्यापक शब्द, स्थान और काल, आदि तत्त्व, प्रकृति का निरूपरण, स्वरूप/आकार और रूप/प्रतीकात्मक आकार से

संबंधित हैं। इस साल के दौरान केटीके खंड VII तैयार हो चुका था। प्रस्तावना, शब्द सूची, पूरा होने के बाद खंड VII अब प्रेस में जाने के लिए तैयार है।

अधोस्तर / वास–स्थान(सब्सट्रैटम / अबोड): स्थान / आयतन की अवधारणा पर विरचित खंड VII में निम्नलिखित शब्दावली हैं:

1. स्थान / आयतन
2. तीर्थ
3. कुंड
4. स्कम्भ / स्तम्भ
5. कोना / असर / वृत्त
6. सिटी / चैत्य / स्तूप
7. सन्निवेसा / संस्थान

संदर्भ कार्ड

कलाकोश प्रॉजेक्ट के तहत विभिन्न परियोजनाओं के लिए संदर्भ कार्ड तैयार करना पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र (ईआरसी), वाराणसी का मुख्य कार्य है। विभिन्न ग्रंथों से चयनित इस वर्ष 2190 कार्ड (केटीके आगामी संस्करणों की अन्य शब्दावलियों पर 1188 कार्ड सहित केटीके VII भाग– II पर 135 कार्ड, केटीके VIII के लिए 331 कार्ड, केटीके IX के लिए 212 कार्ड, केटीके X के लिए 304 कार्ड) तैयार किए गए। वर्तमान में इ.गाँ.रा.क.के. ईआरसी के पास 69,500 कार्ड है।
विगत वर्ष सभी संदर्भ कार्ड (प्रारंभिक तौर पर 67,000 प्रस्तुत) इ.गाँ.रा.क.के., ईआरसी द्वारा तैयार किए गए थे जिसमें सीआईएल, इ.गाँ.रा.क.के., नई दिल्ली के विशेषज्ञों ने इसे डिजिटाईज्ड किया था। इस इलेक्ट्रॉनिक डाटा को इ.गाँ.रा.क.के. के वेबपेज से जोड़ा गया है और शोधकर्ताओं के उपयोग के लिए इसे प्रदान किया गया है। इस क्रम में 3440 कार्ड सीआईएल को अद्यतन करने हेतु प्रस्तुत किए हैं।

कार्यक्रम 'ख'
कलामूलशास्त्र

(कलाओं पर मौलिक पाठों / मूल ग्रंथों की श्रृंखला)
कलामूलशास्त्र श्रृंखला कलाकोश प्रभाग का दूसरा अविरत कार्यक्रम है। यह एक दीर्घकालीन शोध एवं प्रकाशन कार्यक्रम है। इस महत्त्वाकांक्षी श्रृंखला में स्थापत्य, शिल्प और चित्रकला से लेकर संगीत, नृत्य और रंगमंच जैसी भारतीय कला विधाओं से संबंधित मूल ग्रंथों के आलोचनात्मक संस्करण टिप्पणियों, टीकाओं, सूचियों सहित उपयुक्त अंग्रेजी (कुछ के हिन्दी भी) अनुवाद के साथ प्रकाशित किए गए हैं।?
इ.गाँ.रा.क.के. के लिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य कलाओं और साथ ही विशिष्ट कलाओं से संबंधित मूल ग्रंथों को प्रकाशित करना है।

पांडुलिपियों को अनुक्रमित करने, उनका संपादन करने, एक विश्वसनीय पाठ तैयार करने और उन्हें अंग्रेजी में अनुदित करने के लिए एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम तैयार किया गया है। इसका प्रयास लगभग सहस्राब्दी की अवधि के दौरान भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कलाओं के साहित्यिक परंपरा को प्रकाश में लाने का है। ऐसे किसी भी कार्यक्रम पर इंडोलॉजिस्ट या कला इतिहासकारों द्वारा काम नहीं किया गया है। कलामूलशास्त्र का प्रकाशन भारत के विभिन्न भागों में विशिष्ट कलाओं तथा उनके सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पहलुओं पर सशक्त व्याख्यानों का स्पष्ट निरूपण करता है। इसे ध्यान में रखते हुए इ.गाँ.रा.क.के. ने 74 खंडों में 29 ग्रंथों का प्रकाशन किया है जहां मूल और अनुवाद साथ–साथ दिए गए हैं। यह महती कार्य भारतीय और विदेशी विद्वानों के प्रयासों से संभव हुआ। पूरे साल के दौरान, इ.गाँ.रा.क.के. की प्रकाशन नीति में बदलाव लाया गया और नई नीति बनाई गई। अब निम्नलिखित पुस्तकें प्रकशित की गई।

1. काण्वशतपथ ब्राह्मण (खंड VII)

कलामूल श्रृंखला के अंतर्गत इ.गाँ.रा.क.के. ने कण्वसतपथ ब्राह्मण के महत्वपूर्ण संस्करण के प्रकाशन का कार्य हाथ में लिया जिसमें सभी 17 कांडों का अंग्रेजी में अनुवाद भी शामिल किया गया। इस वर्ष इस प्रकाशन का खंड VII जारी किया गया। इसे डॉ. सी. आर. स्वामीनाथन द्वारा अनुदित और संपादित किया गया है। यह अनुष्ठाणिक परंपराओं के औपचारिक पहलुओं का मूल पाठ है जो कार्यप्रणाली के रुप में विचार तथा 'छवि' के मध्य एक संपर्क स्थापित करता है और यह वास्तव में भारतीय पौराणिक कथाओं और कला का प्रतीक है। शतपथ ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित है और यह दो पाठों में उपलब्ध है जिसे कण्व और माध्यंदिन के नाम से जाना जाता है। माध्यंदिन पाठ का संपादन बेवर द्वारा 1923 में किया गया था और इसका अंग्रेजी अनुवाद एगलिंग द्वारा प्रदान किया गया था।

2. रागविबोध ऑफ सोमनाथ (सोमनाथ का रागविबोध)

रागविबोध 17वीं सदी से संगीत विद्या की एक उत्कृष्ट कृति है। यह प्राचीन सिद्धांत और प्रचलित प्रथाओं के बीच मौजूदा विरोधाभासों को संबोधित करने के लिए इसे सोमनाथ द्वारा रचा गया था; और इस प्रकार यह एक अपरिहार्य ग्रंथ बन गया।

महान गुरुओं जैसे कि नमक्कल सेशा अयंगार, संगीता

कलानिधि थिरुप्पमबुरम स्वामीनाथ पिल्लई और संगीता कलानिधि मुडिकोन्डन वेंकटाराम अईय्यर की शिष्या डॉ. रंगानायकी अयंगार ने इसका संपादन और अनुवाद किया है और डॉ. सुधीर कुमार लाल इन पाठों के प्रबंध संपादक हैं।

3. **रागलक्षणम् ऑफ मुद्दुवेंकटामखिन**

रागलक्षणम, चतुर्दंडीप्रकाशिका की एक कड़ी है। पहला कर्नाटक संगीत का पारिभाषिक पाठ है और दूसरा इसका भेद्य, बोधगम्य और व्यापक टीका है; दोनों को ही केएमएस श्रृंखला में प्रकाशित किया गया है। इस संस्करण का एक विशेष फीचर उपलब्ध रचना सामग्री को सभी किस्मों में समाहित करना है और वर्ष 1650 ईसवी से 1950 ईसवी तक के; वह भी केवल निरुपण के तौर पर।

प्रो. आर. सत्यनारायणन, जो कि समकालीन विख्यात बहुश्रुत और भारतीय संगीत विद्या के प्राधिकारी है, ने इसे आलोचनात्मक तौर पर संपादित और अनुदित किया है और इसमें टिप्पणियों के साथ–साथ विस्तृत परिचय भी प्रदान किया है। यह पुस्तकें प्रगति मैदान, नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेले के दौरान 19 फरवरी, 2015 को जारी की गई।

कार्यक्रम 'ग'
कलासमालोचना श्रृंखला

(महत्वपूर्ण स्कॉलरशिप और शोध प्रकाशनों की श्रृंखला)

इस श्रृंखला (सीरीज) के तहत कला एवं सौंदर्यशास्त्र के विविध पक्षों पर महत्वपूर्ण लेखनों का प्रकाशन शामिल है। श्रृंखला का एक भाग प्रसिद्ध विद्वानों के कार्यों पर केन्द्रित है जिन्होंने मौलिक अवधारणाओं पर काम किया, शाश्वत स्रोतों की पहचान की और विविध परंपराओं को एक दूसरे के बरअक्स रखकर संवाद की कड़ी तैयार की। पहचान की शर्त उनके अंतर–सांस्कृतिक अवधारणा, बहु–विषयक दृष्टिकोण और भाषा की जानकारी न होने या प्रिंट उपलब्ध नहीं होने के मद्देनजर बहुत ही महत्वपूर्ण काम है। ये श्रृंखलाएं कुछ लेखकों और उनकी कृतिओं के दुहरावों और अवधारणात्मक रूप से पुनर्व्यवस्थित संस्करणों और अनुवादों से संबंधित है। इस कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण भाग है डॉ. आनंद के. कुमारस्वामी की संकलित कृतियों के, लेखक की विश्वसनीय समीक्षा के साथ, पुनर्मुद्रण प्रकाशित करना इस कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। अब तक इसके तहत 17 खंड प्रकाशित किए जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त इस श्रृंखला में 30 अन्य कृतियों का प्रकाशन हो चुका है।

इस वर्ष निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गईः

1. **थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ टेम्पल आर्किटेक्चर इन मिडिवल इंडियाः दी समरंग– ए सूत्रधार एंड दी भोजपुर लाइन ड्राइंग्स** जिसे श्री एडम हार्डी द्वारा 20 फरवरी, 2015 को विमोचित किया गया। इस पुस्तक से चित्रों और रेखाचित्रों की एक प्रदर्शनी तथा एक संगोष्ठी का आयोजन भी इस अवसर पर किया गया था।

प्रो. एडम हार्डी द्वारा रचित 'थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ टेम्पल आर्किटेक्चर इन मिडिवल इंडियाः दी समरंगसूत्रधार एंड दी भोजपुर लाइन ड्राइंग्स' पर पुस्तक का विमोचन।

'दी सिल्क रोडः ट्रेड, कारवां सेरेस, कल्चरल एक्सचेंजेस एंड पावर गेम्स' पर पुस्तक का विमोचन

2. **'दी सिल्क रोडः** ट्रेड, कारवां सेरेस, कल्चरल एक्सचेंजेस एंड पावर गेम्स' और प्रो मंसूरा हैदर द्वारा संपादित पावर खेल 2014 के एक पैनल चर्चा भी विषय पर आयोजित किया गया था, 9 दिसंबर को जारी किया गया – 'सिल्क रोड एक अपेक्षित क्वेस्ट'।

3. **आर्ट एस्थेटिक्स एंड फिलॉसफीः रेफ्लेक्शन्स ऑन कुमारस्वामी** श्री एस. जी. कुलकर्णी और सुश्री कविता चौहान द्वारा संपादित प्रगति मैदान, नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेले के दौरान 19 फरवरी, 2015 को जारी की गई।

निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशन के उन्नत चरण के अंतर्गत हैं:

1. संगीत साहित्य दर्शनः ठाकुर जयदेव सिंह के एकत्र निबंध
2. नुमिस्मैटिक आर्ट ऑफ इंडिया खंड III एवं IV
3. लोकप्रकाश ऑफ क्षेमेन्द्र
4. एशियन एस्थेटिक थेओरिएस एंड आर्ट फॉर्म्स (संगोष्ठी कार्यवाही)
5. सतपत्रः इ.गाँ.रा.क.के. प्रकाशनों से चयनित लेखन
6. रासा देसा

क्षेत्र अध्ययन

इ.गाँ.रा.क.के. ने भारत और पूर्व, दक्षिण पूर्व एशिया पर विशेष ध्यान दिया। भारत और क्षेत्र के अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक विनिमय और पारस्परिक प्रभाव के अध्ययन पर इसने दशकों तक कई सारे कार्यक्रम चलाए।

सम्मेलनः

- 'विएतनाम की चाम कला विरासतः पर्यावरण, संस्कृति और कला ऐतिहासिक परंपरा' पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 25–26 अप्रैल, 2015 को प्राचीन विएतनाम साम्राज्य के साथ भारत के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और कलात्मक संबंधों को समझने के उद्देश्य से किया गया था।

'विएतनाम की चाम कला विरासतः पर्यावरण, संस्कृति और कला ऐतिहासिक परंपरा' पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

- हंगरी के विख्यात शोधकर्ता और 'तिबेतोलॉजी के पितामह एलेक्जैंडर क्सोमा डी कोरोस (1784–1842) की 170 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर स्मृति में 7वीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी' का आयोजन 4–5 सितंबर, 2014 को इ.गाँ.रा.क.के. में किया गया। इस संगोष्ठी को संयुक्त तौर पर इ.गाँ.रा.क.के. और हंगरी के सूचना तथा संस्कृति केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा आयोजित किया गया था।

क्सोमा को वर्तमान सभी तिब्बती तांत्रिक साहित्य के अनुवाद का पिता माना जाता है और उन्हें तिब्बती शब्दकोश व व्याकरण के प्रथम शोधकर्ता के रुप में भी अधिक स्मरण किया जाता है। इस संगोष्ठी में तिब्बती और बौद्ध अध्ययनों पर नए शोध और हालिया विकास पर प्रकाश डाला गया। इस संगोष्ठी के कार्यवृत्त को जल्द ही प्रकाशित किया जाएगा। हंगरी के जीवन और संस्कृति पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था।

'तिब्बती साहित्य एवं कला में बौद्ध ट्रांसक्रिएशन' (पुनः सृष्टि)

- इ.गाँ.रा.क.के. ने 'दक्षिण और मध्य एशियाई विरासतों पर विशेष संदर्भ के साथ एमएआरसी आउरेल स्टेइनः हाल के खोज और अनुसंधान' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन की मेजबानी 24 – 26 मार्च, 2015 को की। इस अधिवेशन ने आउरेल स्टेइन के जीवन और विरासत पर प्रकाश डाला जो, झुआंगजैंग यात्री और शोधकर्ता की तरह ही दुर्गम रास्तों द्वारा तकलामकन रेगिस्तान में घूमते रहे और इस महान सभ्यता की खोज की जो सदियों से रेत में छुपी हुई थी।

. हंगरी में जन्मे स्टेइन अंततः ब्रितानी विषय व्यक्ति बन गए और अपना ज्यादातर जीवन ब्रिटिश भारत में व्यतीत किया। दक्षिण एशिया पर अध्ययन में उनका योगदान प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, दोनों प्रकार का रहा। शाब्दिक अभिवृत्ति, पुरातत्व विज्ञान अथवा उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी परिधि की स्थलाकृति के क्षेत्र में उनके कार्य को कश्मीर के विद्वानों हेतु एक प्रमुख स्रोत सामग्री

के रुप में माना जाता है। विश्व भर के शोधकर्ताओं ने अपने शोधपत्रों को प्रस्तुत किया और आउरेल स्टेइन के योगदान को दोहराया तथा शोध के नए क्षेत्रों का सूत्रपात भी किया। इस संगोष्ठी के कार्यवृत्त को जल्द ही प्रकाशित किया जाएगा।

- **फैसिनेटेड बाई दी ओरिएन्ट** – लाइफ एंड वर्क्स ऑफ सर आउरेल स्टेइन विषय पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन इस समारोह के दौरान किया गया था। प्रदर्शनी में सर आउरेल स्टेइन के वृहद विरासत में से लिए गए एलएचएएस ओरिएन्टल संकलनो, बुडापेस्ट को 24 मार्च – 17 अप्रैल, 2015 के दौरान प्रदर्शित किया गया था। वर्ष 1900 और 1916 के बीच आउरेल स्टेइन ने तरिम बेसिन में रेत में दफन हुए खंडहरों की खुदाई के लगातार तीन अभियानों का नेतृत्व किया, और अब तक अज्ञात भाषाओं और लेखन की खोज की, और वहां रहने वालों के इतिहास तथा संस्कृति पर नया प्रकाश डाला।

'फैसिनेटेड बाई दी ओरिएन्ट – लाइफ एंड वर्क्स ऑफ सर आउरेल स्टेइन' प्रदर्शनी का आयोजन

- 'भारत और इसके पड़ौसी देशों में कला और संस्कृति में जगन्नाथ चैतन्य' विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा राष्ट्रीय संस्कृति संस्थान (एक समतुल्य विश्वविद्यालय), नई दिल्ली के संयुक्त उपक्रम में उनके श्री शिवा परिसर, पुरी, ओडिशा में 28 और 29 मार्च, 2015 को किया गया। पांच विभिन्न शैक्षिक सत्रों में 43 शोधपत्रों को शोधकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत किया गया।

- **व्याख्यान**

  सुश्री सुनीता द्विवेदी, प्रसिद्ध विद्वान, ने 8 जनवरी, 2015 को 'पाकिस्तान में बुद्ध के प्रभाव' पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। व्याख्यान डॉ. आर. सी. अग्रवाल, पूर्व संयुक्त महानिदेशक, भारत सरकार, नई दिल्ली पुरातत्व सर्वेक्षण की अध्यक्षता में किया गया था।

- **बौद्ध अध्ययनों पर व्याख्यानमाला**

  इ.गाँ.रा.क.के. के शैक्षिक पहुंच में वृद्धि लाने की दृष्टि से 12–व्याख्यानमाला श्रृंखलाओं का आयोजन बौद्ध अध्ययनों पर इस वर्ष इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा किया गया, जो कि भाविष्य में विभिन्न विषयों पर भी इसी तरह के श्रृंखला के लिए एक प्रायोगिक परियोजना के तौर पर थी। यह प्रयास सफल रहा और इसे विद्यार्थियों और कला प्रेमियों तथा जनसामान्य से काफी अच्छा प्रतिसाद प्राप्त हुआ। व्याख्यानमाला की पूरी सूची इ.गाँ.रा.क.के. के बेवसाइट पर उपलब्ध है।

- **फिल्म स्क्रीनिंग:**

  इंडोनेशिया गणराज्य के नई दिल्ली स्थित दूतावास के सहयोग से दो इंडोनेशियाई फिल्मों 'हब्बिबी एंड एइनुन' तथा 'द बॉर्डर बीटवीन डिसायर एंड रियालिटी' का प्रदर्शन 13 –14 अगस्त, 2014 को किया गया।

- **पुस्तक का विमोचन**

  इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा 15 सितंबर, 2015 को दूतावास के परिसर में इंडोनेशिया के राष्ट्रीय गणतन्त्र दिवस के अवसर पर हुए एक समारोह में डॉ. बच्चन कुमार द्वारा लिखित दी आर्ट ऑफ इंडोनेशिया (इंडोनेशिया की कला) नामक पुस्तक का प्रकाशन किया गया था। इंडोनेशिया गणतन्त्र के राजदूत महामहिम श्री रिजाली डब्ल्यू. इन्द्रकेसुमा और सुश्री दीपाली खन्ना, सदस्य सचिव, इ.गाँ.रा.क.के. ने पुस्तक का विमोचन किया।

सेकोलाह टिंग्गी अगम हिन्दू नेगेरी, जीडीई पुडजा, मातारम, इंडोनेशिया के कलाकारों का एक समूह

10. नृत्य प्रदर्शन

15 अक्तूबर, 2014 को सेकोलाह टिंग्गी अगम हिन्दू नेगेरी (एसटीएएचएन), जीदीई पुडजा, मतारम, इंडोनेशिया के

कलाकारों के एक समूह ने इ.गाँ.रा.क.के. का दौरा किया और भारतीय महाकाव्य, रामायण और महाभारत पर नृत्य प्रस्तुत किया।

शोध पत्र

डॉ. बच्चन कुमार द्वारा 'भारतीय और दक्षिण पूर्व एशियाई कला में शिव की तीसरी आंख' पर शोध पत्र दी साउथ ईस्ट एशियन रिवीयू, वॉल्यूम XXXVII, संख्या 1–2 (जनवरी–दिसंबर 2012), पृष्ठ 60–68 में प्रकाशित हुआ था।

अंतर्राष्ट्रीय सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गएः

दिसंबर 2014 में इ.गाँ.रा.क.के. और सेकोलाह टिंग्गी अगम हिन्दू नेगेरी (एसटीएएचएन), जीदीई पुडजा, मतारम, इंडोनेशिया के बीच तीन वर्ष की अवधि के लिए सहयोग के एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। दोनों संस्थानों द्वारा संयुक्त अकादमिक कार्यक्रम शुरू किए जाएंगे।

कलाकोश की अनुसंधान परियोजनाएं

महिला संतों के गीत

सभी प्रदेय सामग्री के प्रस्तुतीकरण के साथ डॉ. सुभद्रा देसाई द्वारा 'महिला संतों के गीत' संबंधी परियोजना पूर्ण की गयी है। इस परियोजना के प्रकाशन प्रक्रियाधीन हैं।

हवेली संगीत

इ.गाँ.रा.क.के. ने दिसंबर 2014 में नादसागर के सहयोग से 'हवेली संगीत' अनुसंधान और प्रलेखन परियोजना शुरू की है। परियोजना के अंतिम प्रदेय पर प्रस्तुत एक फिल्म की विशेषज्ञों द्वारा समीक्षा की गयी और उसे मंजूरी दी गयी।

पोस्ट डॉक्टोरल छात्रवृत्ति

1 अप्रैल, 2014 से शुरू करके चार वर्ष की अवधि के लिए प्रोफेसर पारूल दवे मुखर्जी, कला और सौंदर्य, जेएनयू के पर्यवेक्षण के अधीन 'अभिनव गुप्ता के सौंदर्य की वंशावली का पता लगाना' शीर्षक पर कार्य के लिए डॉ. मयंक शेखर को पोस्ट डॉक्टोरल छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया था।

इस वर्ष प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रमः

संगोष्ठियां / कार्यक्रम

1. **शास्त्र–उत्सव कार्यक्रम**

   21–22, नवंबर 2104 को इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा एक दो दिवसीय कार्यक्रम, शास्त्र–उत्सव आयोजित किया गया था। केएमएस श्रृंखला के अंतर्गत इस वर्ष इस कार्यक्रम के लिए इ.गाँ.रा.क.के. के प्रकाशन 'पण्डरीक विट्ठल की नर्तन निर्णय' को विश्लेषण और प्रस्तुति के लिए चुना गया था।

'शास्त्र उत्सव 2014' में संगीत–समारोह

2. **शाब्दिक परंपराओं में निहित भारतीय कला पर राष्ट्रीय संगोष्ठीः गुजरात के विशेष संदर्भ में**

   कलाकोश द्वारा ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा के सहयोग से 29 से 30 दिसंबर, 2014 तक 'शाब्दिक परंपराओं में निहित भारतीय कला पर राष्ट्रीय संगोष्ठीः गुजरात के विशेष संदर्भ में' पर एक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, एम.एस.विश्वविद्यालय, वडोदरा में आयोजित किया गया था।

'शाब्दिक परंपराओं में निहित भारतीय कलाः गुजरात के विशेष संदर्भ में' संगोष्ठी का एम.एस. विश्वविद्यालय, वडोदरा में उद्घाटन

वर्ष 2014 में कलाकोश प्रभाग द्वारा संगोष्ठियों की एक श्रृंखला की शुरुआत की गयी थी, जिसमें एक विशिष्ट क्षेत्र के विषय से संबंधित विशेषज्ञों को भारतीय कला के इस तरह के ग्रंथों पर शोध प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने किसी विशिष्ट कला शैली के

संरक्षण और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। उक्त संगोष्ठियों से इ.गाँ.रा.क.के. को विभिन्न विषयों के नए और युवा छात्रों को पहचानने में सहायता मिलती है और समान उद्देश्य वाले संगठनों/विश्वविद्यालयों के साथ संपर्क भी स्थापित किया जाता है। गुजरात में आयोजित संगोष्ठी में परंपरागत कला शैली के साथ–साथ गुजरात की शाब्दिक संपत्ति के विभिन्न पहलुओं को भी समझा जा सका, जो भारतीय कलात्मक विरासत का एक अभिन्न अंग हैं।

3. अगम के शास्त्रिक और प्रायोगिक तत्वों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

श्री शंकराचार्य ऑडीटोरियम, एससीएसवीएमवी, कांचीपुरम में 7–8 जनवरी, 2015 को इ.गाँ.रा.क.के. और श्री चंद्रशेखरेन्द्र सरस्वती विस्वा महाविद्यालय (एससीएसवीएमवी) द्वारा संयुक्त रूप से अगम के शास्त्रिक और प्रायोगिक तत्वों पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी का उद्देश्य अगम के शाब्दिक सिद्धांतों का उद्भव और मौजूदा वास्तविक प्रथाओं के बीच संबंधों पर चर्चा करना था।

इस अवधारणा के साथ, हमारे आगमों में प्रतिस्थापित सांस्कृतिक और कलात्मक नियमों, सम्मेलनों, प्रथाओं और परंपराओं को समझने के लिए आग्मिक ग्रंथों से संबंधित मुद्दों पर भी सम्मेलन के दौरान चर्चा हुई थी।

'अगम के शास्त्रिक तथा प्रायोगिक तत्वों' के संबंध में कांचीपुरम, तमिलनाडु में राष्ट्रीय संगोष्ठी समारोह।

4. नाट्यशास्त्र और सिलप्पदिकारकाम पर संगोष्ठी

भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली में 3 नवम्बर, 2014 को 'नाट्यशास्त्र और सिलप्पादिकारकाम' पर एक सहयोगपूर्ण संगोष्ठी आयोजित की गई।

5. दक्षिण भारत के विशेष संदर्भ के साथ वेदों की मौखिक एवं लिपिबद्ध परंपरा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

वैदिक हेरीटेज पोर्टल के तत्वाधान में 14–16 नवंबर, 2014 तक कड़ावल्लूर में श्री रामास्वामी मंदिर के प्रांगण में इ.गाँ.रा.क.के. और कड्डावल्लूर अन्योन्य परिषद, केरल द्वारा दक्षिण भारत के विशेष संदर्भ के साथ वेदों की मौखिक एवं लिपिबद्ध परंपरा पर एक तीन दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। संगोष्ठी अन्योन्यम, एक परंपरागत वैदिक शिक्षा विज्ञान संबंधी और धार्मिक प्रतिस्पर्धा, पंद्रह दिन तक चलने वाली धार्मिक क्रिया का अकादमिक अग्रदूत है, जो केरल की एक अनोखी प्रतिस्पर्धा है और जो इस मंदिर के अंदर प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाती है।

उद्घाटनः समारोह

संगोष्ठी में इ.गाँ.रा.क.के. की अकादमिक संकाय के सदस्यों द्वारा किए गए तीन प्रस्तुतीकरण के साथ–साथ विद्यार्थियों और युवा शोधकर्ताओं द्वारा चौदह शोध पत्र प्रस्तुत किए गए थे। संगोष्ठी दक्षिण भारत में 'वेदों की मौखिक एवं लिपिबद्ध परंपरा' पर केन्द्रित थी।

6. गुरुपूर्णिमा (वार्षिक दिवस)

कलाकोश प्रभाग द्वारा इ.गाँ.रा.क.के. के सभाग्रह में शुक्रवार 11 जुलाई, 2014 को गुरुपूर्णिमा के अवसर पर अपना स्थापना दिवस मनाया। इन्डोनेशिया के राजदूत महामहिम श्री रिजाली डब्ल्यू. इन्द्रकेसुमा मुख्य अतिथि थे। इन्डोनेशिया के कलाकारों द्वारा 'सीता हरण' नृत्य प्रस्तुत किया गया था।

जनपद संपदा प्रभाग

जनपद संपदा प्रभाग के जिम्मे संस्कृति के प्रासंगिक पक्षों पर शोध और डॉक्युमेंटेशन का जिम्मा है, जिसमें शामिल हैं पर्यावरण, सांस्कृतिक और सामाजिक–आर्थिक नजरिए से समुदायों की जीवनशैली, परंपराएं, दंतकथाएं और प्रचलित कला रूप। मौखिक परंपराओं पर संकेद्रित इस उपक्रम में विभिन्न सांस्कृतिक समूहों और समुदायों के बीच अंतर्संबंध पर बल देने वाले बहु–विषयक दृष्टिकोण से क्षेत्रीय अध्ययनों के व्यापक स्वरूप शामिल हैं। इस प्रभाग की गतिविधियां निम्नलिखित के तहत आती हैं:

(क) नृजाति–विज्ञान संबंधी संकलन (ख) जीवनशैली अध्ययन, जिसमें दो कार्यक्रम हैं (i) लोक परंपरा और (ii) क्षेत्र संपदा। (ग) मल्टीमीडिया प्रेजेंटेशन, प्रकाशन और कार्यक्रम।

कार्यक्रम 'क'

नृजाति–विज्ञान संबंधी संकलन

मुख्य संग्रह, जिसमें शामिल हैं मूल, प्रतिलिपि और रिप्रोग्राफिक स्वरूप– शोध, विश्लेषण और प्रसार के लिए मूल संसाधन सामग्री के रूप ग्रहण किए गए।

दृश्य संग्रह

प्रभाग में दृश्य संग्रह की व्यवस्था विकसित की गई है।

दस्तावेजीकरण

- उत्तर पूर्व से 1118 नृजाति–विज्ञान वस्तुओं का प्रलेखन कर दिया गया है और डाटाबेस ऑनलाइन उपलब्ध है।
- टोकरी–निर्माण कला पर कैटलॉग प्रकाशन के लिए तैयार है।
- पारंपरिक वस्त्रों पर कैटलॉग की पांडुलिपि प्रकाशन के लिए तैयार है।
- नागा कला का मास्टर पीस '(मिलादा गांगुली संग्रह)' तैयारी के अंतर्गत है।

शोध

प्रभाग ने फोकलोर सोसाइटी ऑफ साउथ इंडिया (फॉसिल्स) के साथ सहभागिता में प्रो. एन. भक्तवत्सल रेड्डी का स्ट्डी एंड डॉक्युमेंटेशन ऑफ पत्तम कथा (स्क्रॉल नैरेशन) ट्रैडीशन ऑफ आंध्र प्रदेश पर शोध का संचालन कर रहा है। यह परियोजना आंध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र में पत्तम कथा परंपरा में कुल पुराणों और महाभारत के आख्यानों का प्रलेखन करता है। परियोजना का उद्देश्य है संबंधित क्षेत्रों में गहन क्षेत्र कार्य करना और पत्तम कथा परंपरा के पाठ, संदर्भ और संक्रियाओं का प्रलेखन करना। यह परियोजना आंध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र में पत्तम कथा परंपरा में कुल पुराणों और महाभारत के आख्यानों का प्रलेखन करता है। परियोजना का उद्देश्य है संबंधित क्षेत्रों में गहन क्षेत्र कार्य करना और पत्तम कथा परंपरा के पाठ, संदर्भ और संक्रियाओं का प्रलेखन करना। विद्यार्थियों ने अंतिम रिपोर्ट तेलगु में प्रस्तुत की और रिपोर्ट को अंग्रेजी में अनुवाद करने का कार्य चल रहा है।

प्रदर्शिनियां

- 'फुलकारी वस्त्र' और 'गोंड चित्रकारी' पर प्रदर्शनीः अंतर्राष्ट्रीय लोक उत्सव के एक हिस्से के रूप में (अगस्त 8–10, 2014), टाइम्स ऑफ इंडिया समूह और इ.गाँ.रा.क.के. दक्षिणी क्षेत्र केन्द्र (एसआरसी) बंगलुरु द्वारा संयुक्त रूप से फुलकारी वस्त्र और गोंड चित्रकारी पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। जनपद सम्पदा संग्रह की सामग्री का प्रदर्शनी में प्रदर्शन किया गया।
- 'आख्यानः भारतीय कथनात्मक परम्पराओं में मुखोटे, कठपुतलियां और चित्र शौमेनः' मेड्रिड और तोलोसा, स्पेन में इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा उपरोक्त विषय पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। मेड्रिड में यह 17 सितंबर–12 अक्तूबर, 2014 तक सेंटरो ड्रेमेटिको नेसिओनल (सीडीएन) में आयोजित की गयी थी और तोलोसा में तोलोसा पपेट्स इंटेरनेशनल सेंटर (टोपिक) में और सेंटरो डी इनिसिएटिवस डी तोलोसा में प्रदर्शनी लगाई गयी थी, जहां पर यह 18 अक्तूबर, 2014–मार्च 2015 तक प्रदर्शित की गयी थी। प्रदर्शनी की एक सूची चार भाषाओं (अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच और बास्क) में तैयार की गयी थी।
- 'पृथ्वी से पृथ्वी तकः तमिलनाडु में भक्ति और टेरेकोटा प्रसाद, अय्यानर संप्रदाय की टेरेकोटा मूर्तियों' पर जूलि वायने के फोटो संग्रह पर 20 फरवरी–6 मार्च, 2015 तक इ.गाँ.रा.क.के. के प्रदर्शनी हॉल में आयोजित की गयी थी। इसके बाद प्रदर्शनी का आयोजन संस्कृति केन्द्र, आनंदग्राम, नई दिल्ली में किया गया, जहां पर इसका 10–25 मार्च, 2015 तक आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रदर्शनी की एक सूची भी तैयार की गयी थी।

'पृथ्वी से पृथ्वी तकः तमिलनाडु में भक्ति और टेरेकोटा प्रसाद, अय्यानर संप्रदाय की टेरेकोटा मूर्तियों' डिवोशन एंड टेरेकोटा ऑफ्फरिंग्स इन तमिलनाडु' पर कैटलॉग का विमोचन।

तमिलनाडु के कारीगरों ने टेरेकोटा के घोड़ों को बनाने में शामिल प्रक्रिया का जीवंत प्रदर्शन किया।

- कांथा, कपड़े पर काव्यात्मक कसीदाकारी (कांथाः पोएट्री एम्ब्रॉइर्डेड ऑन क्लॉथ): इस प्रदर्शनी में जनपद संपदा अभिलेखागार से कांथा संग्रह का प्रदर्शन किया गया। इसका आयोजन 10–30 दिसंबर, 2014 तक ट्विन आर्ट गैलरी, सी. वी. मैस, जनपथ मे किया गया था।

'कांथा' प्रदर्शनी पर कैटलॉग का विमोचन।

पश्चिम बंगाल के कांथा कारीगरों द्वारा प्रदर्शित शिल्प भी प्रदर्शनी का एक हिस्सा था।

- गोंड रामायणी, रामायण के गोंड संस्करण को दर्शाने वाली चित्रकारी की एक प्रदर्शनी 29 जनवरी–28 फरवरी, 2015 तक आसाम स्टेट म्यूजियम गुवाहाटी में आयोजित की गयी थी, जो भारतीय संग्रहालय संघ के वार्षिक सम्मेलन के साथ–साथ संग्रहालय की प्लेटिनम जयंती का एक हिस्सा था।

कार्यक्रम 'ख'
आदि दृश्य
प्रस्तर कला इकाई

प्रस्तर कला रूप आदि दृश्य कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण घटक है। पुरातत्वविज्ञान, भूगर्भविज्ञान, कला इतिहास आदि जैसे परस्पर संबद्ध विषयों में अंतर्विषयक शोध के नए प्रकार पर ध्यान देते हुए मौजूदा परियोजना को विशिष्ट माना गया, जिससे प्रस्तर कला के नए क्षितिजों का द्वारा खुल सकता है। शोध और क्षेत्र प्रलेखन कार्य संपूर्ण भारत के विभिन्न संस्थानों/विश्वविद्यालयों के अंतर्विषयी विशेषज्ञों के साथ मिलकर किया जा रहा है। परियोजना का उद्देश्य हैः (i) साहित्यिक, प्रासंगिक वीडियो और फोटो प्रलेखन (ii) संबंधित दंतकथाओं और प्राकृतिक एवं मानवनिर्मित विशेषताओं के प्रलेखन (डॉक्युमेंटेशन) के आधार पर पुरातात्विक शोध के लिए पृष्ठ–प्रदेश के लोगों के साथ संवाद स्थापित करना और एक द्विसांस्कृतिक मानचित्र, प्रस्तर कला परिदृश्य का एक मानसिक और पारिस्थितिकीय एटलस तैयार करना (iii) स्थानीय सामग्रियों और तकनीकों की मदद से संरचनात्मक, पारिस्थिकीय और विरल मामलों में प्रत्यक्ष संरक्षण के लिए परामर्श देना (iv) एक वीडियो और फोटो आर्काइव विकसित करना (v) क्षेत्र में किए वीडियो डॉक्युमेंटेशन के आधार पर डॉक्युमेंटरी तैयार करना (vi) प्रदर्शनियों (स्थाई, चलंत, अस्थायी) का आयोजन करना (vii) प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रकाशन। संक्षेप में, निर्धारित लक्ष्य केवल डेटाबेस और मल्टीमीडिया गैलरी के विकास का नहीं है बल्कि आदि दृश्य को प्रागैतिहासिक कला को समझने के वैकल्पिक माध्यमों पर विचार और शोध की एक शैली के रूप में स्थापित करना। इस वर्ष निम्नलिखित गतिविधियां आंकड़ों के समेकन के लिए की गईः

क्षेत्र कार्य/डॉक्युमेंटेशन (प्रलेखन)

- आसाम में प्रस्तर कला और इसके संबद्ध विषयों के क्षेत्रीय प्रलेखन के पहले चरण (3–11 अप्रैल, 2014) और दूसरा चरण (23–30 मार्च, 2014) का आयोजन मानव जाति विज्ञान विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी के सहयोग से किया गया था।

- उत्तर प्रदेश के रॉबर्टगंज और सोनभद्रा जिलों में पायलट क्षेत्र अध्ययन (13–15 मार्च, 2015) आयोजित किया गया।

- उत्तर प्रदेश के रॉबर्टगंज और सोनभद्रा जिलों में रॉक (प्रस्तर) कला के पहले चरण के क्षेत्र प्रलेखन 12–21 अप्रैल, 2015 से आयोजित किया गया।

- केरल के क्षेत्रीय प्रलेखन का परिप्रेक्ष्य कार्य पूर्ण हो चुका है और इसे जून, 2015 में आयोजित करने का प्रस्ताव है।

फील्ड डेटा (क्षेत्र आंकड़ों) का समेकन

- आंध्र प्रदेश (चरण–I और II), राजस्थान (चरण I और II) का मैनुअल और डिजिटल अभिवृद्धि।

- ओडिशा, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, लद्दाख, झारखंड, छत्तीसगढ़, कर्नाटक का मेटाडाटा, तैयार किया गया।

- वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट म्यूजियम, यिनचुवान, चीन में भारतीय रॉक आर्ट (प्रस्तर कला) प्रदर्शनी के आंकड़ों के साथ वेबसाइट को अपडेट किया गया; सेंटर ऑफ हेरीटेज स्टडी (सीएचएस), केरल में विश्व प्रस्तर कला; आसाम में पहला चरण क्षेत्रीय प्रलेखन; यूनियन क्रिश्चन कॉलेज, केरल और बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पेलियोबोटनी (बीएसआईपी) में अभिमुखीकरण कार्यशाला और उत्तर प्रदेश में क्षेत्रीय प्रारंभिक मार्गदर्शक अध्ययन/कार्यशाला।

प्रकाशन

'भारतीय रॉक कला के लिए उपयुक्त डेटिंग तकनीक' (सुटेबल डेटिंग टेक्नीक फॉर इंडियन रॉक आर्ट) पर कार्यशाला की कार्यवाही

- ओडिशा के रॉक कलाः एक नया संश्लेषण (प्रारंभिक मसौदा प्राप्त)।

आउटरीच कार्यक्रमः

- रॉक कला पर मोबाइल प्रदर्शनीः सेंटर फॉर हेरिटेज स्ट्डीज (सीएचएस) तिरपुनिथारा, केरल (28 नवंबर–28 दिसंबर, 2014) में आयोजित; तंजावुर, तमिलनाडु में प्रदर्शनी के लिए पृष्ठभूमि का कार्य समाप्त हो गया है और प्रदर्शनी 6 मई –5 जून, 2015 को आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

- चार विशेष व्याख्यान भारतीय प्रतिनिधिमंडल द्वारा दिए गएः प्रो. वी. एच. सोनावाने द्वारा 'भारत में रॉक कला अनुसंधान के विकास', डॉ. सदाशिव प्रधान द्वारा 'रॉक कला व्याख्याः एक जातीय–पुरातात्विक परिप्रेक्ष्य' और 'रॉक कला में प्रतीकः ओडिशा, भारत में रॉक कला प्रतीकों में से एक मामले का अध्ययन', डॉ बी.एल. मल्ला द्वारा 'भारतीय रॉक कला', और अगस्त 2014 में यिनचुआन, चीन में डॉ. आर. सी अग्रवाल द्वारा 'रॉक कला स्थलों के संरक्षण और परिरक्षणः कुछ मुद्दे'; दो विशेष व्याख्यान यथा, यूनियन क्रिश्चियन कॉलेज, अलुवा, केरल में डॉ. एम. जी. एस. नारायाणन द्वारा दिया गया 'केरल की रॉक कला' और क्रमशः (28–29 नवंबर, 2014) को सेंटर फॉर हेरिटेज स्ट्डीज (सीएचएस) तिरपुनिथारा, केरल में प्रो. के. कृष्णन द्वारा अनुभवी एवं चिंतन मनः एक यात्रा रॉक कला के माध्यम से'। दूसरा विशेष व्याख्यान 7 मई, 2015 को तमिल विश्वविद्यालय, तंजावुर में 'तमिलनाडु की रॉक कला' पर प्रो. के राजन द्वारा दिए जाने की योजना बनाई जा रही है।

तंजावुर, तमिलनाडु में 'रॉक कला' प्रदर्शनी का दौरा

कार्यशालाएंः

1. विश्वनाथ घाट, असम में (6 अप्रैल 2014) को एक जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

2. यूनियन क्रिश्चियन कॉलेज (यूसीसी), अलुवा, केरल (27 नवंबर, 2014) में केरल रॉक आर्ट परियोजना के अंतर–अनुशासनात्मक दल के सदस्यों के लिए ओरिएंटेशन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

यूनियन क्रिश्चियन कॉलेज, तिरपुनिथारा, अलुवा, केरल में ओरिएंटेशन कार्यशाला

3. सीएचएस, केरल में बच्चों की कार्यशालाएं (28 – 29 नवम्बर, 2014) आयोजित की गई।

4. बीरबल साहनी पुरावनस्पति अनुसंधान संस्थान (बीएसआईपी) लखनऊ, उत्तर प्रदेश (11 दिसम्बर, 2014) में रॉक आर्ट परियोजना के अंतर–अनुशासनात्मक दल के सदस्यों के लिए ओरिएंटेशन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

5. दिनांक 14 मार्च, 2015 को देवगढ़ में एक कार्यशाला आयोजित की गई। दिनांक 7 मई, 2015 को तंजावुर, तमिलनाडु में स्कूल के बच्चों के लिए भी एक और कार्यशाला की योजना बनाई गई थी।

अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी / सहयोगः–

(i) भारतीय रॉक कला पर एक प्रदर्शनी का आयोजन दी वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट म्यूजियम, यिनचुआन, चीन (26 अगस्त, 2014 – 30 सितंबर 2015) में इ.गाँ.रा.क.के.

द्वारा किया गया। (ii) इ.गाँ.रा.क.के. प्रतिनिधिमंडल के चार सदस्यों ने यिनचुआन के प्रांतीय मुख्यालय (26–28 अगस्त, 2014) में '2014 चीनी हेलनशान अंतर्राष्ट्रीय रॉक कला शिखर सम्मेलन के मंच' में भाग लिया।

दी वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट म्यूजियम, यिनचुआन, चीन में 'भारतीय रॉक कला' पर एक प्रदर्शनी का आयोजन

कार्यक्रम 'ग'
जीवनशैली अध्ययन

यह कार्यक्रम विभिन्न समुदायों की मौखिक परंपराओं पर केन्द्रित है। यहां कलात्मक अभिव्यक्तियों को विशिष्ट जीवनशैली और जीवन–कर्म में निहित देखा जाता है। इस कार्यक्रम के तहत दो मुख्य क्षेत्र हैं लोकपरंपरा और क्षेत्र–संपदा।

लोकपरंपरा

लोकपरंपरा कार्यक्रम के तहत सांस्कृतिक समुदायों के भौतिक और पारिस्थितिकीय अधिवास, सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं तथा सौंदर्यशास्त्रीय एवं रचनात्मक जीवन संसार से झलकने वाली जीवन शैली पर बल दिया गया है। इस कार्यक्रम के तहत चलाई जाने वाली परियोजनाएं क्षेत्र–आधारित अध्ययनों के इर्द–गिर्द संचालित है।

परियोजनाएंः

i. महाभारत और रामकथा की जीवित परंपराएं

क) इस परियोजना के अंतर्गत 2007 में रामकथा की शुरुआत और 2010 में महाभारत परियोजना को शामिल किया गया। एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और प्रदर्शनी की नवंबर 2015 में योजना बनाई गई। जिसके लिए तीन प्रारंभिक कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

ख) उत्तर प्रदेश के खेरिया गांव में हिन्दू–मुसलमान रामलीला का ऑडियो–वीडियो डॉक्युमेंटेशन समाप्त हो चुका है।

ii. नंदा देवी राज जात का दृश्य–श्रवण प्रलेखनः

इ.गाँ.रा.क.के. ने नंद पर्वत, भारत की दूसरी सबसे ऊंची पर्वत चोटी, से संबद्ध 'नंदा देवी राज जात' के सामाजिक–सांस्कृतिक के सिद्धांतों को प्रलेखित किया गया, जो उत्तराखंड के स्थानीय निवासियों की सर्वोच्च आध्यात्मिक देवी के रूप में गढ़वाल और कुमायूं के लोगों के विश्वास, रीति–रिवाज और धार्मिक जुड़ाव को दर्शाती है। लोक विश्वास के अनुसार नंदा देवी, हिमालय की पुत्री और भगवान शिव की पत्नी, गढ़वाल में अपने माता–पिता के गाँव से कैलाश पर्वत पर वापस लौटती है। यह बहुत ऊंचे स्थान पर होने वाली एक यात्रा है जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल होकर 28 किलोमीटर की यात्रा पैदल तय करते हैं, जो प्रत्येक 12 साल बाद आयोजित की जाती है।

उपरोक्त परियोजना पर निम्नलिखित उपलब्धि प्राप्त की गयी हैं

- पूरे दस्तावेज के 46 घंटे के वीडियो फुटेज
- 1000 से भी अधिक तस्वीरों को उच्च रेजोलुशन डिजिटल फॉर्मेट में तैयार किया गया है।

iii. धान उत्पादक संस्कृतियां

जनपद संपदा की ओर से 'धान उत्पादक संस्कृतियों' पर वर्ष 2012 में एक बड़ी शोध परियोजना प्रारंभ की गई। शोध के लिक्षत क्षेत्र हैंः इतिहास, उत्पित्त तथा समुदाय; धान–कृषिः कृषि प्रक्रियाएं, पारिस्थितिकी तथा संसाधन प्रबंधन; रिवाज, ग्रामीण जनजीवन तथा प्रस्तुतिकरण; राज्य नीतियां तथा प्रशासन। विभाग द्वारा उत्तरपूर्वी, पूर्वी तथा दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न इलाकों से संबद्ध क्षेत्रीय संस्थानों तथा शोधकर्ताओं के साथ शोध सहभागिता की संभावनाओं का पता लगाने के लिए तीन कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

दक्षिणी क्षेत्र की जारी परियोजनाओं के अंतर्गत पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पांडिचेरी के शोधकर्ताओं द्वारा ली गई परियोजनाओं की गुणवत्ता और स्थिति के मूल्यांकन हेतु 13–14 जून, 2014 को निरीक्षण बैठक का आयोजन किया गया। जारी परियोजनाएं इस प्रकार हैंः

दक्षिणी क्षेत्र

1. **मद्रास प्रेसीडेंसी (1902 से 1956) भूमि–राजस्व निर्धारण तथा जल–संसाधन प्रबंधन के निर्धारक महत्वपूर्ण तत्व–** पांडिचेरी विश्वविद्यालय के लोक प्रशासन विभाग की सहभागिता के साथ एक अध्ययन का आयोजन किया जा रहा है। इस शोधकार्य का अभिप्राय है, कृषि के लिए धान की खेती को एक संधारणीय साधन बनाने के लिए पूर्ववर्ती मद्रास प्रेसीडेंसी (1902–1956) द्वारा किए गए प्रशासनिक तथा राजनैतिक प्रबंध करना। जिसमें शामिल थे– पूर्ववर्ती मद्रास प्रेसीडेंसी (1902–1956) में अंतर्जलीय संसाधन प्रबंधन संवर्धित धान कृषि, जिसमें जल उपकर सहित समुन्नति लेवी सहित कुल भूराजस्व वसूली सम्मिलित थे; पूर्ववर्ती मद्रास प्रेसीडेंसी (1902–1956) में अंतर्जल क्षीणता का घटता–बढ़ता (वक्ररेखीय) स्तर, तथा प्रेसीडेंसी क्षेत्र के चार कृषि–जलवायविक जोन के चुने हुए स्थानों पर धान कृषि पर इसके परिणामी प्रभाव तथा अंतर्जलीय संसाधन प्रबंधन तथा धान कृषि की पुनर्बहाली की नीतियों के पालन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करना। यह प्रस्तावित शोध पूर्ववर्ती मद्रास प्रेसीडेंसी (1902–1956) के अध्ययन पर संकेंद्रित है। चेन्नई के सेंट जॉर्ज फोर्ट स्थित मुख्यालयों के साथ मद्रास प्रेसीडेंसी, ब्रिटिश शासन के अंतर्गत अन्य दो प्रेसिडेंसियों (कलकत्ता तथा मुंबई) के साथ तीन प्रेसीडेंसियों में से एक था। रिपोर्ट मार्च 2015 में प्राप्त हुई।

2. केरल के ग्राम्य क्षेत्र के सहयोग से **धान पर केरल में प्रचलित लोकगाथाओं का प्रलेखन, लिपीकरण तथा अनुवाद करना।** इस परियोजना का अभिप्राय है, ग्राम्य लोकगाथाओं तथा इससे संबंधित गतिविधियों का अध्ययन, प्रलेखन, लिपिकरण तथा अनुवाद करना। यह परियोजना केरल के विभिन्न इलाकों में धान की संस्कृति से संबंधित दुर्लभ कथात्मक गीतों के दस्तावेज तैयार करने पर केंद्रित है। ये इस प्रकार हैं, जैसेः अंदम पल्लम (उत्तरी केरल की एक कथात्मक गाथा), विठुपट्टु (धान के बीजों के आख्यान का वर्णन करने वाले बीज गीत), पुलवन पट्टु, न्हाट्टुपट्टु, विथाचुकिलापट्टु, विथिदीलपट्टु, कोयथापट्टु, काट्टाप्पाट्टु (पुलुवन समुदाय द्वारा गाया जानेवाला), चकरापट्टु (धान की खेती से संबंधित गीत), कृषिगीथा (धान की खेती के आख्यान का वर्णनात्मक मौखिक प्रस्तुतिकरण)। नृजाति–विज्ञान शोध प्रविधियों का पालन क्षेत्रकार्य के द्वारा अनुभवजन्य आंकड़ों के संग्रह के लिए आवश्यक बना देता है। इसमें मल्टीमीडिया दस्तावेज (ऑडियो, फोटो तथा वीडियो), अंग्रेजी में ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन, लिपिकरण तथा अनुवाद का संग्रह भी शामिल है।

   सभी प्रदेयताओं को जनवरी 2015 में प्राप्त कर लिया गया है। कथाओं और वीडियो टेप्स के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य प्रगति पर है।

3. मदुरई कामराज विश्वविद्यालय, मदुरई के स्कूल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट के लोकसाहित्य विभाग की सहभागिता से **संगम साहित्य में धान के सांकेतिक तथा तथ्यात्मक वर्णन का पुनर्निर्माण करना।** यह अध्ययन, 'संगम साहित्य' के माध्यम से प्राचीन भारतीय सभ्यता में 'धान' के मौलिक तथा सांस्कृतिक महत्व को पहचानने का एक प्रयास है। यह शोध प्रस्तावित करता है, दक्षिण भारतीय सामाजिक संरचना के उद्भव में धान की ऐतिहासिक भूमिका का पता लगाना, सामाजिक टिप्पणियों के दौरान धान के सांस्कृतिक महत्व को समझना; धान की खेती की देशी जानकारी प्रणाली को रेखांकित करना; तथा संगम साहित्य में धान के लाक्षणिक प्रस्तुतिकरण को उद्घाटित करना। इसका उद्देश्य धान के बारे में यथासंभव संदर्भों की पहचान उन्हें सांकेतिक तथा तथ्यात्मक दो समूहों में वर्गीकृत करके, करना भी है; और उन्हें संवादों के विश्लेषण के तर्कमूलक औजारों की मदद से व्यवस्थित रूप से विश्लेषित करना है।

   सभी प्रदेयताओं को मार्च 2015 में प्राप्त कर लिया गया है।

4. लोकसाहित्य संसाधन तथा शोध केन्द्र, सेंट जेवियर्स कॉलेज, तमिलनाडु की सहभागिता द्वारा तमिलनाडु की धान उत्पादक संस्कृतियों के साथ संयुक्त रूप से **पारंपरिक लिफ्ट सिंचाई तकनीक, औजार तथा उनके उपयोग के विशेष संदर्भ में आर्थिक संस्कृति** का प्रलेखन। यह परियोजना पारंपरिक सिंचाई पद्धतियों के अध्ययन पर केंद्रित है जिसमें कामालाइ तथा येत्राम का विशेष संदर्भ है– जो तमिलनाडु के दक्षिणी

जिलों में धान की खेती की पारंपरिक लिफ्ट सिंचाई प्रणालियां हैं; पारंपरिक धान कृषि की संपूर्ण प्रक्रियाओं तथा पोंगल– जो तमिलनाडु का पारंपरिक फसल उत्सव है, का प्रलेखन करना; धान उत्पादक संस्कृतियों से संयुक्त महत्वपूर्ण नृजातीय विषयों की पहचान तथा प्रलेखन करना।

सभी प्रदेयताओं को जनवरी 2015 में प्राप्त कर लिया गया है।

5. सालिम अली पक्षीविज्ञान तथा प्राकृतिक इतिहास केन्द्र, कोयंबटूर की सहभागिता से **पश्चिमी घाट के विशेष संदर्भ में दक्षिणी भारत की धान जैव विविधता में वृद्धि और गिरावट का नृजातीय–संस्कृतिक एवं परिस्थितिकीय परीक्षण करना।** यह शोध केंद्रित है: पश्चिमी घाट की पारंपरिक चावल किस्मों की विभिन्नता तथा उनके साथ संयुक्त पारंपरिक जानकारियों का प्रलेखन; चावल जैवविविधता, पारिस्थितिक दर्जा, कृषि विज्ञान संबंधी गतिविधियां, आर्थिक तथा सामाजिक धार्मिक महत्व पर आधारित महत्वपूर्ण चावल क्षेत्रों (आईआरए) की पहचान करना। इसके तहत चावल की खेती की गतिविधियों में ऐतिहासिक परिवर्तनों का अध्ययन भी किया जाएगा और इनके कारणों की पहचान की जाएगी।

सभी प्रदेयताओं को जनवरी 2015 में प्राप्त कर लिया गया है।

6. **कर्नाटक के तुलुनाद इलाके में धान उत्पादक संस्कृति: सोसायटी फॉर इंडियन मेडिकल एंथ्रोपोलॉजी, मैसूर की सहभागिता में धान और धान की कृषि के साथ संयुक्त रिवाजों पर विशेष रूप से केंद्रित एक नृशास्त्रीय अध्ययन।** इस शोध का उद्देश्य है, धान के साथ संयुक्त धार्मिक तथा सामाजिक रिवाजों की पहचान तथा उनका अध्ययन करना, धान की खेती में लगी जनसंख्या तथा भूमि के ह्रास की प्रक्रिया तथा कारणों का, तथा विभिन्न कृषि समुदायों के बीच सामाजिक सांस्कृतिक संबंधों, तथा तुलुनाद इलाके में धान की खेती से संयुक्त आर्थिक संस्कृति का अध्ययन करना। फोटो प्रलेखन के सहयोग से क्षेत्र कार्य, आंकड़ा संग्रहण, केस अध्ययन, साक्षात्कारों, समूह चर्चाओं पर आधारित इसमें एक गहन नृजातीय अध्ययन शामिल है।

सभी प्रदेयताओं को जनवरी 2015 में प्राप्त कर लिया गया है।

पूर्वी क्षेत्र

1. **झारखंड में मुंडा, संथाल, उरांव और सदान्स के बीच धान संस्कृति:** सांस्कृतिक नृविज्ञान आयाम, एशियाई सतत विकास संस्थान, रांची, झारखंड के सहयोग से। अध्ययन का उद्देश्य धान के साथ जुड़े ऐसे जीवन चक्र समारोहों, मेलों और त्यौहारों, अनुष्ठानों, मौखिक आख्यानों, गीतों, कहानियों, व्यंजनों आदि के रूप में सांस्कृतिक प्रथाओं का प्रलेखन करना है।

सभी प्रदेयताओं को जनवरी 2015 में प्राप्त कर लिया गया है।

2. **जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साईंसेस (एक्सआईएसएस), झारखंड के सहयोग से झारखंड की मुंडा, संथाल, उरांव और सदान्स का धान/ चावल संस्कृति का पारंपरिक ज्ञान और कृषिविज्ञान की प्रथाएं।** प्रस्तावित अध्ययन का उद्देश्य बौद्धिक परंपरा का प्रलेखन करना है अर्थात इस अध्ययन के अंतर्गत भूमि और जल प्रबंधन पारिस्थितिकी और मौसम; पारंपरिक तकनीक, उपकरण और औजारय खेती, उत्पादन और वितरण की प्रक्रियाय बीज और अंकुर का ज्ञानय चतुराई के साथ प्रबंध और कीट नियंत्रण आदि का प्रलेखन किया जाएगा।

सभी प्रदेयताओं को जनवरी 2015 में प्राप्त कर लिया गया है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र

1. **बहु–सामुदायिक क्षेत्र में धान उत्पादन परंपरा;** पर दमदमा कॉलेज, असम के सहयोग से। प्रस्तावित अध्ययन का प्रयोजन हाजो क्षेत्र में विभिन्न समुदायों–हिंदुओं, मुसलमानों और बोडो के बीच समानताएं और समक्रमिक घटकों के अध्ययन के साथ–साथ धान उपजाने, त्योहारों, विश्वासों, अनुष्ठानों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का प्रलेखन करना है। यह अध्ययन गुणात्मक अध्ययन पर आधारित होगा, जबकि आंकड़े मुख्य और गौण स्रोतों के माध्यम से एकत्र किए जाएंगे। प्रारम्भिक

सामग्री क्षेत्र कार्य, साक्षात्कारों, और प्रेक्षण विधि के माध्यम से एकत्र की जाएगी। गौण स्रोतों में पुस्तकों, पत्रिकाओं, सरकारी दस्तावेजों और रिपोर्ट आदि को शामिल किया जाएगा।

2. **चावल और अब चाः गारो हिल्स की प्रथाएं और कहानियां,** नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, मानव विज्ञान विभाग, मेघालय के सहयोग से। अध्ययन का प्रयोजन मौखिक आख्यानों, कथाओं, गीतों, अनुष्ठानों आदि का प्रलेखन करना है और इसके अधीन मेघालय में गारो के बीच चावल की भूमिका और स्थिति की जांच करना भी है। प्राथमिक आंकड़े प्रश्नावली, साक्षात्कार, और प्रेक्षण विधि के माध्यम से एकत्र किए गए हैं और दृश्य श्रवण प्रलेखन के साथ जोड़ा गया है।

   सभी प्रदेयताओं को जनवरी 2015 में प्राप्त कर लिया गया है।

3. **करबियों के सामाजिक जीवन में चावल** पर असम विश्वविद्यालय, दिफू कैम्पस, दिफू, कार्बी आंगलोंग, असम के आदिवासी अध्ययन केन्द्र के सहयोग से अध्ययन। प्रस्तावित अध्ययन का प्रयोजन चावल की खेती से संबंधित सांस्कृतिक प्रथाओं, मौखिक गीतों, लोक नृत्यों का रिकॉर्ड और अनुवाद और पाठ का लिप्यन्तरण और गीतों और मंत्रों का प्रलेखन करना है। इसके अतिरिक्त यह सौंदर्यशास्त्र की राजनीति और लिंग की भूमिका तथा भूमि/संपत्ति से इसके संबंधों का पता लगाएगा। अध्येताओं ने प्राथमिक आंकड़ें क्षेत्र कार्य, साक्षात्कारों, प्रेक्षण और चावल संस्कृति से संबंधित विभिन्न गीतों की वीडियो रिकॉर्डिंग के माध्यम से एकत्र किए हैं। गौण श्रोतों में पुस्तकों, पत्रिकाओं और सरकारी दस्तावेजों और रिपोर्ट शामिल किया गया है।

   सभी प्रदेयताओं को फरवरी 2015 में प्राप्त कर लिया गया है।

iv. सांस्कृतिक पहचान और कला में इसकी अभिव्यक्ति खोज और प्रलेखन

- विश्वकर्मा और कम्मालार की विलुप्त होती विरासतः दक्षिण भारत के पारंपरिक धातुकर्म करने वाले अब तकनीकी व सांस्कृतिक तौर पर पिछड़ते हुए, राष्ट्रीय उच्च शिक्षा संस्थान, बंगलुरु के तत्वावधान में।

  इस परियोजना को विश्वकर्मा समुदाय के धातु पर कार्य करने वाले जीवंत परंपराओं पर शोध व दस्तावेजीकरण का उत्तरदायित्व लिया गया है जो कि उनके इतिहास और तमिलनाडु, केरल, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश व कर्नाटक राज्यों में उनकी उत्पत्ति के परिप्रेक्ष्य में है। इसका लक्ष्य पारंपरिक धातुकर्म के विज्ञान तथा शिल्प की बारीकी का प्रलेखन करना है, साथ ही इसमें पीतल और लोहे पर विशेष जोर देते हुए उनके मिश्रण पर होने वाले कार्य तथा इससे जुड़े विश्वासमतों, रीतियों और दृष्टिकोण को इस समुदाय के संबंध में तथा उनके वृहद सांस्कृतिक योगदान को की पृष्ठभूमि को स्थापित करना है। प्रमुख अंवेषकः शारदा श्रीनिवासन, राष्ट्रीय उच्च शिक्षा संस्थान।

- **मल्लनना महाकाव्य, पंथ प्रथाओं और गोलाज की सामाजिक पहचान के अध्ययन** पर प्रमुख अन्वेषक प्रो. पी. सुब्बाचारी, द्रविड़ विश्वविद्यालय, कुप्पम, आंध्र प्रदेश द्वारा उत्तरदायित्व लिया गया है। इस परियोजना में मल्लनना महाकाव्य की सम्पूर्ण लंबाई को दृश्य और श्रवण के आकार में प्रलेखन, अनुलेखन और अनुवाद करना है, इसमें पंथ परंपराए भी शामिल हैं जो महाकाव्य और गोलाज के नृवंशविज्ञान के इर्द–गिर्द घूमती है, जो कि महाकाव्य और मल्लनना पंथ का विश्लेषण करने के लिए महत्वपूर्ण है। तेलंगाना के वारंगल, मेडक, नालगोंडा और महबूबनगर जिलों में मल्लनना के पंथ क्षेत्रों में एक गहन क्षेत्र कार्य डाटा एकत्र करने के लिए आयोजित किया गया।

  कुछ प्रदेयताओं को जनवरी 2015 में प्राप्त कर लिया गया है। संपादित फिल्मों का कार्य प्रगति पर है।

v अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा, 'रामायण' इ. गाँ.रा.क.के. की एक परियोजना है, जिसे भूमि क्षेत्रपाल मंदिर, विश्व सांस्कृतिक धरोहर समिति (जो रामायण मेला समिति की नाम से लोकप्रिय है), गाँव सलूर डुंगरा, चमोली द्वारा कार्यान्वित की जा रही है। इस संबंध में एक सहमति ज्ञापन पर जिलाधिकारी, चमौली, उत्तराखंड के साथ हस्ताक्षर

किए गए थे। इस परियोजना के अधीन रामायण की परम्परा का संरक्षण, परिरक्षण और प्रसार का कार्य शुरू किया गया है है, जिससे कि इस कला शैली के सामाजिक–सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ के लोप को रोका जा सके। परियोजना की शुरुआत वर्ष 2012 में की गयी थी लेकिन मौसम की विपरीत स्थितियों के कारण कार्य में देरी हो गयी। तथापि, अब तक मुखौटों के साथ–साथ वेषभूषा के दो सेट्स पूरे हो चुके हैं और गुरु–शिष्य परम्परा के अंतर्गत सभी तीन कार्यशालाओं का आयोजन किया जा चुका है। सामुदायिक स्रोत केन्द्र का निर्माण प्रगति पर है।

vi. परम्पराओं की मिश्रित संस्कृतियाँ और संगम समग्र संस्कृति और परंपराओं का संगमः

- **चविट्टू नाटकम और मार्गम कालीः केरल में ईसायियों की प्रदर्शन परंपरा– डॉ. संकुट्टी. टी**
  परियोजना में दो प्रदर्शन परम्पराओं का पता लगाया गया, केरल में ईसायियों की चविट्टूनाटकम और मार्गम काली, उनके एतिहासिक विकास और समकालीन प्रथाओं की बारीकियों के संदर्भ में। परियोजना पूरी हो चुकी है।

- **कोचीन यहूदी विरासत की खोज और प्रलेखन**
  परियोजना का क्षेत्र केरल में वृहद बस्तियों, सांस्कृतिक स्मारकों, मौखिक परम्पराओं, प्रसिद्ध व्यक्तियों, अंतर–समुदाय संबन्धों और पहचान की समकालीन अभिव्यक्तियों का दस्तावेजीकरण है। परियोजना निदेशकः श्रीकला शिवसंकरन; वृत्तचित्र के निदेशकः संजय महऋषि।

- **केरल के माप्पीला मुसलमानों की अरबी–मलयालम और भाषायी–सांस्कृतिक परंपराओं का प्रलेखन– डॉ.एम.एच. इलियास**
  परियोजना में एक स्थानीय रूप से तैयार की भाषा, केरल के माप्पीला मुसलमानों की अरबी–मलयालम, जो विलुप्त होने के कगार पर है, के नृवंशविज्ञान प्रलेखन का प्रयास किया जा रहा है। माप्पीला समुदाय की कला शैलियों और सांस्कृतिक परंपराओं को रिकॉर्ड करने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, जो इस भाषा के साथ निकटता से जुड़ी है। कृति दस्तावेज कला रूप और सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे 'ओप्पना', 'कोलकाली', 'नेरक्का', 'कैमुत्तुकली', 'परिकामुत्तुकली' आदि। अनुसंधान और प्रलेखन में 'मप्पिल्लाप्पट्टू', 'पड़पपट्टु', 'किस्सापट्टु', 'कल्यानापातु' या विवाह के गीतों, 'मधु पत्तुकल' और 'वट्टाप्पट्टु' का प्रतिलेखन, अनुवाद और लिप्यंतरण भी शामिल है। दृश्य श्रवण प्रलेखन पूरा हो गया है। परियोजना पूरी चुकी है।

- **दिल्ली के सांस्कृतिक जीवन का प्रलेखन – प्रो. शमीन हनफी और श्री यूसुफ सईद**
  परियोजना में प्रमुख व्यक्तियों, संस्थाओं के जीवन और कार्य, दिल्ली की भारत–मुस्लिम सांस्कृतिक धरोहर के गहन दृश्य–श्रवण प्रलेखन तैयार करने का कार्य शुरू किया गया है। 10 डीवीडी प्रस्तुत की जा चुकी हैं, जिसमें दिल्ली के मौखिक इतिहास और इस सांस्कृतिक धरोहर को रिकॉर्ड करने के लिए प्रख्यात विद्वानों और शिक्षाविदों जैसे कि प्रोफेसर शरीफ हुसैन काज़मी, श्री अब्दुल अजीज, श्री अब्दुल रशीद, प्रोफेसर चंद्रशेखर, श्री नसीम अब्बासी, श्री अकील अहमद, प्रोफेसर सिद्दीकुर रहमान किदवई और श्री अनीस आजमी के साक्षात्कार हैं। सामग्री की समीक्षा की जाएगी।

- **केरल के इसाइयों की परंपरा का प्रदर्शनः चाविट्टू नट्कम और मरगमकली – श्री समकुट्टी पट्टोमकरी**
  संबंधित समुदाय और वृहद सांस्कृतिक परिवेश में उनके योगदान के संदर्भ में प्रदर्शन प्रथाओं की बारीकियों के साथ–साथ केरल में अपने इतिहास और विकास के संदर्भ में चाविट्टू नट्कम और मरगमकली के अनुसंधान और प्रलेखन के लिए परियोजना शुरू की गई थी। परियोजना दृश्य श्रवण प्रलेखन के साथ पूरी हो चुकी है।

क्षेत्र संपदा

क्षेत्र संपदा में एक विशिष्ट स्थान या एक मंदिर और इसकी इकाइयां और इसके आसपास के लोगों की संस्कृति पर इसके प्रभाव, एक विशेष केन्द्र की धार्मिक, कलात्मक, भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं के सम्पूर्ण अन्तर्ग्रथन की परिकल्पना की गई है और इसके नवीकरण और निरंतरता के रूप में क्या कारक कार्य करते हैं। इस परियोजना के अंतर्गत समीक्षा की अवधि के दौरान निम्नलिखित कार्य किया गया हैः

पूर्वोत्तर अध्ययन कार्यक्रम
जारी अनुसंधान परियोजनाएंः

- भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की वस्त्र परंपराओं का प्रलेखनः फाइबर, कपड़े, रंग, करघे और उपकरणों के उपयोग

तथा सांस्कृतिक संकेतकों के एक समग्र डिजाइन का अध्ययनः यह इ.गाँ.रा.क.के. और राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद की एक सहयोगी परियोजना है। परियोजना की अवधि शुरुआत में चार वर्ष की थी, जिसे अब दिसंबर 2016 तक बढ़ा दिया गया है। पहले चरण का कार्य, क्षेत्रीय कार्य और प्रलेखन सहित, पूरा हो चुका है और इस इ.गाँ.रा.क.के.को दिखा दिया गया है।

पहली प्रदेय मार्च 2015 में मिजोरम राज्य से प्राप्त हुई थी।

- **'इशान्य': पूर्वोत्तर सांस्कृतिक उत्सव (मार्च 28–29, 2015):**
  जनपद संपदा, नई दिल्ली के अभिलेखीय संग्रह से पूर्वोत्तर में विभिन्न स्थानों से टोकरी निमार्ण कार्य के संग्रह 'पासी टोकरी निर्माण की रोजमर्रा की कला' का 'इशान्य': पूर्वोत्तर सांस्कृतिक उत्सव के दौरान एसआरसी बंगलुरु में प्रदर्शन किया गया।

  ईशान्य ने पूर्वोत्तर के सभी आठ राज्य अर्थात त्रिपुरा, मिजोरम, असम, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश नागालैंड और मणिपुर द्वारा शानदार प्रदर्शन पेश करके पूर्वोत्तर संस्कृति को मनाया गया।

  'पूर्वोत्तर को शेष भारत से जोड़ना' विषय पर पैनल चर्चा और सार्वजनिक व्याख्यान प्रस्तुत किए गए थे।
  राष्ट्रीय विरासत शहर विकास और वृद्धि योजना (हृदय)

  इस परियोजना की शुरुआत वर्ष 2014 में की गयी थी और इ.गाँ.रा.क.के. में अनेक प्रारंभिक/परामर्शी बैठकों का आयोजन किया जा चुका है। इस परियोजना के अंतर्गत तीन शहरों अजमेर, मथुरा और वाराणसी के लिए लक्ष्य विवरण तैयार किया गया है। संबंधित शहरों में सलाहकारों/स्रोत व्यक्तियों की नियुक्ति की जा चुकी है। लक्ष्य विवरण तैयार करने के लिए एक फॉर्मेट बनाया गया है और सांस्कृतिक मंत्रालय को भेज दिया गया है।

प्रकाशन 2014–15

- **प्रकाशितः**
- रामकथा इन नैरेटिव, परफॉरमेंस एंड पिक्टोरिअल ट्रडिशन्सः संपादकीय टीम में प्रो. मौली कौशल, प्रो. अलोक भल्ला और डॉ. रमाकर पंत शामिल हैं।

- प्रो. डी. पी. पट्टनायक द्वारा 'लैंग्वेज एंड कल्चरल डाइवर्सिटी'

प्रो. डी. पी. पट्टनायक द्वारा लिखित 'लैंग्वेज एंड कल्चरल डाइवर्सिटी' पर पुस्तक का विमोचन

- 'कांथा' पर प्रदर्शनी कैटलॉग

- डॉ. रक्षंदा जलील द्वारा 'द रिबेल एंड हर कॉजः लाइफ एंड वर्क ऑफ रशीद जहाँ'

'डॉ. रशीद जहाँ – ए रिबेल एंड हर कॉज': पर पुस्तक का विमोचन

- **प्रेस में:**
  - डॉ. पीआरजी माथुर द्वारा 'दी स्केयर्ड काम्प्लेक्स ऑफ सबरी माला अय्यप्पा टेम्पल' (सबरी माला अयप्पा मंदिर के पवित्र परिसर)।

  - प्रो. मौली कौशल, प्रो. सुकृता पाल कुमार द्वारा 'द लीविंग ट्रेडीशन ऑफ महाभारत' (महाभारत की जीवित परंपराएं)।

  - डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा 'थे आर्ट्स ऑफ केरला क्षेत्रम' (केरल क्षेत्रं की कला)

- 'लेसर नोन वूमैन'स राइटिंगः प्री एंड पोस्ट इंडिपेंडेंस पीरियड' (इन फोर वोलुमस) (चार संस्करणों में) का संकलन

I. विचाराधीनः

- **इंटरकल्चरल डायलाग बिटवीन साउथ ईस्ट एशिया एंड नार्थ ईस्ट इंडिया** संगोष्ठी कागजात प्रकाशन के लिए संपादित किये जा रहे हैं। संपादकीय टीम में प्रो. मौली कौशल और प्रो. लोकेन्द्र आरंबम शामिल हैं।

- **इस्लामिक हेरीटेज ऑफ नार्थ ईस्ट इंडिया विथ स्पेसिफिक रिफरेन्स तो ब्रह्मपुत्र एंड बराक वैली इन असम एंड मणिपुर** – प्रकाशन के लिए रूटलेज के साथ विचाराधीन

- **कल्चर इन डायलागः रिविसिटिंग दी वैष्णवीते रेनेसांस इन दी नार्थ ईस्ट इंडिया** - प्रकाशन के लिए रूटलेज के साथ विचाराधीन

- **गोंड रामायणः** प्रकाशन के लिए ओरिएंट ब्लैकस्वान के साथ विचाराधीन

- **कुमाऊनी रामलीलाः** प्रकाशन के लिए ओरिएंट ब्लैकस्वान के साथ विचाराधीन

- **पब्लिकेशन ऑफ चिल्ड्रन्स बुक्स इन दी लैंग्वेजेज ऑफ नार्थ ईस्ट इन कोलैबोरेशन विथ अन्वेशाः** पुस्तकें प्रकाशन के लिए तैयार हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट के साथ बातचीत जारी है।

- **कैटेलॉग ऑन बास्केटरी** प्रकाशन के लिए तैयार है।

- **कैटेलॉग ऑन ट्रेडिशनल टेक्सटाइल्स** की पांडुलिपि प्रकाशन के लिए तैयार है।

- **अरबी–मलयालमः** डॉ. एम.एच. इलियास द्वारा केरल के माप्पीला मुसलमानों की भाषाई, सांस्कृतिक परंपरा

फिल्में

2014–15 में प्रभाग द्वारा निर्मित फिल्में

- **'क्ले इमेजेज ऑफ कुमारतुली'** लोक परंपरा परियोजना के अधीन रंजीत रे द्वारा निर्मित एक लघुचित्र ने 62वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, 2014 में सर्वोत्तम प्रचार फिल्म के लिए रजत कमल पुरस्कार जीता।

- गौतम घोष द्वारा निर्देशित केजी सुब्रामण्यन पर वृत्तचित्र द **'मैजिक ऑफ मेकिंग'**।

- विपिन विजय द्वारा निर्देशित श्री अडूर गोपालकृष्णन पर फिल्म **भूमियिल चुवादुरचु (फीट अपॉन द ग्राउंड)**।

- श्री शंखजीत डे द्वारा निर्देशित **'इन द शैडो ऑफ टाइमः रावण छाया ऑफ उड़ीसा'**

- डॉ. नमन आहूजा द्वारा **'रूप प्रतिरूप–बॉडी इन इंडियन आर्ट'**। ये प्राथमिक सम्पादन हैं और इसकी 08 डीवीडी हैं और प्रत्येक की अवधि 30 मिनट है।

'रूप प्रतिरूप– दी बॉडी इन इंडियन आर्ट' पर डीवीडी जारी

संगोष्ठियां/सम्मेलन/कार्यशालाएं/विशेष व्याख्यान

भारत में यहूदियों का गोल मेज सम्मेलन

'भारत में यहूदी' पर एक गोल मेज सम्मेलन भारत में यहूदियों की सांस्कृतिक विरासत के अनुसंधान, प्रलेखन, संरक्षण और प्रसार के लिए ढांचा विकसित करने हेतु विषय से संबधित क्षेत्र में विद्वानों, कलाकारों और स्रोत व्यक्तियों के साथ परामर्शी बैठकों के रूप में 13 अक्तूबर, 2014 को आयोजित की गयी थी।

सम्मलेन में डॉ. एमजीएस नारायणन (इतिहासकार और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के पूर्व अध्यक्ष), डॉ. केनेथ एक्स रॉबिन्स (वेस्टर्न जू इन इंडिया और जू एंड दी इंडियन नेशनल आर्ट प्रोजेक्ट के लेखक), डॉ श्रीकला शिवशंकरन (एसोसिएट प्रोफेसर, जनपद संपदा प्रभाग, इ.गाँ.रा.क.के.), डॉ मारगिट फ्रांज (ग्राज विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रिया, गोइंग ईस्ट, गोइंग साउथः ऑस्ट्रिया एक्सीलेंस इन एशिया एंड अफ्रीका के लेखक), सुश्री एस्थर डेविड (लेखक, साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित) डॉ. जईल सिलिमन (स्वतंत्र शोधकर्ता और नेहरू फुलब्राइट स्कॉलर), श्री शये बेन–तजुर (अजमेर के संगीतकार और कवि) और डॉ. सारा मनस्सेह दूसरों के बीच में

(एथ्नोम्यूजिकोलॉजिस्ट, लंदन) प्रतिभागियों के अलावा अन्य भी शामिल थे।

अर्थ टू अर्थ (पृथ्वी से पृथ्वी) पर सम्मेलनः दिनांक 20 मार्च, 2015 को संस्कृति केन्द्र, आनन्दग्राम नई दिल्ली में अर्थ टू अर्थ (पृथ्वी से पृथ्वी) प्रदर्शनी के सहयोग से एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय कार्यशालाएं

- 'सौंदर्य और नैतिक संसार में महिलाएंः पूर्वोत्तर भारत में समुदायों की पारंपरिक विश्वदृष्टि और संस्थागत आचरण की तलाश' पर राष्ट्रीय कार्यशालाएं 9–10 और 18–19 दिसम्बर, 2014 को कोहिमा और इम्फाल में दर्शन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित की गयी थी। कार्यशालाओं का आयोजन पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों से स्थानीय विद्वानों के साथ चर्चा करके 'सौंदर्य और नैतिक संसार में महिलाएंः पूर्वोत्तर भारत में समुदायों की पारंपरिक विश्वदृष्टि और संस्थागत आचरण की तलाश' की अनुसंधान परियोजना के परिणाम की समीक्षा के लिए आयोजित की गयी थी।

- लीविंग ट्रेडीशन ऑफ महाभारत (महाभारत की जीवित परंपराएं) और 'रामकथा' परियोजना के लिए तीन प्रारंभिक कार्यशालाओं का आयोजन इ.गाँ.रा.क.के. (8 मई, 2014), भुवनेश्वर (25–26 सितंबर, 2014), और लखनऊ (7–8 नवंबर, 2014) में आयोजित की गई।

व्याख्यानः

- प्रो. ए.के. दास टैगोर फेलो, द्वारा 'इन सर्च ऑफ बम्बू फ्लावरः ए नार्थ ईस्ट सागा' (बांस के फूल की खोजः एक पूर्वोत्तर सागा) पर 7 अगस्त, 2014 को इ.गाँ.रा.क.के. के व्याख्यान हॉल में एक व्याख्यान दिया गया।

- 'फ्रॉम अर्थ टू अर्थः डिवोशन एंड टेरेकोटा ऑफफरिंग्स इन तमिलनाडु' (पृथ्वी से पृथ्वी तकः तमिलनाडु में भक्ति और टेरेकोटा प्रसाद) पर प्रदर्शनी के एक हिस्से के रूप में, भारतीय टेरेकोटा पर दो व्यख्यान आयोजित किए गए थे; प्रदर्शनी की क्यूरेटर सुश्री जूली वायने ने 27 फरवरी, 2015 को एक वार्ता प्रस्तुत की; प्रोफेसर गौतम सेनगुप्ता, प्राचीन इतिहास और पुरातत्व विभाग, विश्व भारती, शांतिनिकेतन ने 4 मार्च, 2015 को 'बंगाल टेरेकोटा' पर एक व्याख्यान दिया।

घटनाक्रम

बच्चों के लिए एक ग्रीष्मकालीन कठपुतली शिविर 10–14 जून, 2014 से नागालैंड कठपुतली बना रही है और प्रदर्शन से प्रेरित छाया कठपुतली कला की खोज के लिए आयोजित किया गया था।

'पपेट (कठपुतली) बनाने और प्रस्तुतीकरण' पर समर कैम्प

- जनपद संपदा प्रभाग का वार्षिक दिवस 31 जुलाई, 2014 को मनाया गया। इस अवसर पर सुश्री विद्या शाह द्वारा पद्मावत का एक व्याख्यान प्रदर्शन का आयोजन किया गया और एक तीज हाट का भी आयोजन किया गया।

'हरियाली तीज' का उत्सव

कलादर्शन प्रभाग

कलादर्शन प्रभाग कला के विविध रूपों की अनूठी प्रस्तुति के लिए काम करता है। यह विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करता है जिसमे कला प्रदर्शनियां, संगीत और नृत्य पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगोष्ठियां और व्याख्यान शामिल हैं। आयोजित कार्यक्रम अनुसंधान परियोजनाओं पर या भविष्य के अनुसंधान के लिए भंडार को बढ़ाने पर आधारित हैं। कलादर्शन इ.गाँ.रा.क.के. के अन्य प्रभागों के साथ–साथ स्वयं के लिए भी कार्यक्रमों का आयोजान करता है। किसी कार्यक्रम के लिए स्थान उपलब्ध कराने का कार्य इस प्रभाग द्वारा किया जाता है जिसमें माटीघर, ट्विन आर्ट गैलरीज, 11 मानसिंह रोड पर गैलरी स्पेस और व्याख्यान कक्ष, सी.वी.मेस रोड पर कॉन्फ्रेंस हॉल, सी.वी.मेस रोड पर ऑडिटोरियम और मीडिया सेंटर, एम्फीथिएटर या इ.गाँ.रा.क.के. के खुले लॉन शामिल हैं।

कलादर्शन प्रचार और इ.गाँ.रा.क.के. के कार्यक्रमों के बढ़ावा देने के लिए भी काम करता है। यह संस्था की पीआर एजेंसी के साथ घनिष्ठ समन्वय में कार्य करती है और ई–समाचार पत्र, फेसबुक और एलईडी डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से कार्यक्रमों

के बारे में आगंतुकों को सूचित करती रहती है।

इस वर्ष प्रभाग निम्नलिखित गतिविधियों में शामिल रहाः

प्रदर्शनियां

1) निर्भया–बहु अभिव्यक्तियाँ (निर्भया–मल्टीप्ल एक्सप्रेशंस) एक समकालीन कला प्रदर्शनी, निर्भया–बहु अभिव्यक्तियाँ (निर्भया–मल्टीप्ल एक्सप्रेशंस) इ.गाँ.रा.क.के. में क्रिएटिव माइंड प्रकाशन के सहयोग से आयोजित की गयी थी। प्रदर्शनी में महिलाओं की सुरक्षा और संवेदनशीलता विषय पर 100 कलाकारों की रचनाओं को प्रस्तुत किया गया था। इसके बाद प्रदर्शनी का आयोजन निव आर्ट सेंटर, नई दिल्ली में किया गया जहां पर यह 26 अप्रैल, 2014–3 मई, 2014 तक खुली रही। 6 अप्रैल, 2014 को एक दिवसीय कला शिविर का आयोजन किया गया था।

'निर्भया–मल्टीप्ल एक्सप्रेशंस' संबंधी कैटलॉग का विमोचन।

2.) आर्टिस्ट मेंटर प्रोग्राम (कलाकार संरक्षक कार्यक्रम)

इ.गाँ.रा.क.के. में आर्ट फर्स्ट फाउंडेशन के सहयोग से 1–3 मई, 2014 को बच्चों के कार्य 'पार्टनर ए मास्टर–आर्टिस्ट मेंटर प्रोग्राम' और 1 मई, 2014 को 'इंटेग्रेटिंग विजुअल लिटरेसी इन क्लासरूम' (कक्षा में दृश्य साक्षरता का एकीकरण) पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

3.) लाइट से तैयारः प्रारंभिक फोटोग्राफी और भारतीय उप–महाद्वीप (ड्रान फ्रॉम लाइटः अर्ली फोटोग्राफी एंड दी इंडियन सबकॉन्टिनेंट)

175वें विश्व फोटोग्राफी दिवस पर लाइट से तैयारः प्रारंभिक फोटोग्राफी और भारतीय उप–महाद्वीप (ड्रान फ्रॉम लाइटः अर्ली फोटोग्राफी एंड दी इंडियन सबकॉन्टिनेंट) नामक एक प्रदर्शनी अल्काजी फाउंडेशन फॉर आर्ट्स के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा आयोजित की गयी। 1840 से 1910 शताब्दी के बीच दक्षिण एशियाई क्षेत्र से दुर्लभ, प्रतिष्ठित और मूल फोटोग्राफी नमूनों का प्रदर्शन किया गया था, जिसमें भारत, बर्मा, सीलोन, श्रीलंका, नेपाल के जीवन और संस्कृति को प्रस्तुत किया गया। प्रदर्शनी 30 सितंबर, 2014 तक खुली हुई थी। क्यूरेटर वार्ता, व्याख्यान, फोटोग्राफी कार्यशाला और एक संगोष्ठी इस कार्यक्रम का हिस्सा थे।

'ड्रान फ्रॉम लाइटः अर्ली फोटोग्राफी एंड दी इंडियन सबकॉन्टिनेंट' प्रदर्शनी से 'बर्मी महिला', एक फोटोग्राफ

4.) 'अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' (भारत में अफ्रीकीः एक पुर्नखोज)

इ.गाँ.रा.क.के. ने 8 अक्तूबर–4 नवंबर, 2014 तक 'अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' (भारत में अफ्रीकीः एक पुर्नखोज) नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन 8 अक्तूबर, 2014 को श्री नवतेज सिंह सरना, सचिव (पश्चिम), विदेश मंत्रालय, डॉ. सिल्वेन ए. डियोफ, निदेशक, स्कूम्बर्ग केन्द्र और डॉ. केनेथ एक्स. रॉबिन्स, विषय से संबंधित विद्वान ने किया। न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी के ब्लैक कल्चर में स्कूम्बर्ग अनुसंधान केन्द्र के सहयोग से एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था, इसमें अफ्रीकी महाद्वीप से आए लोगों की यात्रा का पता लगाया गया, जो भारत के विभिन्न हिस्सों में बस गए और भारतीय कला और संस्कृति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। शो को डॉ. डियोफ और डॉ. रॉबिन्स द्वारा संयुक्त रूप से क्यूरेट किया गया।

'अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' प्रदर्शनी का उद्घाटन

'अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' प्रदर्शनी में सिदी गोमा समूह का प्रस्तुतीकरण।

'सिदी गोमा समूह' (गुजरात के श्याम सूफी) द्वारा एक प्रस्तुति का आयोजन इसके उद्घाटन के दौरान किया गया, जिसमें भारत में अफ्रीकी भारतीयों की संस्कृति को प्रदर्शित किया गया। कई वरिष्ठ सरकारी अधिकारीगण और राजनयिक बिरादरी के लोगों ने इस प्रदर्शनी को देखा।

5.) भारत और प्रथम विश्व युद्ध– बड़े युद्ध 1914–18 के 100 वर्षों के उपलक्ष्य में

इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा 12 जनवरी, 2015 को रोली बुक्स के सहयोग से भारत में फ्रांसीसी दूतावास ने इंडिया एंड दी फर्स्ट वर्ल्ड वॉर –कमेमोरेटिंग 100 इयर्स ऑफ दी ग्रेट वॉर 1914/1718 एक प्रदर्शनी का आयोजन किया था। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री रवीन्द्र सिंह, सचिव, सांस्कृतिक मंत्रालय और भारत में फ्रांस के राजदूत महामहिम फ्रेंकोइस रिचर द्वारा परमवीर चक्र विजेता सूबेदार योगेन्द्र सिंह यादव, 18वीं ग्रेनेडियर्स की उपस्थिती में किया गया। सुश्री वेदिका कान्त द्वारा लिखित पुस्तक इंडिया एंड दी फर्स्ट वर्ल्ड वॉर (भारत और प्रथम विश्व युद्ध) का भी इस अवसर पर विमोचन किया गया। फोटोग्राफ्स, मूक फिल्म, ऑडियो क्लिपिंग और उन बहादुर भारतीय सिपाहियों की मूल यादगार वस्तुएं, जिन्होंने अनजान क्षेत्र, विपरीत मौसम और ऐसी सेना जिसको वे जानते नहीं थे, के साथ ब्रिटिश झंडे के नीचे प्रथम विश्व युद्ध लड़ा, पर एक प्रदर्शनी लगायी गयी। उनमें से हजारों सैनिक युद्ध में मारे गए। सौ वर्ष होने पर, यह प्रदर्शनी उन भारतीय सिपाहियों को एक श्रद्धांजली थी।

'इंडिया एंड दी फर्स्ट वर्ल्ड वॉर –कमेमोरेटिंग 100 इयर्स ऑफ दी ग्रेट वॉर' पर प्रदर्शनी एवं पुस्तक विमोचन।

6.) फोक आर्काइव

31 जनवरी, 2015 को दो कलाकारों श्री एलेन काने और श्री जेरेमी डेलर द्वारा फोक आर्काइव पर एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया था। इ.गाँ.रा.क.के. के सहयोग से ब्रिटिश कोंसिल की यह प्रदर्शनी 27 फरवरी, 2015 तक चली और इसमें एक समकालीन संदर्भ में लोक कला का प्रदर्शन किया गया। सर जेम्स बेवन केसीएमजी, भारत में ब्रिटेन के उच्चायुक्त उद्घाटन के अवसर पर सम्माननीय अतिथि थे।

7.) 409 रामकिंकर्स

विवाड़ी के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. ने एक प्रतिस्थापन–कला–थिएटर कार्यक्रम, 409 रामकिंकर्स की मेजबानी की। पूरे महीने चलने वाले थिएटर पहलू कार्यक्रम की शुरुवात 24 मार्च, 2015 को हुई। इसमें मूर्तिकार–पटचित्रकार–थिएटर कलाकार, रामकिंकर

बैज (1906–1980) के रचनात्मक वातावरण समीक्षा करते हुए 21वीं सदी से पहले की शैली का प्रदर्शन किया गया। इस प्रकार का एक शो 2 अप्रैल, 2015 को समाप्त हुआ। मूर्ति संस्थापन पर प्रदर्शनी 6 मई, 2015 तक खुली रही।

संगोष्ठियां/सम्मेलन/कार्यशालाएं

संगोष्ठी

1. कक्षा में दृश्य साक्षरता का एकीकरण

आर्ट फर्स्ट फाउंडेशन के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. ने 1 मई, 2014 को 'कक्षा में दृश्य साक्षरता का एकीकरण' पर एक संगोष्ठी का आयोजना किया। युवा भागीदारों ने कलाकार–गुरु कार्यक्रम पर अपने कार्यों और अनुभव के बारे में जानकारी दी। उनके कार्यों को 3 मई, 2014 तक प्रदर्शित भी किया गया था।

'कक्षा में दृश्य साक्षरता का एकीकरण' संगोष्ठी का आयोजन किया।

2. इ.गाँ.रा.क.के. अभिलेखागार– एक विहंगावलोकन

प्रदर्शनी के हिस्से के रूप में, 'ड्रान फ्रॉम लाइटः अर्ली फोटोग्राफी एंड दी इंडियन सबकॉन्टिनेंट' (प्रकाश से तैयारः आरंभिक फोटोग्राफी और भारतीय उप–महाद्वीप), 17 सितंबर, 2014 को 'इ.गाँ.रा.क.के. का अभिलेखागार –एक विहंगावलोकन' पर एक संगोष्ठी आयोजित की गयी थी। इ.गाँ.रा.क.के. में पढ़ने वाले विद्यार्थियों ने संगोष्ठी में भाग लिया और सांस्कृतिक सामग्री, मानव विज्ञान संबंधी संग्रह, दुर्लभ पुस्तकों, दृश्य–श्रवण प्रलेखन, स्लाइड्स, फोटोग्राफ आदि सहित अभिलेखागार का व्यापक चित्रात्मक विवरण प्रस्तुत किया।

कुछ पत्र सुश्री हिमानी पांडे और टीम के द्वारा 'कैप्चरिंग साइट एंड साउंड फॉर पोस्टेरिटी'; डॉ. गौतम चटर्जी द्वारा 'ऑडियो/विसुअल डॉक्यूमेंटेशन ऑफ इंटेजिबल हेरिटेजः अर्चिविंग एंड डिसेमिनेशन बाइ आईजीएनसीए (इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा अमूर्त विरासत के ऑडियो/

'इ.गाँ.रा.क.के. का आर्काइव्ज – एन ओवरव्यू' पर संगोष्ठी

विजुअल दस्तावेजः संग्रह और प्रसार)'; सुश्री प्रियम घोष द्वारा 'नेशनल कल्चरल ऑडियो विजुअल आर्काइव्ज – एन ओवरव्यू (राष्ट्रीय सांस्कृतिक ऑडियो विजुअल अभिलेखागार–एक सिंहावलोकन)' में से थे।

3. 'अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' (भारत में अफ्रीकीः एक पुर्नखोज)

प्रदर्शनी के साथ–साथ, इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा 15 अक्तूबर, 2014 को 'अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' (भारत में अफ्रीकीः एक पुर्नखोज) पर एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया था। भारत के अनेक विद्वानों और विदेश के कुछ विद्वानों ने सम्मेलन में भाग लिया। अफ्रीकी और भारतीय समुदायों के बीच प्राचीन संबंध, कला के क्षेत्र में भारत में अफ्रीकी समुदाय का योगदान, वास्तुकला, सेना कौशल और धर्म पर केन्द्रित लगभग 12 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए थे। क्योंकि अधिकतर अफ्रीकी समुदाय पूर्वी अफ्रीका से आए हैं, जो हिन्द महासागर में आता है, सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा हाल ही में शुरू की गयी

'अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' की संगोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वान

'परियोजना मौसम' के अंतर्गत विषय महत्वपूर्ण हित का है।

4. उत्तर– दक्षिण

इ.गाँ.रा.क.के. ने ललित कला अंतर्राष्ट्रीय फाउंडेशन के सहयोग से 25–26 अक्तूबर, 2014 तक भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, कोलकाता में 'उत्तर–दक्षिण –कर्नाटक और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पद्धति के बीच पारस्परिक क्रिया' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। पंडित अजय चक्रवर्ती (स्वर), पंडित बुद्धदेव दासगुप्ता (सरोद), पंडित अनिंदों चटर्जी (तबला) हिंदुस्तानी शैली के भागीदार थे और सुश्री अरुणा साइराम (स्वर), डॉ. नर्मदा (वायलिन), श्री के.वी. प्रसाद (मृदंग) कर्नाटक संगीत पद्धति के भागीदार थे। श्री अरविंद पारिख और श्री गणेश कुमार ने चर्चा के दौरान मोडेरेटर की भूमिका निभायी। चर्चा दोनों धाराओं के बीच समानता और प्रत्येक की विशिष्टता के बारे में ही हुई। इस प्रकार का यह पाँचवाँ सत्र था, इससे पहले सत्र चेन्नै (दो बार), मुंबई और दिल्ली में आयोजित किए गए थे। कार्यक्रम के बाद सभी भागीदारों ने संगीतमय कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

5. भारतीय शास्त्रीय संगीत में पारंपरिक बंदिश का महत्व

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और काला प्रकाश, एक गैर सरकारी संगठन के सहयोग से डॉ. एन. राजम पर डीवीडी रिलीज समारोह के हिस्से के रूप में 'भारतीय शास्त्रीय संगीत में पारंपरिक बंदिश का महत्व' विषय पर एक संगोष्ठी भी आयोजित की गई थी। संगोष्ठी 6 फरवरी, 2015 को आयोजित की गई।

6. गांधी और परम पावन दलाई लामा के विचार

इ.गाँ.रा.क.के. के सहयोग से 28–29 मार्च, 2015 को तिब्बत सभा (परम पावन दलाई लामा के सांस्कृतिक केन्द्र) द्वारा 'महात्मा गांधी और परम पावन दलाई लामा के विचार और योगदान' पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई थी।

कार्यशाला

7. कहानी उत्सवः कथावाचन कला को बढ़ावा देने के लिए एक कथावाचन उत्सव

मौखिक परम्पराओं को बढ़ावा देने के प्रयास के रूप में **इ.** गाँ.रा.क.के. के एक हिस्से के रूप में 8–11 मई, 2014 को स्टोरी घर के सहयोग से एक कथावाचन उत्सव का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम में बच्चों के लिए कठपुतली निर्माण कार्यशालाएं और कथावाचन सत्र शामिल थे और इसका आयोजन नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नेशनल बुक ट्रस्ट और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के कुछ स्कूलों के सहयोग से किया गया था। उत्सव ने कथावाचन के अपने कौशल को दर्शाने में विभिन्न कलाकारों को एक दूसरे के नजदीक लाने में सहायता की।

8. कला शिक्षा का तीसरा अंतर्राष्ट्रीय सप्ताह

कला शिक्षा का तीसरा अंतर्राष्ट्रीय सप्ताह एनसीईआरटी, इ.गाँ.रा.क.के. और कथक केन्द्र के साथ 22–24 मई, 2014 तक आयोजित किया गया था, जिसमें सरकारी स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया। पहले दिन कार्यशाला का आयोजन कथक केन्द्र चाणक्यपुरी में नृत्य और चाल पर सुश्री सुष्मिता घोष द्वारा किया गया था। 23 मई, 2014 को इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा 'बृहदेश्वर मंदिर' और 'गंगा' पर फिल्म स्क्रीनिंग का आयोजन किया गया था, जिसके बाद मनीषा झा और समूह द्वारा 'मधुबनी चित्रकारी' पर एक जीवंत कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतिम दिन बचपन द्वारा कथावाचन सत्र, श्री अशोक शियोदे द्वारा 'कीट सौंदर्य' पर स्लाइड का प्रस्तुतीकरण

'गांधी और परम पावन दलाई लामा के विचार' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी।

एनसीईआरटी के सहयोग से 'कला शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीय सप्ताह'।

और अभिज्ञान नाट्य एसोसिएशन द्वारा नाट्याभिनय और साक्षी, एक एनजीओ द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति शामिल हैं।

9. फोटोग्राफी

इ.गाँ.रा.क.के. में 24–28 सितम्बर, 2014 को बाल जगत कार्यक्रम के तत्वावधान से, फोटोग्राफी पर कार्यशाला आयोजित की गई। इ.गाँ.रा.क.के. के श्री डी. एन. वी. एस. सीतारामैय्या, वरिष्ठ फोटोग्राफी अधिकारी द्वारा 'ड्रान फ्रॉम लाइटः अर्ली फोटोग्राफी एंड दी इंडियन सबकॉन्टिनेंट' प्रदर्शनी के हिस्से के रूप में कार्यशाला का आयोजन किया गया।

विभिन्न स्कूलों के प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

'फोटोग्राफी' पर कार्यशाला।

10. मनोधर्मा

मैसूर वासुदेवाचार्य की दुर्लभ रचनाओं पर 'मनोधर्मा' को विकसित करने पर एक कार्यशाला 31 जनवरी, 2014 को आयोजित की गयी थी। कार्यक्रम त्यागराज आराधनाई पर संगीत समारोह के एक हिस्से के रूप में षण्मुखानंद संगीत सभा के सहयोग से आयोजित किया गया था। श्रीमती सुगुणा वरदाचारी ने आने वाले संगीतकारों और विद्यार्थियों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया।

सार्वजनिक व्याख्यान

1. श्री जॉनी एमएल और डॉ. पुरुषोत्तम बिलिमेल द्वारा वार्ता

निर्भया–बहु अभिव्यक्तियाँ (निर्भया–मल्टीप्ल एक्सप्रेशंस) पर वृहद कला प्रदर्शनी के एक हिस्से के रूप में, 06 अप्रैल, 2014 को श्री जॉनी एमएल और डॉ. पुरुषोत्तम बिलिमेल द्वारा व्याख्यान प्रस्तुतीकरण का आयोजन किया गया था। यह कार्यक्रम एक लड़की 'निर्भया' को समर्पित था, जिसने 16 दिसंबर, 2012 को अपने ऊपर हुए क्रूर अत्याचार का बहादुरी से मुकाबला किया।

2. अभिलेखागार एक वस्तु और अभ्यास के रूप में

'ड्रान फ्रॉम लाइटः अर्ली फोटोग्राफी एंड दी इंडियन सबकॉन्टिनेंट' (प्रकाश से तैयारः प्रारंभिक फोटोग्राफी और भारतीय उप–महाद्वीप) नामक प्रदर्शनी के एक हिस्से के रूप में 'अभिलेखागार एक वस्तु और अभ्यास के रूप में' पर श्री अक्षय तनखा द्वारा 29 अगस्त, 2014 को इ.गाँ.रा.क.के. में एक व्याख्यान का आयोजन किया गया था। श्री तनखा कला विभाग, टोरेंटों विश्वविद्यालय में एक शोध विद्यार्थी हैं और वर्तमान में नागालैंड की दृश्य संस्कृति का अध्ययन कर रहे हैं। इस वार्ता में इस बात की चर्चा की गयी कि अभिलेखागार में किस प्रकार ऐतिहासिक सामग्री का प्रयोग किया गया और समकालीन नागालैंड में बहु संस्कृति और राजनैतिक कार्यों के माध्यम से पुनः व्याख्या की गयी है जो लगातार 'अभिलेखागार' को एक वस्तु और अभ्यास के रूप में पुर्नगठित करता है।

3. दृश्य ऐतिहासिक अभिलेखागार का निर्माणः सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कोलकाता के फोटो संग्रह से चयन

इ.गाँ.रा.क.के. ने 'ड्रान फ्रॉम लाइटः अर्ली फोटोग्राफी एंड दी इंडियन सबकॉन्टिनेंट' (प्रकाश से तैयारः प्रारंभिक फोटोग्राफी और भारतीय उप–महाद्वीप) नामक प्रदर्शनी के एक हिस्से के रूप में 13 सितम्बर, 2014 को प्रोफेसर ताप्ती गुहा ठाकुरता द्वारा 'दृश्य ऐतिहासिक अभिलेखागार का निर्माणः सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कोलकाता के फोटो संग्रह से चयन' पर एक व्याख्यान का आयोजन किया। प्रोफेसर ठाकुरता एक प्रसिद्ध कला इतिहासविद और कोलकाता में सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र में सामाजिक अध्ययन की निदेशक/प्रोफेसर हैं। व्याख्यान में विशेष रूप से दृश्य अभिलेखागारों पर केंद्रित सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र द्वारा अभिलेखागार संबंधी सामग्री के लिए अनिवार्यताओं और चुनौतियों संबंधी कार्यों पर चर्चा की गयी।

4. डिसीप्लीनिंग दी आर्काइवः प्रैक्टिसेज इन आर्ट एंड पेडगोग्य

दिनांक 27 सितंबर, 2014 को मध्यस्थ के रूप में श्री सौम्यब्रत चौधरी के साथ श्री साबिह अहमद और सुश्री अनुराधा कपूर द्वारा 'डिसीप्लीनिंग दी आर्काइवः

प्रैक्टिसेज इन आर्ट एंड पेडगोग्य' (पुरालेख अनुशासितः कला और अध्यापन में प्रथाएं) पर एक व्याख्यान 'ड्रान फ्रॉम लाइटः अर्ली फोटोग्राफी एंड दी इंडियन सबकॉन्टिनेंट' प्रदर्शनी के हिस्से के रूप में आयोजित किया गया। पैनल ने संग्रह कला के विभिन्न प्रथाओं पर चर्चा की।

5. **अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' (भारत में अफ्रीकीः एक पुर्नखोज) पर संरक्षीय वार्ताः**
'अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' (भारत में अफ्रीकीः एक पुर्नखोज) नामक प्रदर्शनी के एक हिस्से के रूप में प्रदर्शनी के सह–क्यूरेटर में से एक डॉ. सिलविएन डियोफ द्वारा 9 अक्तूबर, 2014 को एक वार्ता का आयोजन किया गया था। डॉ. डियोफ ने जानकारी दी कि यह प्रदर्शनी पश्चिम के अनेक संस्थानों में फैले विषयों पर बड़ी मात्रा में उपलब्ध सामग्री का एक छोटा सा भाग है। उन्होने भविष्य के अध्ययन के लिए सामग्री की तुलना करने की दलील दी।

6. **इन दी शैडो ऑफ नंदा देवी (कुमाऊं)ः ए पीपल एंड ए क्राफ्ट'**
डॉ. मंजू काक ने इ.गाँ.रा.क.के. में 18 नवंबर, 2014 को (इन दी शैडो ऑफ नंदा देवी (कुमाऊं)ः ए पीपल एंड ए क्राफ्ट') (नंदा देवी की छाया में (कुमाऊँ)ः लोग और शिल्प) पर एक व्याख्यान दिया। वह एक कला इतिहासविद और एक कहानीकार है, जिन्होंने इस क्षेत्र में वास्तुकला के एक हिस्से के रूप में देखी गयी लकड़ी की नक्काशी पर विशेष ध्यान देते हुए कुमाऊँ क्षेत्र से सांस्कृतिक परम्पराओं के बारे में जानकारी दी।

7. **सच ए वॉर हैज नेवर बीन बिफोरः एक्सपीरियंस ऑफ इंडियन ट्रूप्स इन वर्ल्ड वॉर ए**
एक व्याख्यान इंडिया एंड दी फर्स्ट वर्ल्ड वॉर –कमेमोरेटिंग 100 इयर्स ऑफ दी ग्रेट वॉर 1914 / 1718 प्रदर्शनी के हिस्से के रूप में आयोजित किया गया था। प्रो. सैमुअल बरथेट ने 30 जनवरी, 2015 को सच ए वॉर हैज नेवर बीन बिफोरः एक्सपीरियंस ऑफ इंडियन ट्रूप्स इन वर्ल्ड वॉर I पर एक व्याख्यान दिया।

8. **स्केयर्ड हीलिंगः सैंक्टिफाइंग दी कांशसनेस एंड दी एनवायरनमेंट और स्किलफुल कम्पैशन ग्रॉउंडेड ऑन विजडम**
विशेष व्याख्यान का आयोजन आदरणीय गेशे दोरजी दमदुल द्वारा 6–30 जनवरी, 2015 को क्रमशः किया गया। वे थे–स्केयर्ड हीलिंगः सैंक्टिफाइंग दी कांशसनेस एंड दी एनवायरनमेंट' और 'स्किलफुल कम्पैशन ग्रॉउंडेड ऑन विजडम'। श्री दमदुल नई दिल्ली में तिब्बत हाउस के निदेशक है।

9. **फोक आर्काइव प्रदर्शनी पर वार्ता**
फोक आर्काइव पर प्रदर्शनी के एक हिस्से के रूप में कलाकारों श्री जरमी डेलर और श्री एलन काने द्वारा 02 फरवरी, 2015 को व्याख्यान दिये थे। 26 फरवरी, 2015 को श्री ओरिजीत सिंह ने इ.गाँ.रा.क.के. में 'मानचित्रण मापुसा के बारे में एक सचित्र प्रस्तुति' (इलस्ट्रेटेड प्रेजेंटेशन अबाउट मैपिंग मापुसा) की।

प्रदर्शन

1. **चिथिरै उत्सव**
इ.गाँ.रा.क.के. ने षण्मुखानंद संगीत सभा के सहयोग से 18–20 अप्रैल, 2014 तक चिथिरै संगीत और नृत्य उत्सव (चिथिरै म्यूजिक एंड डांस फेस्टिवल) का आयोजन किया। श्री जवाहर सिरकार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, प्रसार भारती ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया, जो तमिल संगीतकारों को समर्पित था। उत्सव में डॉ. एस. सौम्या, श्री कुन्नाक्कुडी और श्री एम. बालामुरली कृष्णा ने अपनी संगीतमय आवाज दी और परूरु एम. एस. अनंतकृष्णन ने वायलिन पर और पोंगुलम सुब्रह्मण्यम ने 'मृदंगम' पर सहयोग दिया। समापन समारोह के दौरान सुश्री प्रिया वेंकटरमण और उसकी मंडली द्वारा भरतनाट्यम भी प्रस्तुत किया गया था।

2. **दी लास्ट सांग ऑफ अवध (अवध का अंतिम गीत)**
सूफी कथक फाउंडेशन के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. ने 23 मई, 2014 को दी लास्ट सांग ऑफ अवध पर एक संगीतमय कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में दो महानतम किदवन्तियों, जरीना बेगम और नानपरा, अवध के राजदरबार की अंतिम जीवित गायिका, के मिलन स्थल और सुश्री मंजरी चतुर्वेदी द्वारा दरबारी कथक पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। एक लघु वृत्तचित्र–'दी अदर सॉन्ग', सुश्री सबा दीवान, एक प्रसिद्ध फिल्म निर्माता द्वारा दरबारियों पर एक फिल्म दिखाई गयी, जिसके बाद एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें श्री विक्रम लाल, सुश्री कुमुद दीवान, राजकुमार महमूदाबाद, श्री अमीर नकवी खान, श्री अमीर रजा हुसैन और श्री प्राण नेवेली ने भाग लिया था।

3. **स्पिक मैके अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन**
इ.गाँ.रा.क.के. ने आईआईटी मद्रास में 8–14 जून, 2014 तक उनके अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में स्पिक मैके का

सहयोग किया। सप्ताह भर चलने वाले कार्यक्रम में कलाकारों द्वारा कई संगीत समारोह के आयोजन सहित, इस क्षेत्र के प्रख्यात विद्वानों द्वारा व्याख्यान प्रदर्शन, वार्ता और नृत्य प्रदर्शन शामिल हैं। योग, ध्यान, शास्त्रीय संगीत और नृत्य, शिल्प और चित्रकारी, कार्यशालाओं और कार्यक्रमों द्वारा युवाओं को भारतीय संस्कृति और विरासत के बारे में जानकारी का एक बड़ा अवसर मिला है।

4. डीवीडी जारी की गयी– पंडित अरविंद पारिख और पंडित लक्ष्मण रॉव पंडित

ग्रेट मास्टर्स ऑफ हिंदुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक सीरीज पर परियोजना के एक हिस्से के रूप में, इ.गाँ.रा.क.के. ने जुलाई, 2014 में दो संगीत गुरुओं पर डीवीडी जारी की। पहली 'पंडित अरविंद पारिख' पर 12 जुलाई, 2014 को और दूसरी 'पंडित लक्ष्मण कृष्णाराव पंडित' पर 24 जुलाई, 2014 को जारी की गयी थी। पंडित अरविंद पारिख की डीवीडी जारी करने संबंधी समारोह रंगेस्वर सभागार, मुंबई में आयोजित किया गया था, जिसके बाद उनके शिष्यों द्वारा संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

'पंडित लक्ष्मण राव पंडित' पर डीवीडी जारी की गई।

पंडित लक्ष्मण कृष्णाराव पंडित पर डीवीडी इ.गाँ.रा.क.के. सभागार में सुश्री शोवना नारायण (प्रसिद्ध कथक नृत्यांगा और इ.गाँ.रा.क.के. की ट्रस्टी) ने जारी की थी। बाद में पंडित जी ने इ.गाँ.रा.क.के. सभागार में एक मनमोहक प्रस्तुति की, जिसमें उनका साथ उस्ताद फैयाज खान (तबला) और पंडित भूषण गोस्वामी (सारंगी) ने दिया।

5. स्वामी विवेकानंद के जीवन पर (लाइफ ऑफ स्वामी विवेकानंद) कठपुतली प्रदर्शन

स्वामी विवेकानंद के जीवन पर एक कठपुतली शो रामकृष्ण मिशन कार्यालय में विवेकानंद सभागार में 31 जुलाई, 2014 को आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम प्रदर्शन के लिए अनेक स्कूलों को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम स्वामी विवेकानंद की 150वीं जन्म शताब्दी के रूप में पूरे वर्ष मनाए जाने वाले उत्सव का एक हिस्सा था। कठपुतली शो का उद्देश्य स्वामी विवेकानंद के जीवन के संदेशों को युवाओं तक पहुंचाना है, जिससे कि वे और अधिक परिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकें। शो का सृजन रामकृष्ण मिशन, नई दिल्ली के निकट मार्गदर्शन में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर द्वारा किया गया था।

'स्वामी विवेकानंद के जीवन पर' कठपुतली शो।

6. ओट्टाम्थुल्लल

स्पिक मैके के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. ने 31 अक्तूबर, 2014 को केरल की नृत्य नाटिका ओट्टाम्थुल्लल की प्रस्तुति की मेजबानी की। जबकि इस शैली की चाल और मुद्रा प्राचीन शास्त्रीय मूलपाठ पर आधारित है, गीत मलयालम में हैं। प्रसिद्ध कलाकार श्री मोहन कृष्णन और

उनकी मंडली ने महाभारत के कल्याणसौंगंडिकम की कहानी प्रस्तुत की। मंडली ने पूरे सप्ताह में दिल्ली के अनेक स्कूलों में भी कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

'ओट्टम्थुल्लल– केरल की नृत्य–नाटिका' पर प्रस्तुतीकरण ।

7. पूर्वोत्तर पर्व

इ.गाँ.रा.क.के. ने 7–10 नवंबर, 2014 से पूर्वोत्तर पर्व की मेजबानी की। कार्यक्रम का आयोजन गृह मंत्रालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय और एनजीओ के सहयोग से किया गया और ट्रेंड एमएमएस का उद्घाटन केन्द्रीय पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री जनरल वी. के. सिंह और गृह राज्य मंत्री श्री किरेन रिजिजू द्वारा किया गया था। सुश्री एम.सी. मैरी कॉम इस उत्सव की ब्रांड एंबेसडर थी। पूर्वोत्तर क्षेत्र के कलाकारों की चित्रकारी की एक प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, जाज बैंड, व्यंजन, क्षेत्र की फिल्म और हस्तशिल्प, तीन दिवसीय उत्सव का हिस्सा थे। उत्सव का उद्देश्य दिल्ली के लोगों को पूर्वोत्तर की संपन्न संस्कृति और परम्पराओं से अवगत कराना था।

8. राम की शक्ति पूजा

इ.गाँ.रा.क.के. ने रूपवाणी (वाराणसी) के सहयोग से 11 नवंबर, 2014 को एक नृत्य नाटिका 'राम की शक्ति पूजा' पर एक प्रस्तुतीकरण किया। प्रस्तुतीकरण 1936 में प्रख्यात हिंदी लेखक सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की रचना पर आधारित था, जिसमें तीन शास्त्रीय नृत्य शैली, 'छाऊ', 'कथक' और 'भरतनाट्यम' प्रस्तुत की गयी। श्री व्योमकेश शुक्ला (एक प्रसिद्ध कवि, लेखक, अनुवादक) द्वारा निर्देशित वाराणसी के किशोर युवा कलाकारों द्वारा रामायण की कहानियों में से एक पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की। निदेशक कई वर्षों से रूपवाणी से जुड़े हैं और निराला की कविताओं के सत्तर वर्ष पूर्ण होने पर उनकी यादगार के रूप में विषय को चुना गया।

'राम की शक्ति पूजा' पर प्रस्तुतीकरण।

9. स्वर उत्सव–2014

इ.गाँ.रा.क.के. और म्यूजिक टूड़े ग्रुप ने 14–16 नवंबर, 2014 तक स्वर उत्सव–2014 की प्रस्तुति की। दिल्ली के सबसे बड़े भारतीय संगीत उत्सव को ध्यान में रखते हुए, स्वर उत्सव को अनेक वर्षों तक नहीं मनाया गया। इ.गाँ. रा.क.के. के सहयोग से उत्सव को 2014 में पुनः मनाया गया। इसमें हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, भजन, सूफी संगीत, कव्वाली और मिश्रित संगीत की प्रस्तुति की गयी, इसमें वारसी बंधुओं (कव्वाली गायक), के.के. (मुखर गायक), हंस राज हंस (मुखर गायक), उस्ताद शुजात हुसैन खान (कव्वाली गायक), जॉर्ज ब्रूक्स (सेक्सोफोन विशेषज्ञ), अजय प्रसन्ना (बांसुरी विशेषज्ञ) और अनेक अन्य संगीतकर शामिल थे।

10. कथाकार–इंटरनेशनल स्टोरीटेलर्स फेस्टिवल (कथाकार–अंतर्राष्ट्रीय कथावाचक उत्सव)

इ.गाँ.रा.क.के. ने निवेश (एनजीओ) के सहयोग से अपने एंफिथिएटर में 30 जनवरी–1 फरवरी, 2015 तक

'कथाकार–इंटरनेशनल स्टोरीटेलर्स फेस्टिवल' के दौरान यू.के. की कथाकार ने स्कूल के छात्रों के साथ कहानियों को साझा किया।

कथाकार–इंटरनेशनल स्टोरीटेलर्स फेस्टिव का आयोजन किया। उत्सव में देश और विदेश के कथाकारों ने अपनी प्रस्तुति की, इसमें टिंडिवनम, तमिलनाडु से प्रोफेसर वेत्तावनरायन और उनकी मंडली, जिन्होंने 'विल्लूपट्टु' परंपरा की प्रस्तुति की; कलोल, गुजरात से श्री नायक बलदेवभाई डी. और उनकी मंडली, जिन्होंने 'बैठक नि भवई' प्रस्तुत की और इम्फाल, मणिपुर से पदम श्री नामिरकपम ओंगबी इबेमनी देवी, जिन्होंने खोंजोम परबा/पर्व गाया। चार महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय कथाकार थे स्वीडन के कथाकार, यू. के. की सुश्री एमिली पेरिश, जिन्होंने ब्रिटिश द्वीपों की लोक कथाओं, हिन्दू पुराण, पशुओं की कहानियों और स्केण्डिवेनिया क्षेत्र की कहानियों की जानकारी दी; यू.के. की सुश्री साराह रुंडेल ने रेशम मार्ग की कहानियाँ सुनाई; हंगरी के श्री डेनियल हाल ने हंगरी और यूरोप की कहानियाँ सुनाई और अफ्रीकी कहानीकार श्री गोडफ्रे डंकन (टीयूयूपी), यू.के. ने अफ्रीका की अपनी कहानियों से श्रोताओं को आनंदित किया।

दिनांक 30–31 जनवरी को स्कूल के बच्चों के लिए सत्र सुबह को आयोजित किए गए और 30, 31 जनवरी तथा 01 फरवरी, 2015 को आम जनता के लिए शाम को सत्र आयोजित किए गए। उत्सव में बाहरी आगंतुकों के साथ–साथ सरकारी और निजी स्कूलों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया।

11. त्यागराज आराधनाई

त्यागराज आराधनाई पर एक संगीत समारोह 01 फरवरी, 2015 को इ.गाँ.रा.क.के. के खुले लॉन में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर संगीत कलाचार्य श्रीमती सुगुणा वरदाचारी और उनकी मंडली ने पंच रत्न कृतियां गाई। यह दूसरा वर्ष है जब इ.गाँ.रा.क.के. ने आराधनाई की मेजबानी की।

12. डॉ. एन. राजम और विदूषी श्रीमती शन्नो खुराना पर डीवीडी जारी

इ.गाँ.रा.क.के. ने मास्टर्स ऑफ हिंदुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक सीरीज के गुरुवों के अधीन 25 महान गुरुवों को रिकॉर्ड किया। भारत की सांस्कृतिक विरासत के सम्पन्न स्रोत का प्रसार करने के एक प्रयास के रूप में संगीतकारों पर रिकॉर्डिंग के कुछ चुनिन्दा हिस्सों को डीवीडी के रूप में जारी किया जा रहा है। इस प्रकार की प्रत्येक डीवीडी की श्रृंखला में एक पुस्तिका, किसी संगीत वैज्ञानिक या संगीत समलोचक द्वारा लिखितय कलाकार का लघु परिचय और उसकी संगीत शैली का समावेश होता है।

ओमकारनाथ ठाकुर ऑडीटोरियम, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में 6 फरवरी, 2015 को कलाकारों द्वारा एक कार्यक्रम के साथ डॉ. एन. राजम पर डीवीडी जारी की गई। इ.गाँ.रा.क.के. में 25 फरवरी, 2015 को कलाकारों द्वारा एक संगीत कार्यक्रम के साथ 'डॉ. शन्नो खुराना' पर डीवीडी जारी की गई।

वाराणसी में 'डॉ. एन. राजम' पर संगीत डीवीडी जारी की गई।

विदुषी श्रीमती शन्नो खुराना पर डीवीडी जारी की गई।

13. स्वरालय

इ.गाँ.रा.क.के. के सहयोग से 8 मार्च, 2015 को स्वरालय द्वारा दो शास्त्रीय कर्नाटक गायन संगीत समारोहों का आयोजन किया गया। डॉ. एम.एस. लक्ष्मी प्रिया (आईएएस अधिकारी) और डॉ. के. राधाकृष्णन (पूर्व अध्यक्ष, इसरो) कार्यक्रम के कलाकार थे; उनके संगतकारों में क्रमशः श्री वी.एस. के. अन्नादुरै और श्री अतुल नाथ एम.एस. वायलिन पर और श्री कुंभकोणम एन पद्मनाभन 'मृदंगम' पर थे।

अन्य कार्यक्रम

क) स्वस्ति – इ.गाँ.रा.क.के. की दुकान

एचएचईसी (भारतीय हस्तशिल्प और हथकरघा निर्यात निगम) के सहयोग से 25 सितंबर, 2014 को पहली बार इ.गाँ.रा.क.के. में स्वास्ति नाम की एक हस्तकला की दुकान खोली गई। कार्यक्रम का उद्घाटन इ.गाँ.रा.क.के. की ट्रस्टी सुश्री प्रिया पॉल द्वारा किया गया। सुविनियर शॉप में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से हस्तशिल्प वस्तुएं; इ.गाँ. रा.क.के. की डीवीडी और प्रकाशन बिकता है।

स्वास्ति– इ.गाँ.रा.क.के. दुकान का उद्घाटन।

ख) मैजिक ऑफ मेकिंग– डीवीडी जारी

इ.गाँ.रा.क.के. ने 16 दिसंबर, 2014 को प्रो. सी.सी. मेहता ऑडीटोरियम, एम.एस. विश्वविद्यालय, वडोदरा में प्रख्यात कलाकार श्री के. जी. सुब्रमण्यम पर एक वृत्तचित्र जारी किया। श्री गौतम घोष जो कोलकाता से प्रसिद्ध निर्देशक है, द्वारा फिल्म शीर्षक 'मैजिक ऑफ मेकिंग' का निर्देशन किया गया। कलाकार को सम्मानित करने के अवसर पर सुश्री दीपाली खन्ना, सदस्य सचिव, इ.गाँ.रा. क.के., डॉ. मंगलम स्वामीनाथन (कार्यक्रम निदेशक इ.गाँ. रा.क.के.) उपस्थित थे। कार्यक्रम फिल्म की स्क्रीनिंग के साथ संपन्न हुआ जो कि के.जी. सुब्रमण्यम के जीवन काल और कार्य को चित्रकार, म्यूरलिस्ट, मूर्तिकार, प्रिंटमेकर, इलस्ट्रेटर और लेखक के रूप में दर्शाता है। फिल्म 28 दिसंबर, 2014 को नेशनल गैलरी ऑफ माडर्न आर्ट बंगलुरु में इ.गाँ.रा.क.के. -एसआरसी द्वारा बाद में दिखाई गई।

गैर–सहयोगी कार्यक्रमः

ग) रंगाली बिहू त्योहार

असम एसोसिएशन के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा रंगाली बिहू त्योहार का आयोजन 20 अप्रैल, 2014 को किया गया। इस कार्यक्रम में असमिया संगीत, हस्तशिल्प, हथकरघा और पाक–शैली का प्रदर्शन किया गया।

घ) नृत्य–संवाद (डांस डायलॉग)

फ्रांसीसी दूतावास ने नृत्य–संवाद (डांस डायलॉग) नामक समकालीन नृत्य उत्सव के दूसरे संस्करण का आयोजन किया। इसकी एक मुख्य विशेषता रेटोरामोंट कंपनी द्वारा एरियल प्रस्तुति थी, जो 23 अप्रैल, 2014 को इ.गाँ.रा.क.के. के सहयोग से सम्पन्न हुई थी।

ङ) बैसाखी मेला

हर वर्ष की तरह, पंजाबी अकादमी ने 25–27 अप्रैल, 2015 को इ.गाँ.रा.क.के. के परिसर में बैसाखी मेले का आयोजन किया। इस त्योहार में पंजाब प्रदेश से कला और शिल्प, नृत्य, संगीत, पाक–शैली का प्रदर्शन किया गया। देर शाम के दौरान प्रसिद्ध गायकों से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

च) गैलरी श्री आर्ट्स द्वारा प्रदर्शनी

डॉ. मंगलम स्वामीनाथन, कार्यक्रम निदेशक, कलादर्शन प्रभाग, इ.गाँ.रा.क.के द्वारा चित्रकला/मूर्तिकला/स्थापना पर एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। गैलरी श्री आर्ट्स द्वारा शो की व्यवस्था की गई, 24–30 मई, 2014 को ट्विन आर्ट गैलरी–II, इ.गाँ.रा.क. के. में प्रदर्शित किया गया।

छ) निफ्ट के विद्यार्थियों द्वारा प्रदर्शनी

डायलॉग एक ऐसी प्रदर्शनी थी जिसमें राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान से स्नातक की डिग्री प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों (2014 की कक्षाएं) के उत्पादों और अवधारणाओं को प्रदर्शित किया गया। इसका आयोजन 3–4 जून, 2014 तक किया गया।

ज) पुरानी दिल्ली में फ्लेनुएर (फ्लेनुएर इन ओल्ड डेल्ही)

पुरानी दिल्ली में फ्लेनुएर (फ्लेनुएर इन ओल्ड डेल्ही) नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन इ.गाँ.रा.क.के. के माटी घर में गैलरी रंगीनी द्वारा किया गया था। प्रदर्शनी का उद्घाटन मैडम रोवड़ा (टूनीशिया के राजदूत की पत्नी) ने 3 सितंबर, 2014 को किया था और दिल्ली के पुराने शहर पर कलाकार श्री रवीन्द्र दत्त के कार्यों को प्रस्तुत किया गया। प्रदर्शन (शो) 8 सितंबर, 2014 तक चला था।

झ) प्रारम्भ

भारत का पहला विद्यार्थी कला उत्सव 'प्रारम्भ' की मेजबानी 9–12 अक्तूबर, 2014 तक इ.गाँ.रा.क.के. ने की थी। इसमें भारत के विभिन्न कला महाविद्यालयों के 200 विद्यार्थियों की कलाकृतियों को दर्शाया गया था। प्रदर्शित वस्तुओं में रेखा–चित्र, चित्रकारी, छपाई, डिजिटल कला सहित और बहुत कुछ शामिल था। कार्यक्रम का आयोजन आर्ट रूट की सुश्री लुबना सेन द्वारा किया गया था।

ञ) फोटो प्रदर्शनी और संगोष्ठियां/वार्ता

डीडब्ल्यूआईएच हॉरीजन ने 27 अक्टूबर–1 नवंबर, 2014 तक आर्ट मीट्स साइंस पर कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के हिस्से के रूप में प्रदर्शनी, सम्मेलन, कार्यशाला और वार्ता का आयोजन किया गया।

ट) आरबीएस अर्थ हीरोज पुरस्कार 2014

रॉयल बैंक ऑफ स्कॉटलैंड ने इ.गाँ.रा.क.के. के परिसर में 4 नवम्बर, 2014 पर आरबीएस अर्थ हीरोज पुरस्कार 2014 का आयोजन किया।

ठ) गैलरी एस्पेस द्वारा प्रदर्शनी

गैलरी एस्पेस ने एक प्रदर्शनी, ड्राइंग 2014 का आयोजन किया, जिसमें भारतीय समकालीन कला में चित्रकारी के सात दशकों का दर्शाया गया था। शो का संचालन श्री प्रयाग शुक्ला, सुश्री अन्नपूर्णा गरिमेला और सुश्री सिंधूरा डी.एम. द्वारा किया गया था और इसका प्रदर्शन 10 नवंबर से 1 दिसंबर, 2014 तक इ.गाँ.रा.क.के. के प्रदर्शनी हॉल में किया गया था।

ड) बूकारो साहित्य उत्सव

बोकारो चिल्ड्रन'स लिटरेचर फेस्टिवल 2014 (बूकारो के बच्चों का साहित्य उत्सव 2014) 28–30 नवंबर, 2014 तक इ.गाँ.रा.क.के. में आयोजित किया गया था। इस उत्सव के सातवें संस्करण में वार्ताएं, चर्चाएं और लेखकों द्वारा संचालित अनेक गतिविधियां, चित्रकार, कवि, कथावाचक और शिल्पकार शामिल थे। कार्यक्रम को अनेक संस्थानों द्वारा सहायता और सहयोग दिया गया।

ढ) संगीत कार्यशालाएं और कार्यक्रम

दिनांक 16 नवम्बर, 2014 को इ.गाँ.रा.क.के. के परिसर में एक संगीत कार्यशाला और संगीत कार्यक्रम 'षण्मुखानंद संगीत सभा' का आयोजन किया।

ण) राजस्थान का खज़ाना

राजस्थान का खज़ाना (ट्रेजर ऑफ राजस्थान), एक जीवंत प्रदर्शनी का आयोजन इ.गाँ.रा.क.के. और महाराजा सवई मानसिंह II संग्रहालय न्यास तथा फ्रांस दूतावास के सामन्जस्य से 21–22 नवंबर, 2014 को किया गया। इस समारोह का उद्घाटन श्रीमती वसुंधरा राजे, माननीय मुख्यमंत्री राजस्थान के हाथों 21 नवंबर, 2014 को इ.गाँ.रा.क.के. में किया गया। प्रदर्शनी में राजस्थान के चुनिंदा वस्त्रों, नगीनों और आभूषणों, काष्तकारी, साज–सज्जा की वस्तुओं तथा अन्य कलात्मक शिल्प को प्रदर्शित किया गया था।

त) जिप्सी जैज़

जिप्सी जैज़ के नाम से एक आयोजन 22 नवंबर, 2014 को इ.गाँ.रा.क.के. में किया गया। श्री हैरी स्तोज्का और विएना के हॉट क्लब ने इस अवसर पर अपनी प्रस्तुति दी। श्री स्तोज्का ऑस्ट्रीया के एक विख्यात गिटारवादक हैं।

थ) द रॉयल पशमीना

जम्मू–कश्मीर राज्य हथकरघा विकास निगम ने इ.गाँ.रा.क.के. में प्रति वर्ष दिसंबर के महीने में कश्मीर से शॉल पर प्रदर्शनी का आयोजन करता है। वर्ष 2014 में, 3–8 दिसंबर तक शो प्रदर्शित किया गया। श्री खुर्शीद अहमद गनई (वित्त आयुक्त, उद्योग एवं वाणिज्य विकास, जम्मू व कश्मीर सरकार) द्वारा 3 दिसम्बर, 2014 को प्रदर्शनी 'दी रॉयल पश्मीना' का उद्घाटन किया।

द) वैदिक संस्कृति संवर्धन महोत्सव

दी मिशन नामित संगठन द्वारा इ.गाँ.रा.क.के. में 6 दिसंबर 2014 को, वैदिक संस्कृति संवर्धन समारोह, आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. महेश शर्मा (पर्यटन, संस्कृति और नागरिक उड्डयन मंत्री) मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम संस्कृति मंत्रालय, ग्लोबल न्यूज नेटवर्क और

ट्रैवल वर्ल्ड ऑनलाइन द्वारा समर्थित किया गया।

ध) असम सत्र महासभा

असम सत्र महासभा का शताब्दी समारोह का कार्यक्रम 7 दिसंबर, 2015 को इ.गाँ.रा.क.के. के परिसर में आयोजित किया गया।

न) अन्बॉक्स फेस्टिवल 2014

एक अनूठा प्रकार का आयोजन अनबॉक्स फेस्टिवल 2014 की मेजबानी 12–14 दिसंबर 2014 के बीच इ.गाँ.रा.क.के. में की गई जिसे क्विकसैंड एंड ब्लॉट नामक संगठन द्वारा आयोजित किया गया था। इस महोत्सव का लक्ष्य एक मंच पर कलाकारों, डिजाइन विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों और विकास पेशेवरों को लाना था ताकि वे अपने तैयार परियोजनाओं के अनुभवों को साझा कर सकें और बौद्धिक सत्र में शामिल होकर एक नया सृजित भी कर सकें। परियोजनाओं की कड़ी में राजस्थानी शिल्प से लेकर 3डी प्रिंटिंग व लेज़र कटर्स तक की तकनीकी शामिल थी।

प) फोटो प्रदर्शनी

विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने 19–25 दिसम्बर, 2014 से इ.गाँ.रा.क.के. में एक फोटो प्रदर्शनी का आयोजन किया।

फ) वार्षिक कला प्रदर्शनी

साहित्य कला परिषद ने 20–28 दिसम्बर, 2014 से इ.गाँ.रा.क.के. में अपनी स्नातक छात्रों की वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया।

ब) भविष्य का अहसास

एयोन सेंटर ऑफ कॉस्मोलॉजी, तमिलनाडु ने भविष्य का अहसास (दी फ्यूचर ऑफ रिलाइजेशन) विषय पर एक प्रदर्शनी का आयोजना 1–15 जनवरी, 2015 के बीच इ.गाँ.रा.क.के. के माटी घर में किया। इस प्रदर्शनी ने औरोविले में मातृ मंदिर के वास्तविक योजना पर प्रकाश डालते हुए माता के दर्शन के विभिन्न वास्तविक पहलुओं पर जोर दिया। प्रदर्शनी पवित्र ज्यामिति और ब्रम्हाण्डीय प्रतीकों पर आधारित थी। इस अवसर पर 'दी टेन्थ डे ऑफ विक्टरी' पर एक पुस्तक की शुरूआत भी 4 जनवरी, 2015 को प्रदर्शनी के हिस्से के तौर पर की गई। एक प्रश्नोत्तरी सत्र का आयोजन 5 जनवरी, 2015 को किया गया था।

भ) राष्ट्रीय जनजातीय महोत्सव

राष्ट्रीय जनजातीय महोत्सव – 'वनज 2015' का आयोजन जनजाति कल्याण मंत्रालय द्वारा 13–18 फरवरी, 2015 के बीच इ.गाँ.रा.क.के. में किया गया। इस समारोह में आदिवासी कला, संगीत, नृत्य, फिल्म, व्यंजनो, औषधि और इनसे जुड़े अन्य कला व संस्कृतियों का प्रदर्शन किया गया। विशेष फिल्म प्रदर्शन, प्रदर्शनी और सेमीनार का आयोजन इस मौके पर किया गया था। इ.गाँ.रा.क.के. इस भव्य आयोजन के लिए चुने गए तीन स्थानों में से एक था। बाबा खड़क सिंह मार्ग, सेन्ट्रल पार्क, कनॉट प्लेस अन्य दो स्थान थे जहां इस महोत्सव को आयोजित किया गया था।

त्योहार के हिस्से के रूप में एक संगोष्ठी भी 14–17 फरवरी, 2015 को आयोजित की गई। जिसमें भारत की विभिन्न जनजातियों और उनकी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की क्षमता के बारे में चर्चा की गई।

म) वामा 2014–15

साहित्य कला परिषद ने दिल्ली की महिला कलाकारों पर एक प्रदर्शनी 'वामा–2014–15' का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन 27 फरवरी, 2015 को दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल द्वारा किया गया। इसका ध्यान चित्रकारी, मूर्तियों, प्रतिष्ठानों, ग्राफिक्स, वीडियो कला, फोटोग्राफी पर केंद्रित किया गया और 8 मार्च, 2015 तक प्रदर्शित रही।

साहित्य कला परिषद द्वारा 23–28 मार्च, 2015 से एक कलाकार शिविर (आर्टिस्ट कैंप) का भी आयोजन किया गया।

य) लेडी इरविन कॉलेज द्वारा संगोष्ठी

लेडी इरविन कॉलेज के संसाधन प्रबंधन एवं डिजाइन आवेदन विभाग द्वारा 11 मार्च, 2015 को इ.गाँ.रा.क.के. के सभागार में एक संगोष्ठी, 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट' (संधारणीय विकास) का आयोजन किया।

क्षेत्रीय केन्द्र

पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र (ईआरसी), वाराणसी

इस क्षेत्रीय केन्द्र को कलाकोश प्रभाग के कलातत्वकोश श्रृंखला पर काम करने के लिए स्थापित किया गया था। इसने नाट्यशास्त्र के ग्रंथों के संकलन का मौलिक कार्य किया है।

इस क्षेत्रीय केन्द्र का प्रमुख कार्य कलाकोश परियोजना के तहत विविध परियोजनाओं के लिए संदर्भ कार्ड तैयार करना है।

प्रतिवेदन अवधि (अप्रैल, 2014–मार्च, 2015) के दौरान, इस कार्यालय के शैक्षणिक कर्मचारी हमारी मासिक रिपोर्ट के अनुसार, विविध विषयों के विविध संस्कृत ग्रंथों से चयनित केटीके के भावी खंडों की शब्दावली सहित कलातत्वकोश खंड VII भाग, II, से X के लिए विषय कार्ड तैयार करने में व्यस्त रहे। इसके अलावा, वे कलातत्वकोश, खंड VII हेतु सौंपे गये अनुच्छेदों के लेखन व संपादन कार्य में व्यस्त रहे।

कार्डः

- **संदर्भ कार्ड तैयार करना**
  विचाराधीन अवधि के दौरान, हमने उक्त अवधि की हमारी मासिक रिपोर्ट के अनुसार विभिन्न ग्रंथों से चयनित 2190 कार्ड (केटीके आगामी संस्करणों की अन्य शब्दावलियों पर 1188 कार्ड सहित केटीके VII भाग– II पर 135 कार्ड, केटीके VIII के लिए 331 कार्ड, केटीके IX के लिए 212 कार्ड, केटीके X के लिए 304 कार्ड) भेजे हैं। वर्तमान में इ.गाँ.रा.क.के. ईआरसी के पास 69,500 कार्ड है।

- **संदर्भ कार्ड का डिजिटलीकरण**
  विगत वर्ष सभी संदर्भ कार्डों (प्रारंभिक तौर पर 67,000 प्रस्तुत) को इ.गाँ.रा.क.के., ईआरसी द्वारा तैयार किए गए थे जिसमें सीआईएल, इ.गाँ.रा.क.के., नई दिल्ली के विशेषज्ञों ने इसे डिजिटाईज्ड किया था। इस इलेक्ट्रॉनिक डाटा को इ.गाँ.रा.क.के. के वेबपेज से जोड़ा गया है और शोधकर्ताओं के उपयोग के लिए इसे प्रदान किया गया है। इस विद्यमान डाटाबेस के क्रम में हमने इस अवधि के दौरान 3440 कार्डों को सीआईएल को अद्यतन करने हेतु प्रस्तुत किया है।

संपादनः

- **कलातत्वकोश संस्करणः**
  (क) केटीके VII की पूर्णता के मालमें में, इस सत्र के प्रथम तिमाही के अंतिम संपादन में केटीके VII को पूर्ण किया गया और भाषा संपादक को सौंपा गया। दूसरी तिमाही में, भाषा संपादन किया गया और इसमें सुधार/संशोधनों की आवश्यकता को पूर्ण करते हुए शब्दों के अनुक्रम को तैयार किया गया। अंततः तीसरी तिमाही में, केटीके VII के अंतिम सीआरसी को प्रकाशन हेतु 5 अक्टूबर, 2014 को सौंपा गया।

  (ख) केटीके VIII के संपादन के मालमें में। प्राप्त सभी छः लेखों का प्राथमिक संपादन पूर्ण कर लिया गया है और कम्प्यूटर पर लेखों के फीडिंग का कार्य जारी है।

(ii) **नाट्यशास्त्र संस्करण**
प्रथम तिमाही में, नाट्यशास्त्र पांडुलिपि के एकीकरण का कार्य पूर्ण किया गया। दूसरी तिमाह में नाट्यशास्त्र, खंड I के अंतिम संपादन का कार्य किया गया और पदवार इसका अनुक्रम तैयार किया गया। तीसरी तिमाही में नाट्यशास्त्र, खंड I को प्रकाशन हेतु मुख्यालय को 19 नवंबर, 2014 को भेजा गया। चौथी तिमाही में, नाट्यशास्त्र, खंड II की तैयारी का कार्य प्रारंभ किया गया। अब नाट्यशास्त्र, खंड II की सामग्री को कम्प्यूटर में फीड किया जा रहा है।

- **अन्य संस्करण**
  (क) मीनिंग एंड ब्यूटी (अर्थ और सुंदरता): संपादन, भाषा और इस खंड के अन्य सुधार किए गए है। 'परिचय' पर कार्य प्रगति पर है।

  (ख) 'इंडियन एंड वेस्टर्न फिलासफी ऑफ लैंग्वेज' (भाषा का भारतीय और पश्चिमी दर्शन): इस खंड का अंतिम संपादन भाषा संपादक को प्रस्तुत किया गया है; अपेक्षित सुधार पर कार्य किया जा रहा है।

प्रकाशन
कलातत्वकोश खंड VII और नाट्यशास्त्र, खंड I के अंतिम सीआरसी को मुख्यालय में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत किया गया है। अन्य दो खंडों को अगली तिमाही के भीतर भेजा जाएगा।

प्रमुख कार्यक्रम

(i) **कलातत्वकोश की समीक्षा बैठक**
जून माह में, संयुक्त सचिव श्रीमती वीणा जोशी, इ.गाँ.रा.क.के., नई दिल्ली के नेतृत्व में विशेषज्ञों की एक समिति ने इ.गाँ.रा.क.के., वाराणसी का दौरा किया और कलातत्वकोश की समीक्षा बैठक 24–25 जून, 2014 को इसकी स्थिति तथा वाराणसी कार्यालय के शैक्षिक तथा प्रशासनिक कार्यों का जायजा लेने के लिए की। समिति ने अपने सुझाव रिपोर्ट में प्रस्तुत किए हैं, जिसे मुख्यालय भेजा गया है।

(ii) **स्थापना दिवस समारोहः**
इ.गाँ.रा.क.के. ईआरसी ने 11 जुलाई, 2014 को 26 स्थापना दिवस कार्यक्रम मनाया। इस अवसर पर प्रो. राज कुमार और प्रो. संजय कुमार द्वारा दो विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया और दोनों व्याख्यान दिए गए। विस्तृत रिपोर्ट प्रधान कार्यालय में भेजी गई है।

(iii) **रामनगर में रामलीला का प्रलेखन** 7 सितंबर–10 अक्टूबर, 2014 को इ.गाँ.रा.क.के. की विशेषज्ञ टीम द्वारा पूरा किया गया जिसे ईआरसी द्वारा समन्वित किया गया।

(iv) **नई दिल्ली परिसर के इ.गाँ.रा.क.के., ईआरसी एवं उद्घाटन कार्यक्रम के स्थान में परिवर्तन**

अक्टूबर 2014 में, ईआरसी को पीवीआरआई परिसर में परिवर्तित किया गया और नए कार्यालय का कार्य प्रारंभ करने के लिए गणेश पूजन का आयोजन 30 अक्टूबर, 2014 को किया गया। दिनांक 27 नवंबर, 2014 को एक उद्घाटन कार्यक्रम का आयोजन नए कार्यालय में किया गया। श्रीमती सुचित्रा गुप्ता ने इस अवसर पर एक संगीत वृंद 'संगीत संध्या' की प्रस्तुति की। इस समारोह की अध्यक्षता श्रीमती वीणा जोशी, सह संयुक्त सचिव, इ.गाँ.रा.क.के. ने की। इस समारोह की रिपोर्ट मुख्यालय को भेजी गई है और इसे इ.गाँ.रा.क.के. के वेबपेज में भी डाला गया है।

ईआरसी, वाराणसी के नए कार्यालय का उद्घाटन

(v) **सांस्कृतिक महोत्सव – संस्कृति**

दिसंबर में इ.गाँ.रा.क.के. ने सांस्कृतिक महोत्सव – संस्कृति में संगीत नाटक अकादमी, साहित्य अकादमी और ललित कला अकादमी के तत्वावधान में हिस्सा लिया जिसे विजुअल आर्टस संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में 25–27 दिसंबर, 2014 के बीच आयोजित किया गया था। इस अवसर पर तीन प्रकार की भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था: (1) इ.गाँ.रा.क.के. के प्रकाशनों की प्रदर्शनी सह बिक्री काउन्टर स्थापित की गई थी, (2) बृहदिश्वरा मंदिर, तंजावुर पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई थी, और (3) 9 वृत्तचित्र फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। सदस्य सचिव ने इस आयोजन में हिस्सा लिया। इसकी विस्तृत रिपोर्ट मुख्यालय को भेजी गई है।

'संस्कृति उत्सव', वाराणसी

(vi) बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर पर एक माह लंबी प्रदर्शनी का आयोजन इ.गाँ.रा.क.के., ईआरसी, वाराणसी में मनमंदिर ऑब्जर्वेटरी, दशास्वमेध,, वाराणसी में 1–31 जनवरी, 2015 के बीच किया गया। इस आयोजन की रिपोर्ट एवं फोटोग्राफ्स इ.गाँ.रा.क.के. के वेबपेज पर डाले गए हैं।

(vii) कलातत्वकोश VIII में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 24–25 फरवरी, 2015 को इ.गाँ.रा.क.के., नई दिल्ली में किया गया। इस अवसर पर 22–26 फरवरी, 2015 को सहायक प्रोफेसर ग्रेड I और वरिष्ठ परियोजना एसोसिएट ने सलाहकार, इ.गाँ.रा.क.के., ईआरसी के साथ प्रधान कार्यालय का दौरा किया। रिपोर्ट दिल्ली कार्यालय में जमा कर दी गई है।

(viii) कलातत्वकोश के भविष्य संस्करणों (IX से XII) तैयार करने के लिए 26 फरवरी को समन्वयकों की बैठक प्रधान कार्यालय में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रो. आर. एन. मिश्र ने की। बैठक का कार्यवृत्त दिल्ली कार्यालय को भेजा गया है।

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र, (एसआरसी) बंगलुरु

संदर्भ पुस्तकालय

संदर्भ पुस्तकालय में मानविकी और कला पर पुस्तकों का विशाल संकलन है जिसमें संस्कृत, पाली, फारसी और अरबी पांडुलिपियों; दर्शनशास्त्र, धर्म, रीतिरिवाजों, इतिहास और मानव विज्ञान, कला एवं साहित्य इत्यादि पर माइक्रोफिल्में व रेप्रोग्राफी भी शामिल है। वर्तमान में एसआरसी पुस्तकालय में 11680 पुस्तकें हैं।

अधिग्रहण: पुस्तकालय ने 325 किताबें खरीदी और 132 उपहार स्वरूप प्राप्त कीं।

पुस्तकालय सुविधाओं में तकनीकी अद्यतनीकरन

1) 1038 पुस्तकों को वर्गीकृत एवं सूचीबद्ध और तदनुसार व्यवस्थित किया गया है

2) 1038 पुस्तकों पर बार–कोड लेबल और अन्य पुस्तकालय स्टिकर लगाएं गए हैं

3) 1936 पुस्तकों का डाटा सत्यापन और लेबलिंग जारी है

4) एसआरसी द्वारा नई सेवाओं/सुविधाओं को शुरू किया गया

5) पुस्तकालय सदस्यता – 50 सदस्य पंजीकृत किए गए तथा पुस्तकालय के और सदस्य बनाए गए

6) नई आगमन और मौजूदा गतिविधियों के बारे में उपयोगकर्ता जागरुकता सेवा इ.गाँ.रा.क.के., एसआरसी में शुरू की गई

7) ओपीएसी सुलभता हेतु डेस्कटॉप टमिनर्स की सुविधा प्रदान करने और साथ ही फोटोकॉपी की सेवाओं को पंजीकृत सदस्यों हेतु प्रारंभ की गई हैं

8) एसआरसी पुस्तकालय सूची अब नियमित रूप से अद्यतन और ऑनलाइन अपलोड की जाती है।

रिप्रोग्राफी

एसआरसी को मुख्यालय से 13,500 ड्यूप्लीकेट माइक्रोफिल्में प्राप्त हुई थी। इन्हें पुनर्व्यवस्थित किया गया, जिसका कार्य पिछले वर्ष प्रारंभ हुआ और वर्तमान में भी यह जारी है। माइक्रोफिल्मों को केन्द्रवार व्यवस्थित किया जा रहा है। माइक्रोफिल्म रीडर प्राप्त करने की बहुप्रतीक्षित मांग को पूरा करने के लिए एसआरसी को एक मुख्यालय से प्राप्त हुआ है। शोधकर्ता इस रीडर का उपयोग माइक्रोफिल्मों का विभिन्न केन्द्रों से संदर्भ प्राप्त करने के लिए कर रहे हैं।

डिजिटल ऑडियो विजुअल अभिलेखागार

टीएजी कंपनियों के समूह के सहयोग से जिसकी स्थापना मद्रास म्यूजिक अकादमी, इ.गाँ.रा.क.के., दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र पर डिजिटल लिसनिंग आर्काइव के लिए की गई थी, और यहां एक ऑडियो विजुअल आर्काइवल केन्द्र भी स्थापित किया गया है। श्री आर.टी.चारी, टीएजी कार्पोरेशन के प्रबंध निदेशक, जिन्होंने टीएजी संगीत अकादमी की स्थापना की है, ने हमारे साथ कर्नाटक संगीत की 1000 घंटों की लाइव

विंटेज संगीत का डिजिटल लिसनिंग आर्काइवः इ.गाँ.रा.क.के., दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र का ऑडियो विजुअल आर्काइवल केन्द्र

रिकॉर्डिंग करने पर सहमति दी है वह भी 1930 से प्रारंभ करते हुए। ये उनके व्यक्तिगत संकलनों में से है जो उन्होंने बहुत मेहनत से एकत्र किए हैं और इसमें 30 से अधिक वर्ष लगे हैं, तथा उन्होंने इसे डिजिटाइज एवं सूचीबद्ध भी किया है। कई कलाकार जिसमें चेमबाई वैद्यनाथ भागावतार, एम. एस. सुबलक्ष्मी, डी. के. पट्टाम्मल, के. वी. नारायणस्वामी, अलाथुर ब्रदर्स, सेम्मंगुड़ी श्रीनिवासाअईय्यर, एम. डी. रामनाथन और अन्य को इन संकलनों में शामिल किया गया है और साथ ही समकालीन कलाकारों की रचनाएं भी सम्मिलित की गई हैं। उन्होंने बहुमूल्य चित्रकारी पर भी योगदान दिया है और वॉल–टू–वॉल मुरल चित्रकारी में भारतीय संगीत को प्रदर्शित किया है, जिसमें श्री एस. राजम भी शामिल हैं जो इस आर्काइवल केन्द्र कक्ष की दीवार पर सुसज्जित है। सभी हास्यचित्रों को श्री एस.संकरा नारायणा द्वारा बनाया गया है जो कि आकाशवाणी के एक सेवानिवृत्त केन्द्र निदेशक हैं।

उनके संकलनों के अलावा, श्री विक्रम सम्पत ने पुराने ग्रामोफोन रिकॉर्डिंग्स हेतु आर्काइव ऑफ इंडियन म्यूजिक (एआईएम) मे से अपनी निजी आर्काइवल संग्रह को दान किया है। इन फीचर रिकॉर्डिंग्स में 1902 के समय से हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत, लोक गीत, शुरूआती सिनेमा व उनकी रिकॉर्डिंग्स, देशभक्ति गीत और नेताओं के भाषणों की रिकॉर्डिंग्स मौजूद हैं।

इनमें से कई में सर्वाधिकार के मामले के चलते, इन संग्रहों को ऑनलाइन उपलब्ध नहीं कराया जा सकेगा लेकिन लोग केन्द्र में आकर इन्हे प्राप्त कर सकते और लिसनिंग कियॉस्क में हेडफोन के माध्यम से इन्हें सुन सकते हैं, जो कि पूर्णतया निःशुल्क है।

केन्द्र द्वारा निम्नलिखित का आयोजन किया गयाः
प्रदर्शनियां/व्याख्यान/संगोष्ठियां और फिल्म स्क्रीनिंगः

1) इ.गाँ.रा.क.के. ,एसआरसी ने बंगलुरु में 'बृहदेश्वरः दी मोन्यूमेंट एंड दी लिविंग ट्रेडिशन (बृहदेश्वरः स्मारक और जीवंत परंपरा) शीर्षक से एक प्रदर्शनी आयोजित की जिसमें विगत दो दशकों के दौरान 1000 साल पुराने अभिलेखीय चमत्कारों और यूनेस्को विश्व विरासत साइट पर इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा किए गए अनुसंधानों एवं दस्तावेजीकरणों पर आधारित था। बंगलुरु में इस प्रदर्शनी का उद्घाटन तत्कालीन राज्यपाल महोदय डॉ. एच.आर. भारद्वाज द्वारा किया गया। बाद में इस प्रदर्शनी को कोयम्बटूर और चेन्नई भेजा गया।

2) बृहदेश्वर प्रदर्शनी के साथ–साथ एसआरसी ने मंदिरों के इतिहास पर व्याख्यान का आयोजन किया जिसमें विख्यात शोधकर्ता/इतिहासविद डॉ. चित्रा माधवन ने हिस्सा लिया, 'मंदिर और शिलालेख'; श्री प्रदीप चक्रवर्ती, 'मंदिरों पर पुराने ब्रिटिश फोटोग्राफ्स एवं चित्रकारी'; डॉ. पद्मा सुब्रहमणियमोन, 'तंजावुर मंदिर का करण शिलालेख' एवं श्रीमती शीला श्रीप्रकाश ने 'बड़े मंदिरों की चमत्कारी वास्तुकला' पर व्याख्यान दिया। कर्नाटक संगीत पर एक संगीत समारोह का आयोजन भगवान बृहदेश्वर की स्तुति में श्रीमती सुमित्रा नीतिन द्वारा बंगलुरु में किया गया।

3) विन्टेज फोटोग्राफी प्रदर्शनी, राजा दीन दयाल, का आयोजन नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट (एनजीएमए) में विख्यात इतिहासकार डॉ. रामचंद्र गुहा द्वारा किया गया। श्री सुधाकर राव, डॉ. हिमानी पांडे, श्री के.जी. कुमार, निदेशक, एनजीएमए (बंगलुरु) एवं श्री विक्रम सम्पत ने इस अवसर पर उपस्थित थे।

4) इ.गाँ.रा.क.के. ने जयमहल पैलेस बंगलुरु में टाइम्स इंटरनेशनल फोक फेस्टिवल 2014 में सहकार्य किया। इस अवसर पर फुलकारी एवं गोंड चित्रकारी पर एक विशेष प्रदर्शनी का आयोजन इ.गाँ.रा.क.के. के संग्रहों के साथ किया गया जिसे लोगों ने काफी सराहा।

5) कर्नाटक चलनचित्र एकेडमी के संयुक्त तत्वावधान में एसआरसी ने दिवंगत ज्ञानपीठ विजेता डॉ. यू. आर. अनंथमुर्थ्यात पर एक फोटो प्रदर्शनी का आयोजन किया जो कि बंगलुरु साहित्य महोत्सव के तीसरे संस्करण में क्राउने प्लाजा लॉन में किया गया।

6) सभी दक्षिणी राज्यों में कला एवं संस्कृति के विभिन्न पहलुओं और विभिन्न कलाओं के स्वरूपों की खोज करने के लिए इ.गाँ.रा.क.के., एसआरसी ने बंगलुरु इंटरनेशनल सेंटर में 28 जून, 2014 को अपनी 'दक्षिण भारत विरासत व्याख्यानमाला' प्रारंभ की। प्रथम व्याख्यान 'रॉक कट स्कल्पचर ऑफ बादामी केव्स' पर वास्तुविद एवं शोधकर्ता श्रीमती नलीनी केम्भावी द्वारा दिया गया। इ.गाँ.रा.क.के. की डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'द टॉकिन्ग रॉक्स ऑफ बादामी– रॉक कट स्कल्पचर ऑफ बादामी केव्स' का प्रदर्शन भी इस अवसर पर किया गया।

दक्षिण भारत विरासत व्याख्यानमाला –'द टॉकिन्ग रॉक्स ऑफ बादामी– रॉक कट स्कल्पचर ऑफ बादामी केव्स'

7) इस कड़ी में एसआरसी ने चार व्याख्यानों का आयोजन किया। अगस्त 2014 के दौरान एक सचित्र वार्ता 'सत्रियाः असम का शास्त्रीय नृत्य' विख्यात शोधकर्ता, नृत्य इतिहासकार एवं आलोचक डॉ. सुनील कोठारी द्वारा प्रस्तुत किया गया। व्याख्यान के साथ फिल्मों और मठों में भिक्षुओं द्वारा नृत्य के अंशो को भी प्रदर्शित किया गया। सत्र की अध्यक्षता विख्यात नर्तक, कोरियोग्राफर एवं शिक्षक, डॉ. माया राव ने की।

8) तीसरा व्याख्यान 'तंजौर चित्रकारी–जो चकमता है वह सोना है' पर आयोजित था, जिसे श्री प्रदीप चक्रवर्ती ने 13 सितंबर, 2014 को प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने उपाख्यानों और तंजावुर पर दिलचस्प ऐतिहासिक तथ्यों के माध्यम से श्रोताओं को बांधे रखा, साथ ही इसकी ऐतिहासिक चित्रकला और विषयवस्तु पर जोर दिया।

9) चौथा व्याख्यान 'दक्षिण भारत की देवदासी विरासत' विषय पर आयोजित था जिसे श्रीमती लक्ष्मी विश्वनाथन ने 8 नवंबर, 2014 को दिया।

10) 'क्या हम भारतीय अपनी सभ्यता की अनदेखी कर रहे हैं

जिसे पश्चिम उपयुक्त मान रहा है?' पर व्याख्यान डॉ. राजीव मल्होत्रा द्वारा किंचा सभागृह, भारतीय विद्या भवन, बंगलुरु में दिया गया, जो कि इस व्याख्यानमाला का ही हिस्सा था।

11) एसआरसी ने केरल की सबसे पुरानी शैली – 'कूदियट्टम' एवं 'पावकथकली' पर चार–दिवसीय मंचन का आयोजन किया। नाटना कैराली के संस्थापक श्री गोपाल वेणु द्वारा निर्देशित पावकथकली का मंचन महाभारत की कड़ियों – 'दुर्योधन वधम' तथा 'कल्याण सौगंधिकम' से लिया गया था। पावकथकली अथवा केरल की पारंपरिक ग्लोव पपेटरी पिछले दो दशकों से केरल में प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य थिएटर के प्रभाव के माध्यम से प्रचलन में रहा है, जिसे कथावाचन के तौर पर कठपुतलियों में शामिल किया गया है।

5 प्रदर्शनों का मंचन किया गया। गणेश पार्क, येलाहांका में वाईयूवीए के सहयोग से सार्वजनिक प्रदर्शन का आयोजन किया गया और स्पिक मैके के सहयोग से बंगलुरु के 4 स्कूलों में 14–15 जुलाई, 2014 को आयोजित किया गया। प्रत्येक स्कूल के छात्रों ने इसमें भाग लिया। 16 जुलाई, 2014 को कूदियट्टम प्रदर्शन में भाषा द्वारा एलाएंस फ्रांकाएस डे बंगलुरु में काफी भीड़ के बीच 'तोरानायुद्धम' का मंचन 'अभिषेकनाटक' (एक्ट III) में से किया गया। 'कूदियट्टम' जो भी भारत के सबसे पुराने थिएटरों में से एक है संस्कृत में मंचन करता है, और इसका 2000 वर्षों का प्रमाणिक इतिहास रहा है तथा इसे यूनेस्कों द्वारा मानवता के मौखिक और अमूर्त विरासत की एक उत्कृष्ट कृति के तौर पर पहचान भी प्राप्त है।

12) स्वदेशी कला पुनरुद्धार केन्द्र (सीएफआरआईए), इ.गाँ.रा.क.के., एसआरसी ने कर्नाटक के पारंपरिक लोक कला 'चित्तारा पेन्टिंग्स' पर 3 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। लक्षमक्का, सागर जिले के एक कलाकार ने बंगलुरु के विभिन्न कला शैक्षणिक संस्थानों से 35 उत्साही विद्यार्थियों को इसकी विभिन्न कलाओं के बारे में सिखाया। कार्यशाला में भाग लेने वाले ये विद्यार्थी चित्रकला परिषद, विजुअल आर्ट डिपार्टमेंट ऑफ बंगलुरु विश्वविद्यालय, केन स्कूल ऑफ आर्ट्स एवं कलामंदिर स्कूल ऑफ आर्ट्स आदि से थे। प्रतिभागी विद्यार्थियों ने एक पारंपरिक लोक गीत भी गाया और इ.गाँ.रा.क.के., एसआरसी के लिए एक विस्मरणीय अनुभव बना दिया।

13) कर्नाटक (ऊपीनाकुंदरू, कुंडापुरा तालुका) की कठपुतली यक्षगणा 'यक्षगान गोम्बेयटा', इस कला के सर्वोत्तम प्रतिपादक श्री भास्कर कोग्गा कामथ ने 11 अगस्त, 2014 को इ.गाँ.रा.क.के., एसआरसी की रंगभूमि में कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। कलाकारों ने 'चूड़ामणिः लंका दहन' की घटना का प्रदर्शन किया। शो प्रदर्शन बंगलुरु के विभिन्न शिक्षा संस्थानों में किया गया, जैसे कि विद्यानिकेतन स्कूल, मीराम्बिका स्कूल और सिंबायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ मीडिया एंड कम्यूनिकेशन और इसे विद्यार्थियों ने बहुत सराहा।

14) **त्रावणकोर के महाराज स्वाती थिरुनाल** की द्वि–शताब्दी की पुण्य स्मृति में इ.गाँ.रा.क.के., एसआरसी ने प्रिंस राम वर्मा, प्रसिद्ध कर्नाटक संगीतकार और त्रावणकोर के शाही परिवार के वंशज द्वारा 04–05 सितंबर, 2014 को इन्दिरानगर संगीत सभा के सहयोग से महाराजा की रचनाओं पर एक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया था। 60 से भी अधिक विद्यार्थियों ने अपना पंजीकरण करवाया और कार्यशाला में भाग लिया तथा महाराजा की अनेक दुर्गम रचनाओं को सीखा। डॉ. अच्युत शंकरन नायर, 'महाराज स्वाति थिरुनाल के जीवन और समय' पर के व्याख्यान दिया और इसके बाद प्रिंस राम वर्मा ने स्वाति थिरुनाल की रचनाओं पर एक कर्नाटक मुखर संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

15) 22–24 सितंबर, 2014 तक इ.गाँ.रा.क.के. ने संगीत शिक्षा अंतर्राष्ट्रीय सोसाइटी के सहयोग से एनजीएमए, बंगलुरु में **'परिवर्तनकारी संगीत और संगीत शिक्षाः अनुसंधान, नीति और साधना का परिप्रेक्ष्य'** नामक शीर्षक पर एक तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। भारत में आयोजित की जाने वाली इस प्रकार की पहली संगोष्ठी जिसमें शिक्षाविदों, विद्वानों

'परिवर्तनकारी संगीत और संगीत शिक्षाः अनुसंधान, नीति और साधना का परिप्रेक्ष्य' पर संगोष्ठी

और वैज्ञानिकों को पूरे विश्व से सर्वोत्तम साधना को बांटने के लिए एक सामान्य अंतः विषय संबंधी मंच पर एक साथ लेकर आयी है। भागीदारों में देश और विदेश के विद्वान, शिक्षाविद, संगीतकार और संगीत वैज्ञानिक शामिल थे।

भारत में संगीत शिक्षा शास्त्र का पारिस्थितिकी तंत्र; सामाजिक आउटरीच प्रयास और उनके प्रभाव; विशेष आवश्यकताओं और संज्ञानात्मक विकास की वृद्धि के साथ बच्चों की चिंताओं के समाधान में संगीत की भूमिका, संगीत शिक्षा के लिए तकनीक का प्रयोग आदि से संबंधित अनेक रुचिकर विषयों पर तीन दिन तक चर्चा हुई। स्कूली पाठ्यक्रम में संगीत शिक्षा के लिए सरकारी निकायों के प्रति कार्यनीतियों पर चर्चा करने के लिए अनेक कार्यकारी समूह बनाए गए थे।

16) संगोष्ठी के अवसरों पर भारत रत्न एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के जन्म शताब्दी सप्ताह में उनकी यादगार में विषयगत संगीत समारोह आयोजित किया गया, जिसमें 'एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी की यादगार' नामक शीर्षक के रूप में 22 सितंबर, 2014 को एलाइन्स फ्रेंकेज में कर्नाटकी संगीतकार डॉ. दीप्ति नवरत्न द्वारा एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया था। इसे डॉ. नवरत्न के कारनेटिक एलकेमी के साथ मिलकर इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा आयोजित किया गया था, जिन्होने कर्नाटकी 'कृतिस' प्रस्तुत किया और दंतकथाओं में लोकप्रिय अनेक भाषाओं में गीत भी प्रस्तुत किए।

17) एसआरसी ने 1 नवंबर, 2014 को 'कन्नड़ राज्योत्सव' के अवसर पर, श्री केरेमने शिवानंद हेगड़े और ट्रूप द्वारा यक्षगान प्रदर्शन 'वाली मोक्ष' का आयोजन किया।

18) एआरटेरी के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के., एसआरसी ने चेन्नई में डॉ. टी.एस. सत्यवती द्वारा मैसूर के महाराजाः श्री जयचामराजा वाडियर की रचनाओं पर एक कार्यशाला आयोजित की। इसके साथ–साथ मैसूर के महाराजाः श्री जयचामराजा वाडियर के जीवन, समय और कार्यों' पर डॉ. मीरा राजाराम प्रणेश ने एक व्याख्यान दिया, इसके बाद नरदा गण सभा, चेन्नई में डॉ. टी.एस. सत्यवती द्वारा महाराजा की रचनाओं पर एक संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया था।

19) टीएजी ग्रुप ऑफ कंपनीज और श्री ए.टी. चारी के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. ने एक दृश्य–श्रवण केन्द्र की स्थापना की है, जिसमें विंटेज संगीत सुनने के लिए एक बहुत बड़ा डिजिटल अभिलेखागार है।

20) आधुनिक कला राष्ट्रीय गैलरी के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. ने श्रीमती मीना दास नारायण द्वारा निर्देशित श्री कलामंडलम गोपी के जीवन पर 'एक उस्ताद का निर्माण' नामक शीर्षक पर एक घंटे का एक वृत्तचित्र दिखाया। इस अवसर पर फिल्म की निर्देशक ने इस फिल्म निर्माण के संबंध में अपने अनुभवों को बांटा।

21) इ.गाँ.रा.क.के., दक्षिणी क्षेत्र केन्द्र ने बंगलुरु में पूर्वोत्तर संस्कृति पर इस प्रकार के पहले कार्यक्रम इशान्य की मेजबानी की। 28 मार्च, 2015 को माननीय केन्द्रीय रसायन और उर्वरक मंत्री श्री अनंत कुमार ने उत्सव का उद्घाटन किया। 28–29 मार्च, 2015 दो दिनों में पूर्वोत्तर के 100 से भी अधिक कलाकारों ने अपने क्षेत्र की नृत्य और संगीत परम्पराओं को प्रस्तुत किया। इसमें मणिपुर की 'रास लीला', आसाम की 'सतरिया', सिक्किम की 'टेमेंगों सेलो', नागालैंड की 'अपिलो कुवो', मिजोरम का 'चेरवा नृत्य' त्रिपुरा का 'होजागिरा', अरुणाचल का 'रेखम पाड़ा' शामिल है। कार्यक्रम में देश के शेष हिस्से के साथ पूर्वोत्तर को जोड़ने पर व्याख्यान, पैनल चर्चा–चुनौतियाँ और अवसर शामिल हैं। कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में दर्शकों को लुभाने के लिए 'बास्केटरी' पर प्रदर्शनी और फिल्म का प्रदर्शन किया गया था।

इ.गाँ.रा.क.के.– एसआरसी– बंगलुरु में 'ईशान्य पूर्वोत्तर सांस्कृतिक समारोह में' अरूणाचल प्रदेश का रिकम पाडा नृत्य।

शैक्षिक परियोजनाएं

क) 'तेवारम' – तेवारम का तात्पर्य तिरुमुरई के प्रथम सात संस्करणों से है, जो कि तमिल सैव भक्ति काव्य संकलन के 12 संस्करणों में से हैं। सभी सात संस्करणों को 7वीं सदी के तीन सबसे विख्यात तमिल कवियों को समर्पित किया गया है जो थे नयनार्स–समबन्दार, तिरुनवूक्करासार और सुन्दरार। तेवारम का गान वांशिक

अभ्यास के तौर पर तमिलनाडु के शिव मंदिरों में जारी है। यह परियोजना समझौता–ज्ञापन हस्ताक्षर के स्तर पर है।

ख) विगत वर्ष, एसआरसी द्वारा यह प्रयास किया जा रहा था कि विभिन्न परियोजनाओं को पुनः जीवित करें और उनके स्थिति का मूल्यांकन करें जिन्हें किन्हीं कारणों से अपूर्ण छोड़ दिया गया था और वे पूर्णता के विभिन्न स्थितियों में हैं। एसआरसी कई शोधकर्ताओं से संपर्क करता है जो इन परियोजनाओं से जुड़े थे ताकि उनकी सहायता इनके निर्दिष्ट समयावधि और राशि के भीतर त्वरित पूर्णता के लिए लिया जा सके। तदनुसार दो परियोजनाएं, 'मेलुकोटे तीर्थ पर मंदिर परंपरा एवं त्यौहार' तथा 'दक्षिण भारत की मुरल चित्रकारी', को पुनर्जीवित किया गया है और ताजा समझौता–ज्ञापन इन परियोजनाओं के निश्चित समयावधि में पूर्णता के लिए हस्ताक्षर किए गए हैं।

सूत्रधार

सूत्रधार, इ.गाँ.रा.क.के. हेतु सुविधा प्रणाली के तौर पर कार्य कर रहा है, ताकि इ.गाँ.रा.क.के. के घोषणा–पत्र में निर्दिष्ट इसके उद्देश्यों को पूरी तरह प्राप्त किया जा सके। सूत्रधार सभी प्रभागों के कार्यों में प्रशासनिक और वित्तीय सहायता हेतु उत्तरदायी है। इस इकाई द्वारा प्रभागों से प्राप्त परियोजना प्रस्तावों की जांच की जाती है जिससे कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे निर्धारित दिशानिर्देशों का अनुपालन कर रहे हैं। यह वित्तीय अनुदान और मंत्रालय के निर्देशों के कार्यान्वयन के संबंध में संस्कृति मंत्रालय से भी समन्वय स्थापित करता है।

ई.गॉ.रा.क.के. ने मनाया 'हिंदी पखवाडा'

अनुबंध I

31 मार्च, 2015 के अनुसार न्यासी बोर्ड की सूची

1. श्री चिन्मय आर. घारेखान **अध्यक्ष**
   सी–362, डिफेंस कालोनी,
   नई दिल्ली 110 024

2. डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन
   अध्यक्ष, आईआईसी– एशिया प्रोजेक्ट
   इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, 40 मैक्स मूलर मार्ग
   नई दिल्ली 110 003

3. श्री सलमान हैदर
   ए–3, प्रथम तल, पूर्वी निजामुद्दीन
   नई दिल्ली 110 003

4. प्रो. ए. रामचंद्रन
   22, भारती कालोनी
   विकास मार्ग, दिल्ली 110 092

5. डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम
   अध्यक्ष, नृत्योदय एंड एमजी. ट्रस्टी, भारतमुणि
   फाउंडेशन फॉर एशियाई कल्चर
   ओल्ड # 6, चौथा मेन रोड
   गांधीनगर, चेन्नई 600 020

6. श्री रविन्द्र सिंह
   सचिव, भारत सरकार
   संस्कृति मंत्रालय, शास्त्री भवन
   नई दिल्ली 110 015 (पदेन)

7. सुश्री नमिता गोखले
   सी–5/15, सफदरजंग डवलपमेंट एरिया
   नई दिल्ली 110 016

8. डॉ. सुभाष पाणि
   बी–7 एक्सटेंशन
   115, सफदरजंग एन्क्लेव
   (डीयर पार्क के सामने)
   नई दिल्ली 110 029

9. श्री जी.के. पिल्लई
   डी–241, दूसरी मंजिल
   सर्वोदय एन्क्लेव, नई दिल्ली 110 017

10. सुश्री सुकन्या भरतराम
    23–24, मौलसारी एवेन्यू
    वेस्ट एंड ग्रीन फार्म, रजोकरी
    नई दिल्ली 110 038

11. सुश्री शोवाना नारायण
    टी–2, एलएल–103, कॉमनवेल्थ विलेज,
    अक्षरधाम के निकट,
    दिल्ली 110 092

12. सुश्री फिरोज गुजराल
    20 गौरी अपार्टमेंट, राजेश पायलट लेन
    नई दिल्ली 110 011

13. सुश्री प्रिया पॉल
    अध्यक्ष
    एपीजे सुरेंन्द्र पार्क होटल्स लिमिटेड
    एन–80, कनॉट प्लेस
    नई दिल्ली 110 001

14. श्री कुलभूषण खरबंदा
    501, सिल्वर कैस्केड
    माउंट मैरी रोड,
    बांद्रा (पश्चिम), मुंबई 400 050

15. सुश्री फिरोजा जे. गोदरेज
    द ट्रीज, पहली मंजिल
    40–डी, रिज रोड, मालाबार हिल
    मुंबई – 400 006

16. डॉ. सुधा गोपालकृष्णन
    सी–2/16, सफदरजंग डवलपमेंट एरिया
    नई दिल्ली 110 016

17. सुश्री नयनजोत लहरी
    ई–157, सेक्टर 20, नोएडा
    उत्तर प्रदेश – 201301

18. सदस्य सचिव
    (सुश्री दीपाली खन्ना)
    इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
    जनपथ, नई दिल्ली 110 001 (पदेन)

अनुबंध II

31 मार्च, 2015 के अनुसार कार्यकारी समिति के सदस्यों की सूची

1. श्री चिन्मय आर. घारेखान **अध्यक्ष**
   सी–362, डिफेंस कालोनी,
   नई दिल्ली 110 024

2. श्री सलमान हैदर
   ए–3, प्रथम तल
   पूर्वी निजामुद्दीन
   नई दिल्ली 110 003

3. प्रो. ए. रामचंद्रन
   22, भारती कालोनी
   विकास मार्ग
   दिल्ली – 110 092

4. श्री जी.के. पिल्लई
   डी–241, दूसरी मंजिल
   सर्वोदय एन्क्लेव
   नई दिल्ली 110 017
   ईमेलः pillaigopal@hotmail.com
   मोबाइलः 9818193275

5. सुश्री सुषमा नाथ
   डी–95, तीसरी मंजिल
   आनंद निकेतन
   नई दिल्ली 110 021

6. प्रो. हिमांशु प्रभा राय
   अध्यक्ष
   भारतीय राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण
   24, तिलक मार्ग
   नई दिल्ली 110 001

7. सदस्य सचिव
   (सुश्री दीपाली खन्ना)
   इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
   जनपथ, नई दिल्ली 110 001 (पदेन)

अनुबंध III

1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 तक इ.गाँ.रा.क.के. में आयोजित प्रदर्शनियों की सूची

1. इ.गाँ.रा.क.के. के माटी घर में निर्भया–बहु अभिव्यक्तियाँ (निर्भया–मल्टीप्ल एक्सप्रेशंस) का आयोजन 04–18 अप्रैल, 2014 को किया गया।

   100 युवा कलाकारों द्वारा एक कला शिविर के साथ–साथ प्रदर्शनी का अयोजन 6 अप्रैल, 2014 को किया गया।

2. ट्विन आर्ट गैलरी–II में द रिबेल एंड हर कॉजः लाइफ एंड वर्क ऑफ रशीद जहाँ' पर एक प्रदर्शनी 1– 7 मई, 2014 को 'खोली गई।

3. व्याख्यान हॉल के बाहर, 11 मानसिंह रोड में आर्ट फर्स्ट फाउंडेशन द्वारा **आर्टिस्ट मेंटर प्रोग्राम** के कार्य पर 1–3 मई, 2014 को प्रदर्शनी आयोजित की गई।

4. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में डॉ. रक्षंदा जलील द्वारा क्यूरेट **द लाइफ ऑफ रशीद जहाँ अंगरेवाली** 19–24 मई, 2014 को आयोजित की गई थी।

5. इ.गाँ.रा.क.के., (दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र) द्वारा वेंकटप्पा आर्ट गैलरी, बंगलुरु में **'बृहदेश्वरः दी मोन्यूमेंट एंड दी लिविंग ट्रेडिशन (बृहदेश्वरः स्मारक और जीवंत परंपरा)** पर दिनांक 13–22 जून, 2014 को प्रदर्शनी आयोजित की गई।

6. इ.गाँ.रा.क.के. (दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र) द्वारा नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, **बंगलुरु** में **विंटेज फोटोग्राफ्स ऑफ राजा दीन दयाल** प्रदर्शनी 21 जून 2014–20 जुलाई 2014 को आयोजित की गई।

7. इ.गाँ.रा.क.के., (दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र) द्वारा जयमहल पैलेस, बंगलुरू में टाइम्स अंतर्राष्ट्रीय लोक महोत्सव के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. के संग्रह से **फुलकारी और गोंड पेंटिंग्स** पर एक विशेष प्रदर्शनी का आयोजन 8–10 अगस्त, 2014 को किया गया।

8. ट्विन आर्ट गैलरी में कला के लिए अलकाजी फाउंडेशन के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा 'ड्रान फ्रॉम लाइटः अर्ली फोटोग्राफी एंड दी इंडियन सबकॉन्टिनेंट' पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन 19 अगस्त 2014 को (विश्व फोटोग्राफी दिवस) पर किया गया और यह 30 सितंबर, 2014 तक प्रदर्शित थी।

9. मीडिया केन्द्र में विश्व फोटोग्राफी दिवस के अवसर पर **ए विंटेज कैमरा कलेक्शन** पर एक अन्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। यह क्रमशः अगस्त 19–20, 2014 अर्थात दो दिनों के लिए प्रदर्शित थी।

10. यिनचुवान वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट म्यूजियम, चीन में **रॉक आर्ट** पर एक प्रदर्शनी का आयोजन 27 अगस्त, 2014–30 सितंबर 2015, तक किया गया।

11. माटी घर, इ.गाँ.रा.क.के. में **अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी'** प्रदर्शनी का उद्घाटन 8 अक्टूबर, 2014 को किया गया। यह 4 नवंबर 2014 तक प्रदर्शित रही।

12. एआर एंड पीए बिनिएल इन हेरीटेज एंड रेस्टोरेशन मैनेजमेंट शीर्षक के प्रमुख हिस्से के रूप में **'बृहदेश्वरः दी मोन्यूमेंट एंड दी लिविंग ट्रेडिशन (बृहदेश्वरः स्मारक और जीवंत परंपरा)** पर प्रदर्शनी वल्लाडोलिड, स्पेन में लगाई गई। यह 13 नवंबर से 13 दिसंबर, 2014 तक प्रदर्शित रही। इ.गाँ.रा.क.के., एसआरसी ने 15–23 नवंबर, 2014 को कोयंबटूर में भी इस प्रदर्शनी का आयोजन किया।

13. इ.गाँ.रा.क.के. के खुले लॉन में महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय ट्रस्ट द्वारा राजस्थान का खज़ाना

(ट्रेजर ऑफ राजस्थान), पर एक प्रदर्शनी का आयोजन 21–22 नवम्बर, 2014 को किया गया।

14. सेंटर फॉर हेरिटेज ऑफ स्टडी, त्रिपुनिथुरा, केरल में **रॉक आर्ट मोबाइल एक्जीबीशन** का आयोजन 28 नवंबर– 28 दिसंबर 2014 तक किया गया।

15. **कांथाः पोएट्री एम्ब्रॉइर्डेड ऑन क्लॉथ** पर एक प्रदर्शनी इ.गाँ.रा.क.के. में 11–30 दिसम्बर, 2014 को आयोजित की गई।

16. **तंजावुर बृहदेश्वर टेम्पल–दी मोन्यूमेंट एंड दी लिविंग ट्रेडिशन** पर एक प्रदर्शनी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में 25–29 दिसम्बर, 2014 को प्रदर्शित की गई।

17. **बृहदेश्वरः दी मोन्यूमेंट एंड दी लिविंग ट्रेडिशन** पर एक प्रदर्शनी मनमंदिर वेधशाला, दशाश्वमेध घाट, वाराणसी में 1–31 जनवरी, 2014 को आयोजित की गई।

18. रोली बुक्स के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. ने **फोटोग्राफिक एक्जीबीशन ऑन इंडियन पार्टिसिपेंट्स इन वर्ल्ड वॉर I (प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय प्रतिभागियों पर फोटो प्रदर्शनी)** 13 जनवरी से 10 फरवरी 2015 को प्रस्तुत की।

19. **बृहदेश्वरः दी मोन्यूमेंट एंड दी लिविंग ट्रेडिशन (बृहदेश्वरः स्मारक और जीवंत परंपरा)** पर एक प्रदर्शनी टैग सेंटर, चेन्नई, में इ.गाँ.रा.क.के., एसआरसी द्वारा 19–24 जनवरी, 2015 को आयोजित की।

20. ब्रिटिश काउंसिल और इ.गाँ.रा.क.के. ने माटी घर, सी.वी. मैस, जनपथ में **फोक आर्काइव** पर एक प्रदर्शनी 31 जनवरी – 27 फरवरी को खोली गई।

21. **'थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ टेम्पल आर्किटेक्चर इन मिडिवल इंडिया भोजा'स समरांगणसूत्रधारा एंड दी भोजपुर लाइन ड्राइंग्स'** पर पुस्तक विमोचन के हिस्से के रूप में एक प्रदर्शनी, पुस्तक से चित्र एवं इलेस्ट्रेशन्स की भी वयव्स्था 20–27 फरवरी, 2015 कोकी गई।

22. संस्कृति प्रतिष्ठान के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. ने **फ्रॉम अर्थ टू अर्थः डिवोशन एंड टेरेकोटा ऑफ्फरिंग्स इन तमिलनाडु** प्रदर्शनी का आयोजन 20 फरवरी–6 मार्च 2015 को किया।

23. **409 रामकिंकर्स** एक कला थिएटर का स्थापना कार्यक्रम का आयोजन इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा विवादी (वीआईवीएडीआई) के सहयोग से 24 मार्च–6 मई 2015 को किया गया। प्रदर्शन 2 अप्रैल, 2015 तक चला।

24. **ओरल स्टीनः फस्किनेटेड बी दी ओरिएंट** पर एक प्रदर्शनी मार्क ओरल स्टीन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के हिस्से के रूप में 24 मार्च–17 अप्रैल 2015 को आयोजित की गई।

25. **पासीः एवरीडे आर्ट ऑफ नार्थ ईस्ट इंडिया** पर एक प्रदर्शनी इ.गाँ.रा.क.के., एसआरसी में आयोजित की गई। यह 29 मई 2015 तक रही।

अनुबंध IV

1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 तक
इ.गाँ.रा.क.के. में आयोजित व्याख्यान/पुस्तक वाचन सत्र की सूची

क्र.सं.	विषय	अध्यक्ष	दिनांक
1.	निर्भया–बहु अभिव्यक्तियाँ (निर्भया–मल्टीप्ल एक्सप्रेशंस)	श्री जॉनी एमएल और डॉ. पुरुषोत्तम बिलिमेल	6 अप्रैल, 2014
2.	**बुक सर्कलः** रीडिंग ऑन चुगताई क्वार्टेट	सुश्री अंजू गुप्ता तथा अन्य	24 अप्रैल, 2014
3.	तटीय स्थल – गुजरात में हड़प्पा काल के संभावित बंदरगाह शहर	डॉ. वाई. एस. रावत	25 अप्रैल, 2014
4.	द बॉडी इन इंडियन आर्ट	डॉ. नमन पी. आहूजा	8 मई, 2014
5.	कॉमर्स एंड दी कल्ट ऑफ खिज्रः दी स्केयर्ड जियोग्राफी ऑफ हीलिंग इन दी इंडियन ओसियन वर्ल्ड	श्री लॉरेन मिंस्की	16 मई, 2014
6.	**बुक सर्कलः** ए ट्रिब्यूट टू गेब्रियल गार्शिया मार्कवेज	श्री प्रभात रंजन और श्री कार्लोस वेरोना	22 मई, 2014
7.	कीट सौंदर्य पर स्लाइड की प्रस्तुति	श्री अलोक शोडे	24 मई, 2014
8.	नेग्लेक्टेड एंड फॉरगॉटनः इंडो–यूरोपियन डिफेंस आर्किटेक्चर इन नार्थ कोंकण (1510–1818 ए.डी.) (उपेक्षित एवं विस्मृतः उत्तरी कोंकण में भारत–यूरोपीय रक्षा वास्तुशिल्प (1510–1818 ईस्वी)	श्री मयूर बाबूलाल ठाकरे	4 जून, 2014
9.	बृहदेश्वर मंदिर	डॉ. चित्रा माधवन	15 जून, 2014
10.	**बुक सर्कलः** सेंट ऑफ ए गेम	श्री राघव चन्द्र	26 जून, 2014
11.	द टॉकिन्ग रॉक्स ऑफ बादामी– रॉक कट स्कल्पचर ऑफ बादामी केव्स	श्रीमती नलिनी केम्भावी	28 जून, 2014
12.	खुदाई और उत्तर प्रदेश और बिहार में बौद्ध विरासत का उत्खनन एवं संरक्षण	श्री के. के. मुहम्मद	4 जुलाई, 2014
13.	एलोरा में कैलाश मंदिर	श्री क्रिस्टिल प्लिज	17 जुलाई, 2014

14.	**बुक सर्कलः** फर्स्ट लाइट और दोज डेज	सुश्री अरुणा चक्रबर्ती और सुश्री रेबा सोम	24 जुलाई, 2014
15.	तटीय आंध्र में अमरावती और हिंद महासागर विश्व में महान स्तूप	डॉ. अकीरा शिमादा	31 जुलाई, 2014
16.	मुल्तान का संरक्षण और जीवंत स्मारक	प्रो. फाज़िया हुसैन कुरैशी	1 अगस्त, 2014
17.	इन सर्च ऑफ बम्बू लावरः ए नार्थ ईस्ट सागा' (बांस के फूल की खोजः एक पूर्वोत्तर सागा)	प्रो. ए. ए. के. दास	7 अगस्त, 2014
18.	सत्रिया	डॉ. माया राव की अध्यक्षा में डॉ. सुनील कोठारी	19 अगस्त, 2014
19.	हजारी प्रसाद द्विवेदी वार्षिक स्मारक व्याख्यान 'साहित्य और कला की मित्रता'	श्री यतीन्द्र मिश्र	20 अगस्त, 2014
20.	**बुक सर्कलः** इंक्सपायर (पत्रिका) और प्री–रिलेक्सन्स (कविता) पर चर्चा	सुश्री तनेशा और श्री साहिल बंसल	28 अगस्त, 2014
21.	अभिलेखागार एक वस्तु और अभ्यास के रूप में	श्री अक्षय तनखा	29 अगस्त, 2014
22.	महाराज स्वाति थिरुनाल का जीवन और समय	डॉ. अच्युत शंकरन नायर,	7 सितम्बर, 2014
23.	तंजौर के चित्र	श्री प्रदीप चक्रवर्ती	13 सितम्बर, 2014
24.	दृश्य ऐतिहासिक अभिलेखागार का निर्माणः सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कोलकाता के फोटो संग्रह से चयन	प्रो. ताप्ती गुहा ठाकुरता द्वारा	13 सितम्बर, 2014
25.	स्टालिओंस ऑफ द इंडियन ओशियनः ग्लोबल हॉर्स ट्रेड इन 16 सेंचुरी विजय नगर	डॉ. श्रीनिवास रेड्डी	22 सितम्बर, 2014
26.	**बुक सर्कलः**. बॉडी ऑफरिंग	प्रो. मकरंद परांजपे	25 सितम्बर, 2014
27.	डिसीप्लीनिंग दी आर्काइवः प्रैक्टिसेज इन आर्ट एंड पेडगोग्य (पुरालेख अनुशासितः कला और अध्यापन में प्रथाएं)	श्री साबिह अहमद, सुश्री अनुराधा कपूर और श्री सौम्यब्रत चौधरी	27 सितम्बर, 2014
28.	अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी'	डॉ. सिल्वेन ए. डियोफ	9 अक्तूबर, 2014

29.	भारत का राष्ट्रीय पुस्तकालयः नयी चुनौतियां और अवसर	डॉ. पी. वाई. राजेंद्र कुमार	13 अक्तूबर, 2014
30.	ता प्रोह्म टेम्पल सिएम रीप कम्बोडिया का संरक्षण और पुनः स्थापन	श्री डी. एस. सूद	21 अक्तूबर, 2014
31.	हिंद महासागर विश्व में प्रारंभिक भूमंडलीकरण	प्रो. अब्दुलअजीज लोदी	29 अक्तूबर, 2014
32.	भारत का राष्ट्रीय पुस्तकालय	डॉ. पी. वाई. राजेंद्र कुमार	3 नवम्बर, 2014
33.	दक्षिण भारत की देवदासी विरासत	श्रीमती लक्ष्मी विश्वनाथन	8 नवम्बर, 2014
34.	बृहदेश्वर मंदिर का इतिहास और भव्यता	डॉ. चित्रा माधवन	16 नवम्बर, 2014
35.	इन दी शैडो ऑफ नंदा देवी (कुमाऊं): ए पीपल एंड ए क्राट (नंदा देवी की छाया में (कुमाऊँ): लोग और शिल्प)	डॉ. मंजू काक	18 नवम्बर, 2014
36.	**बुक सर्कलः** अनटोल्ड स्टोरी ऑफ सीताः खेतों, महलों और जंगलों के माध्यम से उसकी यात्रा	सुश्री नीरज पाठक	27 नवम्बर, 2014
37.	मैसूर के महाराजाः श्री जयचामराजा वाडियर के जीवन, समय और कार्य	डॉ. मीरा राजाराम प्रणेश	30 नवम्बर, 2014
38.	वैतुला सुधा अगम के विशेष संदर्भ में शैव की कलात्मक आयाम – अगम	प्रो. पी.एस. फिल्लिओजट और डॉ. वसुंधरा फिल्लिओजट	11 दिसम्बर, 2014
39.	वैदिक स्वर विज्ञान और इसका ऐतिहासिक विकास	प्रो. जी. सी. त्रिपाठी	12 दिसम्बर, 2014
40.	ऋषि परम्परा	प्रो. हृदयरंजन शर्मा	15 दिसम्बर, 2014
41.	**बुक सर्कलः** नीला स्कार्फ	सुश्री अनु सिंह चौधरी	18 दिसम्बर, 2014
42.	पुस्तकालयों में आरएफआईडी कार्यान्वयन का रोड मैप	डॉ. नबी हुसैन	20 दिसम्बर, 2014
43.	वैदिक छंद	प्रो. श्री किशोर मिश्रा	24 दिसम्बर, 2014
44.	हिंद महासागर की सीमा में समुद्री व्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान : भारत और श्रीलंका	डॉ. ओसमुंद बोपेराच्चि	30 दिसम्बर, 2014

45.	पुस्तकालय, अभिनव रिक्त स्थान और पुस्तकालयाध्यक्षों की भविष्य की भूमिका	श्री जय भट	5 जनवरी, 2015
46.	स्केयर्ड हीलिंगः सैंक्टिफाइंग दी कांशसनेस एंड दी एनवायरनमेंट	श्री गेशे दोरजी दमदुल	6 जनवरी, 2015
47.	पाकिस्तान में बुद्ध के प्रभाव	डॉ. सुनीता द्विवेदी	8 जनवरी, 2015
48.	वेदों का प्रथम भाष्यः सतपथ ब्राह्मण	प्रो. दयानंद भार्गव	14 जनवरी, 2015
49.	वैदिक यज्ञ एवं सृष्टि विद्या	प्रो. दयानंद भार्गव	15 जनवरी, 2015
50.	प्राण विद्या	प्रो. दयानंद भार्गव	16 जनवरी, 2015
51.	बृहदेश्वर प्रदर्शनी	सुश्री चित्रा माधवन श्री प्रदीप चक्रवर्ती	19 जनवरी, 2015
52.	वैदिक देवता **बुक सर्कलः** उरणाभि पर चर्चा	प्रो. जी.सी. त्रिपाठी सुश्री सुमेधा वी. ओझा	22 जनवरी, 2014
53.	तंजौर मंदिरों के कर्ण मूर्तियां बड़े मंदिरों की चमत्कारी वास्तुकला	डॉ. पद्म सुब्रमण्यम श्रीमती शीला श्रीप्रकाश	25 जनवरी, 2015
54.	धर्म सूत्रों का उत्साह	प्रो. के.डी. त्रिपाठी	29 जनवरी, 2015
55.	स्किलफुल कम्पैशन ग्रॉउंडेड ऑन विजडम	श्री गेशे दोरजी दमदुल	30 जनवरी, 2015
56.	फोक आर्काइव प्रदर्शनी पर वार्ता	श्री जेरेमी डेलर और एलेन काने	2 फरवरी 2015
57.	9 वीं और 10 वीं सदी के जावा सागर जहाजों ने भी देखा हिंद महासागर व्यापार के बाजार	डॉ. जॉन गे	9 फरवरी, 2015
58.	क्या हम भारतीय अपनी सभ्यता की अनदेखी कर रहे हैं जिसे पश्चिम उपयुक्त मान रहा है?	श्री राजीव मलहोत्रा	16 फरवरी, 2015
59.	**बुक सर्कल**–टैगोर एंड फेमिनिनरू जर्नी इन ट्रांसलेशन्स	सुश्री मालाश्री लाल	26 फरवरी, 2015
	'मानचित्रण मापुसा के बारे में एक सचित्र प्रस्तुति' (इलस्ट्रेटेड प्रेजेंटेशन अबाउट मैपिंग मापुसा)	श्री ओरिजीत सिंह	26 फरवरी, 2015
60.	टेरेकोटा ऑफरिंग्स इन तमिलनाडु	डॉ. गौतम सेनगुप्ता	4 मार्च, 2015

61.	इ.गाँ.रा.क.के. में 'प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी के कार्य और उनके स्मरणार्थ संग्रह'	प्रो. सुगता बोस	10 मार्च, 2015
62.	एक उस्ताद का निर्माण पर व्याख्यान	सुश्री मीना दास नारायण	14 मार्च, 2015
63.	**बुक सर्कलः** व्हिसपर्स एट दी गंगा घाट एंड अमलतास	डॉ. अलका त्यागी	26 मार्च, 2015

1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 तक
इ.गाँ.रा.क.के. में आयोजित संगोष्ठियों/सम्मेलनों/पैनल परिचर्चायों की सूची

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	विएतनाम की चाम कला विरासतः पर्यावरण, संस्कृति और कला ऐतिहासिक परंपरा पर एक अंतर्राष्ट्रीय **सम्मेलन**	25–26 अप्रैल, 2014
2.	**संगोष्ठी**–कक्षा में .श्य साक्षरता का एकीकरण	1–3 मई, 2014
3.	ओरिएंट ब्लैकस्वान के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रकाशित प्रो. डी. पी. पट्टनायक की 'लैंग्वेज एंड कल्चरल डाइवर्सिटी' पर **पैनल चर्चा**	20 मई, 2014
4.	दी लास्ट सांग ऑफ अवध पर **संगोष्ठी** विचार गोष्ठी	23 मई, 2014
5.	तिब्बती साहित्य एवं कला का बौद्ध ट्रांसक्रिएशन पर सातवां अंतर्राष्ट्रीय एलैक्जैन्डर क्सोमा दी कोरोस पर विचार गोष्ठी	4–5 सितम्बर, 2014
6.	**संगोष्ठी** – इ.गाँ.रा.क.के. के अभिलेखागार–एक विहंगावलोकन	17 सितम्बर, 2014
7.	**संगोष्ठियां** – परिवर्तनकारी संगीत और संगीत	22–24 सितम्बर, 2014
8.	भारत में यहूदियों का गोल मेज सम्मेलन	13 अक्तूबर, 2014
9.	'अफ्रीकंस इन इंडियाः ए रेडिस्कवरी' (भारत में अफ्रीकीः एक पुर्नखोज) पर **संगोष्ठी**	15 अक्तूबर, 2014
10.	उत्तर–दक्षिण–कर्नाटक और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पद्धति के बीच पारस्परिक क्रिया	25–26 अक्तूबर, 2014
11.	भारतीय भाषाविज्ञान के लिए प्रो. सुनीति कुमार चटर्जी के योगदान पर **संगोष्ठी**	26 नवम्बर, 2014
12.	नवीन विचारों, प्रौद्योगिकियों और सेवाओं पर अंतर्राष्ट्रीय **सम्मेलन** (आईसीएलएएम 2014) निफ्ट और आईजीएनसीए	27–29 नवम्बर, 2014
13.	द सिल्क रोड... रीक्विसट क्वेस्ट पर **पैनल चर्चा**	9 दिसम्बर, 2014
14.	भारत और कनाडा में भाषा क्षति और देशी संस्कृति पर **पैनल चर्चा**	10 दिसम्बर, 2014
15.	शाब्दिक परंपराओं में निहित भारतीय कलाः वडोदरा, गुजरात के विशेष संदर्भ में– पर **संगोष्ठी**	29–30 दिसम्बर, 2014

16.	कांचीपुरम, तमिलनाडु में अगम के शास्त्रिक और प्रयोगिक तत्वों पर राष्ट्रीय **संगोष्ठी**	29–30 जनवरी, 2015
17.	पायलट इंडियन कंजरवेशन फैलोशिप पर **संगोष्ठी**	9–10 फरवरी, 2015
18.	थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ टेम्पल आर्किटेक्चर इन मिडिवल इंडियाः दी समरंग–ए सूत्रधार एंड दी भोजपुर लाइन ड्राइंग्स पर **विचार गोष्ठी**	20 फरवरी, 2015
19.	विशेष संदर्भ के साथ मार्क ऑरेल स्टीन पर दक्षिण और मध्य एशियाई विरासत के लिएः आधुनिक खोज एवं शोध पर **अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन**	25–26 मार्च, 2015
20.	गांधी और परम पावन दलाई लामा के विचार पर **राष्ट्रीय संगोष्ठी**	28–29 मार्च, 2015

1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 तक इ.गाँ.रा.क.के. में आयोजित प्रदर्शनों की सूची

क्र.सं.	विषय	शैली	दिनांक
1.	तमिल संगीतकारों को समर्पित चिथिरई महोत्सव	संगीत समारोह	18–20 अप्रैल, 2014
2.	सुश्री माधवी मुद्गल और उसके शिष्यों द्वारा ओडिशी नृत्य गायन	नृत्य	25 अप्रैल, 2014
3.	द लास्ट सांग ऑफ अवध	संगीत समारोह	23 मई, 201421347
4.	अंतर्राष्ट्रीय कला शिक्षा सप्ताह (क) अभिज्ञान नाट्य एसोसिएशन द्वारा नाटकीय प्रदर्शन	रंगमंच और नृत्य	24 मई, 2014
	(ख) सखी (एनजीओ) द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति)		
5.	स्पिक मैके अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	सांस्कृतिक कार्यक्रम	8–14 जून, 2014
6.	प्रभु बृहदेश्वर रचनाओं के आधार पर विदूषी श्रीमती सुमित्रा नितिन द्वारा कार्यक्रम	संगीत समारोह	15 जून, 2014
7.	कलाकोश स्थापना दिवस–इंडोनेशिया दूतावास द्वारा रामायण पर नृत्य प्रदर्शन	नृत्य	11 जुलाई, 2014
8.	नाटना कैराली समूह द्वारा पवकथकली प्रदर्शन	नृत्य	14–15 जुलाई, 2014

9.	कुट्टियतम प्रदर्शन	नृत्य	16 जुलाई, 2014
10.	स्वामी विवेकानंद के जीवन पर कठपुतली शो तीज उत्सव–जनपद संपदा स्थापना दिवस सांस्कृतिक कार्यक्रम	रंगमंच	31 जुलाई, 2014
11.	यक्षगान गोम्बेयटा या कठपुतली यक्षगान पर प्रदर्शन	रंगमंच	11–12 अगस्त, 2014
12.	रमा वर्मा द्वारा संगीत	संगीत समारोह	7 सितम्बर, 2014
13.	एम.एस. सुब्बलक्ष्मी की याद में – एक संगीत समारोह	संगीत समारोह	22 सितम्बर, 2014
14.	सिदी गोमा समूह द्वारा प्रदर्शन	नृत्य	8 अक्तूबर, 2014
15.	मातरम, इंडोनेशिया से समूह नृत्य	नृत्य	14 अक्तूबर, 2014
16.	ओट्टमथुल्लल–केरल से नृत्य नाटिका	नृत्य और रंगमंच	31 अक्तूबर, 2014
17.	पूर्वोत्तर पर्व	सांस्कृतिक कार्यक्रम	7–10 नवम्बर, 2014
18.	राम की शक्ति पूजा पर प्रदर्शन	रंगमंच	11 नवम्बर, 2014
19.	स्वर उत्सव–2014	संगीत	14–16 नवम्बर, 2014
20.	शास्त्र उत्सवः 2014	सांस्कृतिक कार्यक्रम	21–22 नवम्बर, 2014
21.	डॉ. टी. एस. सत्यवती द्वारा महाराजा की रचनाओं पर संगीत समारोह	संगीत	30 नवम्बर, 2014
22.	त्यागराज अराधनाई पर कार्यक्रम	संगीत	1 फरवरी, 2015
23.	409 रामकिंकर्स प्रतिस्थापन–कला–थिएटर	रंगमंच	24 मार्च – 2 अप्रैल, 2015
24.	इशान्य–पूर्वोत्तर सांस्कृतिक उत्सव	सांस्तिक कार्यक्रम	28–29 मार्च, 2015

1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 इ.गाँ.रा.क.के. में आयोजित कार्यशालाओं/कथा–वाचन सत्र की सूची

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	कथा उत्सवः कथा वाचन कला को बढ़ावा देने के लिए कथा उत्सव	11 मई, 2014
2.	अंतर्राष्ट्रीय कला शिक्षा सप्ताह कार्यशाला – नृत्य और लय– सुष्मिता घोष (कथक नृत्य)	22 मई, 2014
3.	अंतर्राष्ट्रीय कला शिक्षा सप्ताह कार्यशाला – मधुबनी चित्रकारी, मनीषा झा एवं समूह	23 मई, 2014
4.	बचपन द्वारा कथा सत्र	24 मई, 2014
5.	बच्चों के लिए समर पपेट कैम्प (कठपुतली शिविर): नागालैंड पपेट (कठपुतली) बनाने और प्रदर्शन कार्यशाला से प्रेरित शैडो पपेटरी को खोजना	10–14 जून, 2014
6.	महाराजा स्वाति तिरूनल के द्वितीय शताब्दी का उत्सव कार्यशाला	4–5 सितम्बर, 2014
7.	इ.गाँ.रा.क.के. के बाल जगत परियोजना के अंतर्गत फोटोग्राफी पर कार्यशाला	24–28 सितम्बर, 2014
8.	श्री जयचामराजा वाडियरः मैसूर के महाराजा की रचनाओं पर कार्यशाला	28–29 नवम्बर, 2014
9.	सांस्कृतिक विरासत के सतत संरक्षण की दिशा में सांस्कृतिक विरासत के जोखिम प्रबंधन पर कार्यशाला	19–23 जनवरी, 2015
10.	कथाकार–इंटरनेशनल स्टोरीटेलर्स फेस्टिवल	30 जनवरी–1 फरवरी, 2015

1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 तक
इ.गाँ.रा.क.के. में आयोजित फिल्म स्क्रीनिंग (प्रदर्शन) की सूची

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	'बृहदेश्वरः दी मोन्यूमेंट एंड दी लिविंग ट्रेडिशन (बृहदेश्वरः स्मारक और जीवंत परंपरा)द मोन्यूमेंट एंड दी लिविंग प्रजेंस (बृहदेश्वर टेम्पल) (स्मारक और जीवित परंपरा (बृहदेश्वर मंदिर)) पर स्क्रीनिंग	11 अप्रैल, 2014
2.	मच अदो अबाउट नॉटिंग की स्क्रीनिंग	25 अप्रैल, 2014
3.	बाली बलि यात्रा– दे से, दे कम फ्रॉम इंडिया (बाली बलि यात्रा– वे कहते हैं, वे भारत से आये हैं) की स्क्रीनिंग	9 मई, 2014
4.	अंतर्राष्ट्रीय कला शिक्षा सप्ताह फिल्म शोः प) बृहदेश्वर और पप) गंगा	23 मई, 2014
5.	द क्वांटम इंडियंस	23 मई, 2014
6.	नवकलेवर – दी न्यू एम्बोदिमेंट (नवकलेवर – नया अवतार) की स्क्रीनिंग	13 जून, 2014
7.	जर्नी ऑफ आयुर्वेद (आयुर्वेद की यात्रा) की स्क्रीनिंग	27 जून, 2014
8.	मणिपुर–ज्वेल ऑफ दी ईस्ट (मणिपुर–पूर्व के रत्न) की स्क्रीनिंग	11 जुलाई, 2014
9.	पावकथकली की स्क्रीनिंग	25 जुलाई, 2014
10.	जोहरा अनमास्क्ड (जोहरा बेपर्दा) पर स्क्रीनिंग	8 अगस्त, 2014
11.	इंडोनेशियन (इंडोनेशियाई) फिल्म स्क्रीनिंग	13–14 अगस्त, 2014
12.	द गोल्डन आर्ट (बहुमूल्य कला) की स्क्रीनिंग	22 अगस्त, 2014
13.	किस्सा – ए ट्रेडिशन ऑफ पंजाब (किस्सा – पंजाब की एक परंपरा) पर स्क्रीनिंग	12 सितम्बर, 2014
14.	उस्ताद असद अली खान– ए पोट्रेट (एक छवि) की स्क्रीनिंग	26 सितम्बर, 2014
15.	लिगेसी ऑफ तना भगत (तना भगत की विरासत) पर स्क्रीनिंग	10 अक्तूबर, 2014
16.	महात्मा–द ग्रेट सोल (महान आत्मा) की स्क्रीनिंग	24 अक्तूबर, 2014
17.	एक थी गुलाब की स्क्रीनिंग	14 नवम्बर, 2014

18.	ही स्वाम अगेंस्ट दी कोलोनियल करंट (वह औपनिवेशिक वर्तमान के विरुद्ध तैरा) की स्क्रीनिंग	28 नवम्बर, 2014
19.	मिरासन्स ऑफ पंजाबः बोर्न टू सिंग (पंजाब के मिरासनः गाने के लिए जन्मे) की स्क्रीनिंग	12 दिसम्बर, 2014
20.	सिद्धिस ऑफ गुजरात (गुजरात के सिद्धि) की स्क्रीनिंग	26 दिसम्बर, 2014
21.	द मैजिक ऑफ मेकिंग ऑन श्री के.जी. सुब्रमण्यम (श्री केजी सुब्रमण्यम पर बनाने का जादू) की स्क्रीनिंग	28 दिसम्बर, 2014
22.	मुदियेत्तु और कलमजहुतहूम पत्तुम की स्क्रीनिंग	9 जनवरी, 2015
23.	स्क्रीन पर साहित्य – भारतीय क्लासिक्स पर आधारित टेली फिल्मों का महोत्सव	10–12 फरवरी, 2015
24.	हिस्ट्री ऑफ योग (योग के इतिहास) की स्क्रीनिंग	13 फरवरी, 2015
25.	अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी पर वृत्तचित्र की स्क्रीनिंग – बॉडी इन इंडियन आर्ट	18 फरवरी, 2015
26.	बुद्धिज्म इन सिक्किम (सिक्किम में बौद्ध धर्म) की स्क्रीनिंग	फरवरी, 2015
27.	अंडरग्राउंड इन्फर्नो (भूमिगत नरक) की स्क्रीनिंग	13 मार्च, 2015
28.	मेकिंग ऑफ ए मेस्ट्रो – डाक्यूमेंट्री ऑन कलामंडलम गोपी (एक कलाकार बनाना – कलामंडलम गोपी पर वृत्तचित्र) की स्क्रीनिंग	14 मार्च, 2015
29.	बनामः मिथ एंड कॉस्मोलॉजी ऑफ दी संथालस (संथाल के मिथक एवं ब्रह्मांड विज्ञान) की स्क्रीनिंग	27 मार्च, 2015

1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 तक
इ.गाँ.रा.क.के. में आयोजित गैर–सहयोगात्मक कार्यक्रमों की सूची

क्र.सं.	विषय	संगठन/व्यक्तिगत	दिनांक
1.	रंगाली बिहू त्योहार	असम एसोसिएशन	20 अप्रैल, 2014
2.	नृत्य–संवाद (डांस डायलॉग)	फ्रांसीसी दूतावास	23 अप्रैल, 2014
3.	बैसाखी मेला	पंजाबी अकादमी	25–27 अप्रैल, 2014
4.	चित्रकला/मूर्तिकला/संस्थापन प्रदर्शनी	गैलरी श्री आर्ट्स	24–30 मई, 2014
5.	डायलॉग– प्रदर्शनी	निट	3–4 जून 2014
6.	श्री टी. एम. .ष्णा की श्री वी.के. कार्तिक से वार्ता पर हार्परकॉल्लिन्स पब्लिशर द्वारा पुस्तक का विमोचन	हार्परकॉल्लिन्स पब्लिशर	5 जुलाई, 2014
7.	प्रदर्शनी –पुरानी दिल्ली में लेनुएर (लेनुएर इन ओल्ड डेल्ही)	गैलरी रागिनी	3–8 सितम्बर, 2014
8.	प्रारंभ– भारत का पहला छात्र कला महोत्सव	द आर्ट रूट	9–12 अक्तूबर, 2014
9.	विचार गोष्ठी – चैलेंजेज बिफोर नार्थ ईस्ट (पूर्वोत्तर की पूर्व चुनौतियां)	पूर्वोत्तर संस्था	18 अक्तूबर, 2014
10.	फोटो प्रदर्शनी और संगोष्ठी/वार्ता	जर्मन हाउस फॉर रिसर्च एंड इनोवेशन	27 अक्तूबर, 2014 से 1 नवम्बर, 2014
11.	आरबीएस अर्थ हीरोज पुरस्कार 2014	रॉयल बैंक ऑफ स्कॉटलैंड	4 नवम्बर, 2014
12.	ड्राइंग 2014 पर प्रदर्शनी – भारतीय चित्रकारी के सात दशक	गैलरी स्पेस	10 नवम्बर, 1 दिसम्बर, 2014
13.	संगीत कार्यशालाएं और कार्यक्रम	षण्मुखानंद संगीत सभा	16 नवम्बर, 2014
14.	जिप्सी जैज़	हैरी स्तोज्का	22 नवम्बर, 2014
15.	बूकारो – बाल साहित्य महोत्सव 2014	बूकारो	28–30 नवम्बर, 2014
16.	रॉयल पश्मीना प्रदर्शनी	जम्मू–कश्मीर राज्य हथकरघा विकास निगम	3–8 दिसम्बर, 2014

17.	वैदिक संस्कृति संवर्धन महोत्सव	ग्लोबल न्यूज नेटवर्क	6 दिसम्बर, 2014
18.	असम सत्र महासभा का शताब्दी समारोह	असम सत्र महासभा	7 दिसम्बर, 2014
19.	अनबॉक्स फेस्टीवल 2014	अनबॉक्स	12–14 दिसम्बर, 2014
20.	विज्ञापन और .श्य प्रचार निदेशालय द्वारा फोटो प्रदर्शनी	डीएवीपी	19–25 दिसम्बर, 2014
21.	द यूचर रिलाइजेशन (भविष्य बोध)	एयोन सेंटर ऑफ कॉस्मोलॉजी, तमिलनाडु के निदेशक	1–15 जनवरी, 2015
22.	पुस्तक की शुरूआत–द टेंथ डे ऑफ विक्ट्री	एयोन सेंटर ऑफ कॉस्मोलॉजी, तमिलनाडु के निदेशक	4 जनवरी, 2015
23.	प्रश्नोत्तरी सत्र	एयोन सेंटर ऑफ कॉस्मोलॉजी, तमिलनाडु के निदेशक	5 जनवरी, 2015
24.	राष्ट्रीय जनजातीय महोत्सव	जनजातीय कार्य मंत्रालय	13–18 फरवरी, 2015
25.	राष्ट्रीय जनजातीय महोत्सव पर संगोष्ठी	जनजातीय कार्य मंत्रालय	14–17 फरवरी, 2015
26.	वीएएमए 2014–15श	साहित्य कला परिषद	27 फरवरी – 8 मार्च, 2015
27.	डॉ. एम. एस. लक्ष्मी प्रिया और डॉ. के. राधा कृष्णन द्वारा दो शास्त्रीय कर्नाटक गायन संगीत समारोह	स्वरालय	8 मार्च, 2015
28.	संसाधन प्रबंधन एवं डिजाइन आवेदन विभाग द्वारा सस्टेनेबल डेवलपमेंट विषय पर विचार गोष्ठी	लेडी इरविन कॉलेज	11 मार्च, 2015
29.	कलाकार शिविर	साहित्य कला परिषद	23–28 मार्च, 2015

1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 तक इ.गाँ.रा.क.के. में सिखाए गए पाठयक्रमों/अन्य गतिविधियों की सूची

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	सार्वजनिक व्याख्यान/बौद्ध धर्म पर पाठ्यक्रम	2, 4, 9, 10, 11, 16, 18, 23, 25, 30 जुलाई, 2014
		1, 6, 8 अगस्त, 2014
2.	श्री राहाब अल्लाना द्वारा क्यूरेटेड वार्ता	23 अगस्त, 2014
		12 सितम्बर,2014
		20 सितम्बर, 2014
3.	हिंदी पखवाड़ा	15–29 सितम्बर, 2014
4.	स्वास्ति – इ.गाँ.रा.क.के. में दुकान खोली गयी	25 सितम्बर, 2014
5.	एसआरसी के ऑडियो विजुअल अभिलेखागार इकाई का उद्घाटन	19 फरवरी, 2015

अनुबंध V

1 अप्रैल, 2014–31 मार्च, 2015 तक इ.गाँ.रा.क.के. प्रकाशनों की सूची (पुस्तक एवं डीवीडी)

पुस्तकें

1. श्री एडम हार्डी द्वारा थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ टेम्पल आर्किटेक्चर इन मिडिवल इंडियाः दी समरंग– ए सूत्रधार एंड दी भोजपुर लाइन ड्राइंग्स
2. श्री एस. जी. कुलकर्णी और सुश्री कविता चौहान द्वारा संपादित आर्ट एस्थेटिक्स एंड फिलॉसफीः रेफ्लेक्शन्स ऑन कुमारस्वामी
3. डॉ. बच्चन कुमार द्वारा संपादित 'दी आर्ट ऑफ इंडोनेशिया'
4. प्रो. मौली कौशल, प्रो. अलोक भल्ला और डॉ. रमाकर पंत द्वारा 'संपादित रामकथा इन नैरेटिव, परफॉरमेंस एंड पिक्टोरिअल ट्रडिशन्स'
5. ओरिएंट ब्लैकस्वान के सहयोग से इ.गाँ.रा.क.के. द्वारा प्रो. डी. पी. पट्टनायक के दूसरे संस्करण 'लैंग्वेज एंड कल्चरल डाइवर्सिटी' पुस्तक का विमोचन
6. डॉ. रक्षंदा जलील द्वारा द रिबेल एंड हर कॉजः लाइफ एंड वर्क ऑफ रशीद जहाँ पर पुस्तक का शुभारंभ
7. 'दी सिल्क रोडः ट्रेड, कारवां सेरेस, कल्चरल एक्सचेंजेस एंड पावर गेम्स'–प्रो. मनसूरा हैदर

प्रदर्शनी कैटलॉग

'कांथा' पर प्रदर्शनी कैटलॉग

संगोष्ठी/सम्मेलन की कार्यवाही

'भारतीय रॉक कला के लिए उपयुक्त डेटिंग तकनीक' (सुटेबल डेटिंग टेक्नीक फॉर इंडियन रॉक आर्ट) पर कार्यशाला की कार्यवाही

फिल्में और डीवीडी

1. बॉडी इन इंडियन आर्ट, सोल पेंटिंग्स–एलिजाबेथ सास ब्रूनर, डांसिंग पाण्डवस और बुद्धिजम–ए लिविंग रिलिजन इन दी नार्थ ईस्ट ऑफ इंडिया पर फिल्म, डॉ. एन. राजम, पंडित अरविंद पारिख, पंडित लक्ष्मण रॉयो, पंडित विदूषी शन्नो खुराना पर डीवीडी। इसके अतिरिक्त, आठ फिल्मों को पुनर्प्रकाशित किया गया।
2. 'लोक परंपरा' के अधीन रंजीत रे द्वारा निर्मित लघुचित्र क्ले इमेजेज ऑफ कुमारतुली' का प्रलेखन।
3. गौतम घोष द्वारा निर्देशित श्री के.जी. सुब्रामण्यन पर वृत्तचित्र 'द मैजिक ऑफ मेकिंग'।
4. विपिन विजय द्वारा निर्देशित श्री अडूर गोपालकृष्णन पर फिल्म 'भूमियिल चुवादुरचु (फीट अपॉन द ग्राउंड)'।
5. श्री शंखजीत डे द्वारा निर्देशित 'इन द शैडो ऑफ टाइमः रावण छाया ऑफ उड़ीसा।'
6. डॉ. नमन आहूजा द्वारा रूप 'प्रतिरूप–बॉडी इन इंडियन आर्ट'। ये प्राथमिक सम्पादन हैं और इसकी 8 डीवीडी हैं और प्रत्येक की अवधि 30 मिनट है।

अनुबंध VI

इ.गाँ.रा.क.के. में वरिष्ठ/कनिष्ठ रिसर्च फेलो/परामर्शदाता सहित इ.गाँ.रा.क.के. के अधिकारियों की सूची (31 मार्च, 2015 के अनुसार)

1.	श्रीमती दीपाली खन्ना	सदस्य सचिव,
2.	श्री शिव राम सिंह रावत	निजी सचिव,
3.	श्रीमती वीना जोशी	संयुक्त सचिव
4.	डॉ. जयंत कुमार रे	निदेशक (प्र.)
5.	श्रीमती रेमा नायर	निजी सचिव
6.	श्री एस. सी. गहलोट	वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखाधिकारी
7.	श्री बी. एस. बिष्ट	उप वित्त सलाहकार एवं वरिष्ठ लेखाधिकारी
8.	डॉ. मंगलम स्वामिनाथन	उप निदेशक (सूचना एवं जन संपर्क)
9.	श्रीमती हेमलता सिंधुरा	अवर सचिव, (स्था.)
10.	श्री सुनील गोयल	अनुभाग अधिकारी (स्था.)
11.	श्री बिजेन्द्र	अनुभाग अधिकारी (ईएमयू)
12.	श्री संजय मोंगा	अनुभाग अधिकारी (सीडीएन)
13.	श्री विनोद रावत	अनुभाग अधिकारी (एस एंड एस)
14.	श्री आर. के. चोपड़ा	परामर्शदाता (सीडीएन)
15.	श्री आई.पी. सिंह	परामर्शदाता (एस एंड एस)
16.	डॉ. दाता राम जुयाल	निजी सचिव
17.	श्री के.पी. सिंह	निजी सचिव
18.	श्री हरी ओम यादव	एएफए एवं लेखाधिकारी
19.	श्री रंजीत कुमार मिश्रा	परामर्शदाता (मुख्य अभियंता)
20.	श्री जगत सिंह सजवान	परामर्शदाता (लेखाधिकारी, लेखा शाखा)
21.	श्री सत्यपाल बम्मी	परामर्शदाता (आंतरिक लेखा परीक्षा)
22.	श्री राकेश कुमार पिपलानी	निजी सचिव, अध्यक्ष

कलानिधि प्रभाग

1.	डॉ. पी. आर. गोस्वामी	निदेशक (पुस्तकालय एवं सूचना)
2.	श्री वीरेंद्र बंगरू	सहायक प्रो. ग्रेड II
3.	डॉ. कीर्ति कांत शर्मा	सहायक प्रो. ग्रेड II
4.	डॉ. दीप राज गुप्ता	रिप्रोग्राफी अधिकारी
5.	श्री राजीव भंडारी	एएफए एवं लेखाधिकारी
6.	श्रीमती रेनू बाली	पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी

7.	श्रीमती किरन कपूर	निजी सचिव
8.	श्रीमती आशा गुप्ता	पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी
9.	श्रीमती साफिया एल कबीर	सहायक पुस्तकालय एवं सूचना कार्यालय
10.	श्री बेयाज़ हाशमी	सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी
11.	श्री डी.एन. वी.एस. सीतारामैय्या	वरिष्ठ फोटोग्राफी अधिकारी
12.	श्रीमती हिमानी पाण्डे	अभिलेखाविद
13.	सुश्री छबि सेन	परामर्शदाता (सीए)

मीडिया केन्द्र

1.	श्री बशरत अहमद	मीडिया केन्द्र के मुख्य सलाहकार
2.	डॉ. गौतम चटर्जी	उप नियंत्रक (मीडिया सेंटर)
3.	डॉ. गौरी शंकर रैना	कार्यक्रम निर्माता

संरक्षण

1.	डॉ. अचल पंड्या	विभागाध्यक्ष (संरक्षण)

कलाकोश प्रभाग

1.	डॉ. एन.डी. शर्मा	एसोसिएट प्रोफेसर (विभागाध्यक्ष आई/सी)
2.	डॉ. वी.एस. शुक्ला	सहायक प्रो. ग्रेड III
3.	डॉ. अद्वैतवादिनी कौल	मुख्य संपादक
4.	डॉ. राधा बनर्जी सरकार	सहायक प्रो. ग्रेड III
5.	डॉ. बच्चन कुमार	सहायक प्रो. ग्रेड II
6.	डॉ. सुषमा जाटू	सहायक प्रो. ग्रेड I
7.	डॉ. सुधीर लाल	सहायक प्रो. ग्रेड I
8.	डॉ. अजय कुमार मिश्रा	सहायक प्रो. ग्रेड I
9.	पं. वी. पी. मिश्रा	सहायक प्रो. ग्रेड I
10.	श्री जवाहर प्रसाद	अनुभाग अधिकारी

जनपद संपदा प्रभाग

1.	प्रो. मौली कौशल	प्रो. एवं विभागाध्यक्ष

2.	डॉ. श्रीकला शिवशंकरन	एसोसिएट प्रो.
3.	डॉ. रमाकर पंत	सहायक प्रो. ग्रेड II
4.	डॉ. बी.एल. मल्ला	सहायक प्रो. ग्रेड III
5.	डॉ. रिचा नेगी	सहायक प्रो. ग्रेड I
6.	श्री जयंत चटर्जी	उप वित्त सलाहकार एवं वरिष्ठ लेखाधिकारी
7.	श्रीमती सुमित्रा टक्कर	निजी सचिव
8.	श्रीमती बिंदिया चोपड़ा	निजी सचिव

कलादर्शन प्रभाग

1.	श्रीमती मंगलम स्वामिनाथन	कार्यक्रम कार्यवाहक निदेशक,
2.	श्रीमती रीना रावत	निजी सचिव

सीआईएल

1.	श्री पी. झा	निदेशक (सीआईएल)
2.	श्री उमेश बत्रा	वरिष्ठ क्रमादेशक (सीनियर प्रोग्रामर)

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलुरु

1.	डॉ. विक्रम सम्पत	कार्यकारी निदेशक
2.	श्री आर. रघु कुमार	एएफए एवं लेखाधिकारी
3.	श्री के.एन. वालसा कुमार	कनिष्ठ रिप्रोग्राफी अधिकारी

एनईआरसी, गुवाहाटी

1.	प्रो. ए.सी. भगबती	अध्यक्ष एवं अवैतनिक समन्वयक

पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

1.	प्रो. के.डी. त्रिपाठी	अवैतनिक समन्वयक
2.	डॉ. एन.डी. तिवारी	अनुसंधान अधिकारी
3.	श्री संजय सिंह	एएफए एवं लेखाधिकारी
4.	डॉ. प्रणती घोषाल	सहायक प्रो. ग्रेड I
5.	सुश्री स्मृति मिश्रा	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष